॥ ओंनमः सिद्धं ॥

॥ ज्ञानानन्दरत्नाकर प्रारंभः ॥

॥ शाखी ॥

परम पावन अघ नशावन है प्रभूका नाम जी । जो जपे ध्यावें वेद गावें लहैं शिव सुख धामजी ॥ है सुक्ख दाता जगति त्राता हरै क्रोधरु कामजी । भज नाम वारम्वार सो जिन भक्त नाथूरामजी ॥

❀ दौड़ ❀

प्रभूका जपो नाम निशिदिन । मुक्तिनहीं होती है इस बिन ॥ जपामन वचन नाम जिनजिन । परमपद पाया है तिनतिन ॥ पापतज नाथूराम जिनभक्त । नाम जपने में रहो आसक्त ॥

कीजे नाथ सनाथ जानिज युगलचरण का दासप्रभू । दीजे मुक्ति रसाल काट विधिजाल रखो निजपास प्रभू ॥ टेक ॥ प्रथम नमों आदीश्वर को हुए आदि तीर्थ कर्त्तार प्रभू । आदि जिनेश्वर आदीश्वर जी शिवरमणी भर्त्तार प्रभू ॥ अजित नाथजीने अजीतवसु दुष्टरूप किए च्यारप्रभू । तारण तरणजहाज नाथ किए भक्त भवोदधि पारप्रभू ॥ संभव नाथ नाथगुण प्रगटे संभ्रम मेटनहार प्रभू । ज्ञानभानु अज्ञान तिमर हर तीन जगत में सारप्रभू ॥

॥ चौपाई ॥

अभिनन्दन अभिमान विदारो । मार्दवगुण सुहृदय विस्तारो ॥
ज्ञान चक्र प्रभूजन करधारो । मोह मल्लरिपु क्षणमे मारो ॥

॥ दोहा ॥

सुमति नाथ प्रभुसुमति पति, करो कुमति ममनाश । सुमति देहुनिज दासको, अनुभव भानु प्रकाश ॥ पद्मप्रभः के पद्मचरण हिरदे में करो मम वास प्रभू । दीजे सुकरमाल काट विधिजाल रखो निजपास प्रभू ॥१॥ नाथ सुपार्श्व निजपारस पद्मजन्म बनारस लीनाजी । सम्मेदागिरिवर पैध्यानधर वसुअरिको क्षयकीना

जी ।। चन्द्रप्रभः के चरणकमलकी कान्तिदेख शशिहीनाजी।।महासेन के लाल नवाऊं भालपरम सुखदीनाजी ।।पुष्पदन्त महराज रखोगमलाज समरकरोचीणा जी । शीलशिरोमणि देवकरे तुमसेव सुफलमम जीनाजी ।।

।। चौपाई ।।

शीतलनाथ शीलसुख धामा । सिद्धि करो मनोवांछित कामा ।।
श्रेयांश श्रीपति गुण ग्रामा । जपोंनाम थारा वसुयामा ।।

।। दोहा ।।

वासपूज्य के पूज्यपद वसो हृदय ममथ्यान । विमलनाथ कळमलहरो करो विमल कल्याण ।। अनन्तनाथ दीजै अनन्त सुख यहपुजओ ममआश प्रभू । दीजै मुक्तिरसाल काट विधिजाल रखो निजपास प्रभू ।। २ ।। धर्मनाथ प्रभुधर्म धुरंधर धर्मतीर्थ कर्त्तारप्रभू । प्रगटे धर्म जहाजनाथ किएभक्त भवोदधि पारप्रभू।। शांतिनाथ प्रभुशांति गुणोनिधि कामक्रोध किएच्चार प्रभू । दयासिन्धु त्रिभुवन के नायक दुःखदरिद्र हर्तारप्रभू ।। कुंथुनाथ कुंथूगजसम जीवों के रच्छण हारप्रभू अधमोद्धारक भवोदधि तारक देनहार सुखसार प्रभू ।।

।। चौपाई ।।

अरहनाथ अरकांने चूरि । जिनके वचन सुधारस पूरि ।।
मल्लिनाथ मल्लन में भूरि । काममल्ल हनिकीना दूरि ।।

।। दोहा ।।

मुनि सुव्रताजिनराज जी, प्रभुअनाथके नाथ।।कार्यसिद्धिमम कीजिए,नमोंजोड़ युगहाथ ।। नमि प्रभु दीनदयालु मिटादो भव अरण्य का रासप्रभु । दीजै मुक्ति रसालकाट विधिजाल रखो निजपास प्रभू ।। ३ ।। समुद्र विजय सुतनेम सुखो सुतराजमती के कन्तप्रभू । यदुकुल तिलकशरण अशरणको देनहार सुखसंत प्रभू ।। पारस नाथ बालब्रह्मचारी तपधारी सुमहन्त प्रभु । नागनागनी जरत बचाये दे निजमत्र तुरन्त प्रभू । महावीर महधीर महारिपु कर्मों का किया अन्त प्रभू । पावा पुरसे मुक्ति पधारे हो अन्तम अर्हन्त प्रभु ।।

।। चौपाई ।।

तीनकालके जिन चौबीस । त्रिविध शुद्ध ध्याऊ जगदीश ।।

कार्य सिद्धि श्रीजैनम ईश। युगल चरण में नाऊं शीश॥

॥ दोहा ॥

हाथजोड़ विनती करों नाथ ग़रीब निवाज। लाज रहैजो दासकी कीजै वही इलाज॥ नाथुराम की अर्ज यही करदो वसुअरिका नाशप्रभू। दीजै मुक्तिरसाल काट विधिजाल रखो निजपास प्रभू॥ ४॥

॥ जिनप्रतिमा स्तुति ॥
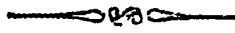
ध्यानारूढ़ वीतरागी छवि परम दिगम्बर श्रीजिनेश। महापवित्र मूर्तिश्रीजिन की त्रिभुवन पति पूजते हमेश॥ टेक॥ जैसे रागकामी को बढ़ावे हावभाव युत त्रियका चित्र। भय घिणउपजे देखत मूर्ति सिंह मलेच्छ महाअपवित्र॥ तैसे भाव वैराग्य बढ़ावे परम दिगम्बर मूर्ति विचित्र। क्षमाशील सतोष होंय दृढ़ देखत श्रीजिन मूर्ति पवित्र॥ कृत्या कृत्रिम मूर्ति पूज्यसब नहीं परिग्रह जिनके लेश। महा पवित्रमूर्ति श्रीजिनकी त्रिभुवन पति पूजते हमेश॥ १॥ चतुर्निकाय देवनर खगपति जिन मूर्तिको करें प्रणाम। मनवच काय भाव श्रद्धायुत वन्दत प्रभुछवि श्रीजिन धाम॥ ऐसी मूर्ति पूज्य श्रीजिन की महा पुरुषवन्दे वसुयाम। तिसकी जो शठ निन्दा करते अपराधी तिनका मुंह श्याम॥ जिनवर तुल्यमूर्ति श्रीजिन की यही पुराणों में आदेश। महा पवित्र मूर्ति श्रीजिनकी त्रिभुवन पति पूजते हमेश॥ २॥ अधम कालकी यह विचित्र गति बढ़े दुष्ट पापी स्थूल। मिथ्या ग्रन्थ बनाय पापमय धर्म ग्रंथों का काटत मूल॥ जैनीहो जिनवचन न माने हैं मुख्यार उनके में धूल। जिन मूर्तिकी निन्दा करते आम्रकार्य बोवतें बंबूल॥ महा नर्क की सहै वेदना परभव में ऐसे मूढेश। महा पवित्र मूर्ति श्रीजिनकी त्रिभुवन पति पूजते हमेश॥ ३॥ है प्रत्यक्ष मूर्ति जड़ सबही किन्तु पूज्य जिन का आकार। राग द्वेष परिग्रह ना जिनके चा शील लक्षण गुन सार॥ वस्त्र शस्त्र आभरण विलेपन कौतूहल नाना शृंगार। काम क्रोध लक्षण युत मूर्ति सो अवश्य पूजना असार॥ नाथूराम कहैं जड़तो शास्त्रभी किन्तु पूज्य जिनवचन विशेष। महा पवित्र मूर्ति श्री जिनकी त्रिभुवन पति पूजते हमेश॥ ४॥

॥ कलयुगकी ३ ॥

कलयुगका करों व्यान-वक्त जबसे कलियुग का आयाहै । हुआ दुःखी संसार पापसे पाप जगत में छायाहै ॥ टेक ॥ धरायोग तजभोग भई छवि परमहन्स मूर्ति स्वयमेव । वीतराग जिन देव दिगम्बर तिन्हें कहै शठनंगा देव ॥ आपलिंग शंकर का उमाकी पूजें भगनर त्रियकर सेव । तिन्हें न नंगा कहैं महा निर्लज्ज दुष्टों की देखो टेव ॥ शिवभक्तों के उरमें उमाकी भग शिव लिंग समाया है । हुआ दुःखी संसार पापसे पाप जगत में छायाहै ॥ १ ॥ वीतराग है नग्न मगर मस्तक पद तिनके पूजें परम । महादेव का लिंग पूजें जो नाम लिए आती है शरम ॥ बड़े सोच की बात दुष्ट शठआप तो ये बदकरें करम । वीतराग की निन्दा करते जो जगमें उत्कृष्ट धरम । भई भ्रष्टमति भ्रष्ट जिन ने जिनसे लिंग पुजायाहै हुआ दुःखी संसार पापसे पाप जगत में छाया है ॥ २ ॥ देख तिलोत्तमारूप वदन ब्रह्मा ने काम वश कीने पांच । धर नितम्ब शिरहाथ शंभुने किया गवर के आगे नाच ॥ धरें नारिकारूप कृष्ण जी फिरे सुब्रजमे खोलें कांच । तज धोती लिया पैंध घांवरा लिखा भागवतमें लो बांच । महा कामके धाम तीनों ऐसा पुराणों में गायाहै । हुआ दुखी संसार पापसे पाप जगतमें छायाहै ॥ ३॥ लोभ पाप का बाप जिसने ब्राह्मण के घर कीना है बास । मिथ्या ग्रंथ बनाय धर्म शास्त्रों काकर दीना है नाश ॥ भक्ति ज्ञान वैराग की तज कामी जो मतिही-नाहै खास । कहैं भक्ति भोगोमें विषय पोषण को नाम लीना है तास ॥ ई-श्वर का लेनाम भोगकर पुष्ट करें निज काया है । हुआ दुःखी संसार पापसे पाप जगतमें छायाहै॥४॥ब्रह्मा विष्णु महेश तीनोंये काम क्रोध मायाके धाम वीत राग तीनों से वर्जित शुद्ध सार्थक जिनका नाम । पक्षपात तज कहो धर्म से इनमें कौन पूजन के काम । वीतराग या हरि हर ब्रह्मा कहै सभा में नाथूराम । दुष्टों का अभिमान हरण को यह शुभ छंद बनायाहै । हुआ दुखी संसार पाप से पाप जगत में छाया है ॥ ५ ॥

❀ श्रीगुरु प्रशंसा ❀

कर्म रेख पर मेख मार के हाथ लिये तदवीर फिरें । पर स्वारथ के काज श्रीमुनिराज बने बन वीर फिरें । टेक । अन्तर्बाहर त्याग परिग्रह निर्मद नग्न

शरीर फिरैं । काम शत्रु को जीत बालवत निर्विकार निर चीर फिरैं । तीन काल दुद्धर तप तप ते एकाकी तन भीर फिरैं । निरालंब निर्भय केहरि सम निर्जन गिरि वन धीर फिरैं । तारण तरण हरण अघ जन के श्री गुरु गुण गम्भीर फिरैं । पर स्वार्थ के काज श्री मुनि राज बने बन वीर फिरैं । १ । ग्रीष्म ऐन शिखर तप तप ते प्यास सहन बिन नीर फिरैं । वर्षा तरुतल रहन सहन दंसादिक की तन पीर फिरैं । शीत काल में निवसत सर सरिता सागर के तीर फिरैं । द्वाविंशति निज सहत परीषह रञ्चेना दिलगीर फिरैं । अट्ठाइस मूल गुण पालत दोष रहित शुभ शीर फिरैं । पर स्वार्थ के काज श्री मुनिराज बने बन वीर फिरैं ॥ २ ॥ कर्म महारिपु जियके जगमें तिन वश जीव अधीर फिरैं । तड़ फड़ाय पर छूटन नाहीं बन्धे मोह जंजीर फिरैं ॥ ऐसे अरि के नाशन को गुरु लिए ज्ञान धनुतीर फिरैं । ध्यानखंग से नाशत अरि को भय रहित सुधीर फिरैं ॥ जाति जीव निज मनके रक्षक करुणा सिन्धु गहीर फिरैं । पर स्वार्थ के काज श्री मुनिराज बने बनवीर फिरैं ॥३ ॥ संसारी जिय राग द्वेष वश शुभ अशुभ बिना तकदीर फिरैं । परगुरु कर्म करैं छयक्षण २ ज्यों घन हनन समीर फिरैं ॥ कर्म आस तज नाम जगतका निजधन पाय सधीर फिरैं ॥ विषय भोग की तजी वासना बने अगति के पीर फिरैं । नाथूराम जिनभक्त कहत यह भवसागर के तीर फिरैं ॥ पर स्वार्थ के काज श्रीमुनिराज बने बन वीर फिरैं ॥ ४ ॥

॥ जुआ निषेध को ५ ॥

सब अवगुण का मूल जुआ यह अधम जनों को प्यारा है । सज्जन श्रवण सुनत घिण करते खल गणने अखत्यारा है ॥ टेक ॥ सतसंगति विश्वासधर्म धन रूप शुद्धता सुखकी आस । चिन्ता सुमति प्रतिष्ठा गौरवनीति प्रीति को करता नाश ॥ बध बन्धन छलकपट क्रोध भय खेद शोक दुर्मति का वास । कलह विवाद विरोध शत्रुता होंय जुएसे पैदा खास ॥ जपतप संयम शील धर्म तरुकाटन वज्र कुठारा है । सज्जन श्रवण सुनत घिण करते खल गणने अखत्यारा है १॥ होय जुएमें जीत पायधन सतका जावें वेश्याघर । पियें प्रेमवश शराब खावें मांस छिपा लोगों की नजर ॥ हारें तो चोरी करते पड़ते है कैद ज्वारी अ-कसर । मारें लोभ वश बच्चों को तिनका उतार लेते जेवर ॥ जो वेश्या ना

मिलें रमें परनारि जाय तहां मारा है। सज्जन श्रवण सुनत घिण करते खल गणने अखत्यारा है ॥ २ ॥ लखपती का बेटाभी जुएमें हारा चोरी करताहै। प्रथम चुरावे घरका धन ना मिले तो परका हरताहै ॥ वस्त्राभरण लगाई और बच्चों को दाव पर धरता है । कुवचन कष्ट यहां सहके मरके दुर्गति में परता है ॥ खेलनकी क्या बात तमाशा भी इसका नाकारा है । सज्जन श्रवण सुनत घिण करते खलगणने अखत्याराहै ॥३॥राजानल अरु भूप युधिष्ठिर राज पाट गृह हारेसब । वस्त्राभरण रहित भटके बन बनमें मारे मारे सब ॥ राजों की यह दशाभई तो फिर क्या रंक विचारे सब ॥ बुद्धिमान लखके हितकारी मानों बचन हमारे सब । मन मतंग वशकरो तजो यह जुआ महा अघ भारा है ॥ सज्जन श्रवण सुनत घिण करते खल गणने अखत्यारा है ॥४॥ होयदिवाली खुलें दिवाले बहुतों के यह खेल जुआ । कोई तास सुरही चौपड़ कोई खेले नक्की और दुआ ॥ बुद्धिमान लड्डू पेड़े खाजे ताजे अरु माल पुआ । खांय मनावें खुशी दिवाली का उनके त्योहार हुआ ॥ नाथूराम नर पशु विवेक बिन जिन यह जुआ पसारा है। सज्जन श्रवण सुनत घिण करते खल गणने अखत्यारा है ॥ ५ ॥

❀ शाखी ❀

कलिकाल में पाखंड बाढा साधु बहु कामी भये । सुर वासकी तज आश शठ दुर्गति के पथगामी भये॥परनारि संग कुशील कर बन योगतज धामी भये । विद्या के बल रचग्रन्थ झूठे लोगों में नामी भये ॥

❀ दौड़ ❀

साधु बन बुरे काम करते । नहीं खल दुर्गति से डरते ॥ झूठे लिख लिख पुराण भरते। दोष सत्पुरुषों पर धरते ॥ नाथूराम कहै सुनो भाई । खलों का मिथ्या चतुराई ॥

❀ कृष्णादि की ६ ❀

देखो दुष्टता दुष्टों की अपराध बड़ों के शिरधरते। काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निद्य कार्य करते । टेक ॥ अति कामी अरु साधु कहावें कुशील

सेवन नित्य करें। हिंसा चोरी झूठ बोलना आदि पापों से नहीं डरें॥ अपने दोष छिपाने को मिथ्या उपाय रचग्रन्थ में। वेद शास्त्र के शब्दार्थ के बदलन में कुटिलता धरें॥ तिनका वर्णन सुनों कानदे जैसी शक्ति वे ठग भरते। काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते॥ १॥ अति उत्तम यदुवंश तहां श्रीकृष्ण हुए हरिपद धारी। नीतिवान विद्वान तिन्हैं कहते पर त्रिय रत व्यभिचारी॥ कहैं गोपिका रमी कृष्ण ने जोथीं गवालों की नारी। राधा कुब्जा आदि सहस्र सोलह वह पाप धरें भारी॥ ऐसी तो निन्दा करते अरु भक्त बनें भारी वरते। काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते॥ २॥ एक समय कहैं नग्न गोपिका करतीथीं जल में स्नान। तटपर चीर धरे सबके सो लेके कदम पर चढ़गया कान॥ तब गोपी लज्जित होके कर जोड़ चीर मांगे पहिचान। पर हरिने ना दिये कहा तन नग्न दिखाओ सन्मुख आन॥ जब देखीं सब नग्न कहैं तब डाले चीर हरि तरुपरते। काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते॥ ३॥ कहैं कृष्ण मनिहार नारि बन ब्रज वनितों से कीना छल। लूट चोरि माखन दधिला हंसकर तिनके कुच देते मल॥ इत्यादिक अति दुराचार कुक्रिया कृष्ण की बताते खल। जो जग में अत्यंत निंद्य सो कहैं करी हरि माया बल॥ भक्त बनें अरु निन्दा करते महा पापसे नहीं डरते। काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते॥ ४॥ मेरे कहे को झूठ जानो तो देखो भागवत में पढ़कर। पढ़े न हो तो सुनो औरों से देखो लिखा इसमे बढ़कर॥ झूठी पक्ष गहो मतहठ से मूढ़ विवाद करो लड़कर। देखो को निन्दा करते सो हृदय विचार करो दृढ़कर। नाक काट पीछे दुशाले से यही मसल शठ आचरते। काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते॥ ५॥ बालपने में कृष्ण विपति वश रहे नन्द यशुदा के धाम। तहा अवश्य नित धेनु चराई अन्य बुरा ना कीना काम॥ युद्ध क्रिया बलभद्र सिखाई छिप छिपके जा गोकुल ग्राम। कंस मार जा बसे द्वारिका यदुवंशिनले संग तमाम॥ नीति राज्य किया श्रीकृष्णने झूठे दोष धरें खरते। काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते॥ ६॥ पूज्य पुरुष पाण्डव तिन की उत्पत्ति कहें औरों से खल। कहैं पंचभरतारी द्रोपदी द्रुपद सुता जो सती विमल॥ हनुमान को बन्दर कहते जो विद्याधर नृप अतिबल। महापुरुष के पूंछ लगाने और भक्त बनते निश्चल॥ इससे निंदा अधिक और क्या पशुः

बनाय दये नरते । काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्यकार्य करते ॥ ७ ॥ कर्ण को कर्णज कहै कुश की उत्पत्ति कहै कुश दूबाकर । मच्छ गंधिका मच्छी से गांगेव गंगाजल में ढूबनर ॥ निर्विक झूठी युक्ति मिलाते जैसे नाम सुनंत अक्सर । तैसीही उत्पत्ति तिन्हों की कहै पेड़ रोपें बिनजर ॥ जिन बच सूर्य समान सुनें ना भर्म तिमरको जो हरते । काम क्रोध मद मोह लोभ वश आपनिंद्य कार्य करते ॥ ८ ॥ लीलानाम खेल का है सो खेल करें अज्ञानी जन । पूज्य पुरुष ये खेल न करते नर्क वास जिनके लक्षण ॥ अपने ढोंग पुजाने को यह उन दुष्टों ने किया यतन । भक्त बने अरु निन्दा करते महा पाप में रहैं मगन ॥ झूठे ग्रंथ कुटिलता सें रच निज स्वार्थ को आदरते । काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते ॥ ९ ॥ कृष्णादिक सत्पुरुषों का उत्तम कुल जिनमत में गाया । धर्म नीति युत राज्य किया तिन नहीं करी किंचित माया ॥ अपने ढोंग पुजाने को यह फन्द खलों ने बनाया । जिन गृहमें मत जाउ कभी भोरे जीवों को बिंहकाया ॥ नाथूराम जिन भक्त वहां दुष्टों के फन्दमय लख परते । काम क्रोध मद मोह लोभ वश आप निंद्य कार्य करते ॥ १० ॥

❋ शाखी ❋

सुख करन कलि मल हरण तारण तरण त्रिभुवन नाथजी । कल्याण कर्त्ता दुःख हर्त्ता नवों तुमपद माथजी ॥ है विनय जनकी यही मनकी रखो चरणों साथजी । भवसिंधु पार उतार स्वामी पकड़ जनका हाथजी ॥

❋ दौड़ ❋

प्रभुजी तुमहो तारण तरण । जनको राखो पदों के शरण ॥ योगन बसे तुम्हारे चरण । जनका मेटो जन्मन मरण ॥ जपे जिनभक्त नाम तेरा । नाथूराम चरणों का चेराजी ॥

॥ श्रीजिनेंद्र स्तुति ॥ ७ ॥

श्रीजिन करुणा सिंधु हमारी दूरकरो भवपीर सनम । आशक की आशा पूरो सब माफ करो तकसीर सनम ॥ टेक ॥ यह संसार अपार नीरनिधि अति दारुण गम्भीर सनम । गोता खात अनादि काल से मिला न अब तक तीर सनम ॥

सुना नाम शुभ ज्ञान तुम्हारा तारण भवोदधि नीर सनम। आशा वान भया तब से कुछ आया मनको धीर सनम। तुमसा तारक पाय मिटी अब निश्चयकर भय भीर सनम। आशक की आशा पूरो सब माफ करो तकसीर सनम॥ १॥ नित्य निगोद बसा अनादि तहां थावर पाय शरीर सनम। मरा श्वास मे बार अठारह बँधा कर्म जंजीर सनम॥ थावर भूजल तेज वनस्पति भाषी और समीर सनम। ऐसे भ्रमत लई त्रस काया कंचन यथा फकीर सनम॥ मिला न तौ भी पार भवोदधि ऐसा अतट गहीर सनम। आशक की आशा पूरो सब माफ करो तकसीर सनम॥ २॥ फिर विकलत्रय अरु पंचेंद्रिय मन बिन रहा अधीर सनम। फिर तिर्यंच पंचेंद्रिय सैनी भयो विनश तकदीर सनम॥ वध बन्धन दुःख सहा वहा बहुभार रहा दिलगीर सनम। पुनःनर्क दुःख सहा पंच विधि जहां न कोई सीर सनम॥ ताड़न मारण आदि जहां ना बचनेकी तदवीर सनम। आशक की आशा पूरो सब माफ करो तकसीर सनम॥ ३॥ नरतन पाय सुकृत कुछ कर सुर भयो अपर बलवीर सनम। फिर सम्यक्त बिना भटको ना भवोदधि लयो-अखीर सनम॥ अब शुभ योग मिला श्रावक कुल अरु तुम त्रिभुवन पीर सनम। शिक्षा माघुन से कीजे शुचि अंतरआत्म धीर सनम॥ नाथूराम जिन भक्त भये अब जिन धन पाय अमीर सनम। आशक की आशा पूरो सब माफ करो तकसीर सनम॥ ४॥

※ जिन भजन का उपदेश (म) की दुअंग ८ ※

मन वच्चनकाय जपो निशि वासर चौवीसो जिन देवका नाम। मंगलकरन हरन अघ आर्ति घाता विधि दाता शिव धाम॥ टेक॥ मोह महा भट जगत में नटखट ताके पड़ा वश आत्म राम। मग्न विषय सुख में निशि वासर नहीं खबर निज आठो याम॥ मूढ़ कुमति से प्रीति लगाकर मित्र बनाये क्रोधरु काम। महत्व अपना भूल गया शठ जाना रूप निज हाड़रु चाम॥ मर्हद्भक्ति करेना जड़मति जासे मिले अनूपम शिव धाम। मंगल करन हरन अघ आर्ति घाता विधि दाता शिवधाम॥ १ मदन के वश रस विषय को चाहे दाहै सुगुण निज मूढ़ तमाम। माने ना शिक्षा गुरुजन की दुर्गति को करता क्या-

श्राप ॥ मद्य मांसको सप्रेम सेवे जैसे दरिद्री शीत में घाम । माया लीन ठगे दीनों को फिर कुविसन में खोवे दाम ॥ मति मानों की करै न संगति जासे बसे अविनाशी ठाम । मंगल करन हरनअघ आर्ति घाता विधि दाता शिव धाम ॥ २ ॥ मात तात सुत भ्रात मित्र धन दासी दाम अर्द्धंगी भाम । माने मोह वश इनको अपने वो बंबूल शठचाहे आम ॥ मेरी मेरी करता निशिदिन नहीं लहै क्षणभर विश्राम । मोत फिरे शिरपर निशि बासर नहीं करे क्षणएक विराम ॥ महा मूढ़ प्रभु नाम न जपता जिस्से होय अविचल आराम । मंगल करन हरन अघ आर्ति घाता विधि दाता शिवधाम ॥ ३ ॥ मिथ्या मार्गचले आप शठ कर्मों को देता इल्जाम । मुन तत्त्व श्रद्धाण न करता इस्से अधोगति करे मुकाम ॥ मानो सुधी यह शीख सुगुरु की स्वपर भेद में रहो न खाम । मिले न फिर पर्याय मनुज की करो शुद्ध या से परणाम ॥ मद आठो को टारधार उर नाम प्रभू का नाथूराम । मंगल करन हरन अघ आर्ति घाता विधि दाता शिव धाम ॥ ४ ॥

* सिंहावलोकन शिकस्तः बहर जिनेन्द्र स्तुति ९ *

जाली हैं आठो मोहादि ये खल जगत् के जीवों पै फांसी डाली । डाली है अर्जी पेशी में जिनवरये नाश कीजे मोहादि जाली ॥ टेक ॥ जाली जलाके मुक्ति में जाके तुम तो कहाये त्रिलोक आली । आली न जगमें है ऐसा दूजा कीनी बहुत फिरके देखा भाली ॥ भाली अनूपम उन्हीं ने पूर्ण जिनने गले भक्ति माल घाली । घाली नशीहत थारी स्व उर में पूरी प्रतिज्ञा सुमति से पाली॥ पाली मुक्ति रानी जाहि क्षण में मोह पांस पल में तोड़ डाली । डाली है अर्जी पेशी में जिनवर ये नाश कीजे मोहादि जाली ॥ १ ॥ जाली हैं आठो ये आदिही के इनके साथ काहू ना वफाली । वफाली बेशक उन्हीं ने स्वामी जिन्ने शक्ति स्वातम की सम्हाली ॥ सम्हाली रत्नत्रय आप सक्षति कुमति कुटिल हिरदे से निकाली । निकाली सूरत आठो हवन की नहीं रंच रिपु की शक्ति चाली ॥ चाली सुमति जिन के साथ आगे तिनके गले विश्व ज यमाल डाली । डाली है अर्जी पेशी में जिनवर ये नाश कीजे मोहादि

जाली ॥ २॥ जाली कर्म थिति रूपी बनी तुम तोथी तुम्हारी प्रकृतिकृपाली कृपाली तुमको निरख पशूधर निकट रमैं व्याल औ मराली ॥ मरालीफनपति समेप रमते हृदय धार अनुभव की कलाली। कलाली पूर्ण स्वपर प्रकाशक प्रीति कुपति कुलटा से हटाली। हटाली निज सम्पति आप कर में कभी दृष्टिपर धनपर न डाली ॥ डाली है अर्जी पेशी में जिनवर ये नाश कीजे मोहादि जाली ॥ ३ ॥ जाली मुक्ति लक्ष्मी परम पावन मनुज जन्म पाये की नफाली। नफाली अविनाशी सार पद की जीति मोह राजा की ध्वजाली ॥ ध्वजाली जयकी आठो को हतके गुरु की नशीहत पूरी निभाली। निभाली शिक्षा सुगुरूकी जरमें स्थिति लई इस जगमे निराली ॥ निराली विनती सुनो प्रभुजी नाथूराम जो चरण में डाली। डाली है अर्जी पेशी में जिनवर ये नाश कीजै मोहादि जाली ॥ ४ ॥

❃ शिकस्तः बहर जिनेंद्र स्तुति १० ❃

हे मेरे स्वामी जिनेश नामी भवाब्धि में से निकाल करके। बनाओ सेवक हे नाथ अपना मो रक्षाकीजे सम्हाल करके ॥ टेक ॥ तुमतो दयाकर गुणों के सागर छाया विरदजग विशाल करके। कोई न तुमसा त्रिलोक अन्दर किसकी बताऊं मिशाल करके ॥ जैसे अतुल बल का धारी केहरि जांचे तिसे को शृगाल करके। वा बिम्ब रविका प्रचंड दिन में को जांचे ता दीपमाल करके ॥ अतुल गुणों के निधान प्रभुजी क्यों होवे वर्णन मो बालकरके। ब नाओ सेवक हे नाथ अपना मोरक्षा कीजे सम्हाल करके ॥ १ ॥ त्रिलोक ढूंढे न कोई पाया शरण का दाता दयाल करके। मिले सुदाता अब विश्व ज्ञाता बैठो असाता खयाल करके ॥ जो दुःख देखा न तिसका लेखा कहूं कहांतक कमाल करके। हे विश्व ज्ञानी तुम्हें न छानी इसमे हरो विपदा पाल करके ॥ सुयश तुम्हारा जगत् में भारा नवे जगत् नीचा भालकरके। बनाओ सेवक हे नाथ अपना मो रक्षाकीजे सम्हाल करके ॥ २ ॥ उदार तुम प्रभु स्वगुणके दाता तारे बहुत भवि निहाल करके। खलासकीने बहुतमे प्राणी बंधे थे जो विधि के जाल करके ॥ महाबली ये आठो कर्म तिन राखे जगत्

जी बेहाल करके । जो शरण आया सो तुम बचादा आठों कर्म को पामाल करके ॥ अब जनको तारो ससारोदधि से आठों कर्मको बवाल करके । बनाओ सेवक हे नाथ अपना मो रत्ता कीजे सम्हाल करके ॥ ३ ॥ तुम तो कर्म द्रुम समूल नाशे शुक्ल ध्यानदों मजाल करके । मुक्ति में राजत होके अवाधित सो पद में याचन सवाल करके ॥ दुःखी जगत्जन पडे कर्म बन जलें अग्नि अघकी झाल करके । थारे बचन घन हैं ताप नाशन पोषें जगत् को खुश हाल करके ॥ राखो शरण निज हे विश्व ईश्वर नाथूराम को बहाल करके । बनाओ सेवक हे नाथ अपना मोरत्ता कीजे सम्हाल करके ॥ ४ ॥

※ परमदिगम्बर मुद्राकी प्रशंसा ११ ※
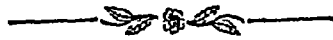
परम दिगम्बर बीतराग जिन मुद्राम्हारी आखों में । बसी निरन्तर अनूपम आनदकारी आखों मे ॥ टेक ॥ जा दर्शत वर्षत सम्यक रस शिव सुखकारी आखों में । विषय भोगकी वासना रही न प्यारी आखों में ॥ जग असार पहिचान प्रीति निज रूपसे धारी आखों में । तृष्णा नागिन जाहि संतोष से मारी आखों में ॥ सब विकल्प मिटगये लखत जिनछवि बलिहारी आखों में । बसी निरन्तर अनूपम आनंदकारी आखों में ॥ १ ॥ राग द्वेष संशय विमोह विभ्रम थे भारी आखोंमें । देखत प्रभुको लेश ना रहा उजारी आखों में॥कुयश कलंक रहा ना छवि लख अचरजकारी आखों में । यह प्रभु महिमा कहां यह शक्ति विचारी आखों में ॥ सहस्र नयन हरि लखत बाल छवि जिनवर थारी आखों में । बसी निरन्तर अनूपम आनंदकारी आखों में ॥ २ ॥ मंगल रूप बाल क्रीडा तुमलख महतारी आखों में । आनन्द धारे यथा लख रत्न भिखारी आखों में ॥ देव करें नित सेव शक्रसे आज्ञाकारी आखों में । उजर न जिनके रहैं हाज़िर हरवारी आखों में ॥ निर्त करत गति भरत रिझावत दे दे तारी आखों में । बसी निरन्तर अनूपम आनंदकारी आखों में ॥ ३ ॥ केवल ज्ञानभये यह दुनियां झलकत सारी आखों में । पलक न लागे न आवे नींद तुम्हारी आखों में ॥ द्वादश सभा प्रफुल्लित छवि लख सुर नर नारी आखों में । किंचित कोई दृष्टि ना पड़े दुःखारी आंखों में॥ नाथूराम जिन भक्त दरश लख

भये सुखारी आखों में । बसी निरन्तर अनूपम आनंदकारी आखों में ॥ ४ ॥

* परम दिगम्बर जिन मुद्रा की १२ *

नाश भये सब पाप लखी जिन मुद्रा प्यारी आखों से । मोह नींद का गया आताप हमारी आखों से ॥ टेक ॥ परमदिगम्बर शांति छवी ना जाय बिसारी आखों से । तुष्ट भया मन यथा निधि देख भिखारी आखों से ॥ होत कृतार्थ देख दर्शन नृप सुर नर नारी आखों से । पर द्रव्यों को हेयलख प्रीति निवारी आखोंसे ॥ निज स्वरूप में मग्न भये लख सम्यकधारी आखों से । मोह नींद का गया आताप हमारी आखों से ॥ १ ॥ कायोत्सर्ग तथा पद्मासन प्रतिमा धारी आखों से । देखत होता दरश आनन्द अधिकारी आखों से ॥ ध्याना रूढ़ शान्त दृष्टि नाशा पर धारी आंखो से ॥ विस्मय होता देख छवि अचरज कारी आंखों से । देवों कृत शुभ अतिशय देखत सुखहो भारी आंखों से ॥ मोह नींद का गया आताप हमारी आंखों से ॥ २ ॥ राग द्वेष मद मोह नशे तम भक्ति उजारी आखों से । चिन्तामणी शक्ति संतोष से टारी आंखों से ॥ निज परकी पहिचान भई उर दृष्टि पसारी आंखों से । जड़मति सारी गई देखत धी धारी आंखों से ॥ भव संसार निकट आयो जिन छवी निहारी आंखों से । मोह नींद का गया आताप हमारी आंखों से ॥ ३ ॥ सहस्राक्ष कर निरखत वासव छवी तुम्हारी आंखों से । तृप्त न होता देख छवि मद्रा सुखारी आंखों से ॥ भाज गई विपदा छवि देखत क्षण में सारी आंखों से । कोई प्राणी दृष्टि ना परे दुःखारी आंखों से ॥ नाथूराम जिन भक्त दरश लख कुमति विडारी आखों से । बसी निरन्तर अनूपम आनन्द कारी आखों से ॥ ४ ॥

॥ दर्शनकी लावनी १३ ॥
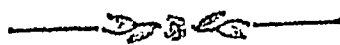
हे प्रभुदीन दयाल सदा मुझको अपनी दीजे दर्शन । भंजन धारा हमारा हरो कष्ट प्रभुहो परसन ॥ टेक ॥ तुम त्रिभुवन के ईशतुम्हें तज और शीस किस

को नाऊं। तुमसे दाता पाय प्रभु और किसे जांचन जाऊं॥ अन्य देव सब रागी द्वेषी तिन्हे न मैं स्वप्ने ध्याऊं। यही मनोर्थ है मेरा दर्श सदा थारा पाऊं॥ राखो अपने पास जान निज दास न अब पाऊं तरसन। मैं जन थारा हमारा हरो कष्ट प्रभुहो परसन॥ १॥ युगल नयन दिन रैन तुम्हारे दर्शनकी कररहे है आश। युगल चरणका मनोर्थ यही चलें पहुंचें तुम पास॥ दोनोंकर वसु द्रव्य मिलाकर तुम पद पूजन चाहत खास। द्रव्य भाव मन तुम्हरे युगलचरण का चाहत वास॥ रसना इच्छा करैसदा यह तुम गुणमुख लागें बरसन। मैं जन थारा हमारा हरो कष्ट प्रभुहो परसन॥ २॥ मैं अवगुण की खान अधिकतर पर थारेही गुणगाता हूं। स्वप्नान्तर भी अन्य देवको न शीस नवाताहूं॥ क्षण २ लेतानाम तुम्हारे दर्शन को ललचाता हू। अवसर पाता तभी तत्काल दर्श को आताहूं॥ स्वप्न में भी देखत तुम दर्शन मन मेरालागत हर्षण। मैं जन थारा हमारा हरो कष्ट प्रभुहो परसन॥ ३॥ तबतक दर्शन मिलें निरंतर जबतक नाशकरों वसुकर्म। पाऊं वासा मुक्ति मंदिर में यही आशा ममपर्म॥ बहुत दिनों से करों बीनती पलेनहीं दर्शन बिन धर्म। हे विश्वेश्वर दासकी सुनो दाद राखो अब शर्म॥ नाथूराम को चरण शरण निज राखलेहु कर आकर्षण। मैं जन थारा हमारा हरो कष्ट प्रभुहो परसन॥ ४॥

॥ चौसड़की लावनी १४॥

चौरासी लख योनि में चौसड़ खेलत काल अनादि गया। चारों गति के चार घरसे न अभी तक पार भया॥ टेक॥ देवधर्म गुरु रत्नत्रय तीनों काने बिन पहिचाने। आराधना चारो नहीं हिरदय में धरे चारो काने॥ पंचमहाव्रत पंजड़ी बिन नहीं पाया पंचम निज थाने। षटमत छकड़ी के बोध बिन रहा अभी तक अज्ञाने॥ पंच दुरी सत्ताके बोध बिन सत्ताका ना सत्त्वछया। चारों गति के चार घरसे न अभीतक पार भया॥ १ पांचतीन अथवा छः दो अट्ठा के बिना जाने भाई। वसुकर्म न नाशे नहीं वसुगुण विभूति अपनी पाई॥ पांच चार अथवा छःतीन जाने बिन नवनिधि विनशाई। नवग्रीवक जाके चतुर्गतिमें फिर

श्रवण कियाजाई॥ चार दशाश्रित धर्म न जाना दशविधि परिग्रह भारठया॥ चारों गति के चार घरसे न अभीतक पार भया॥२॥ दशपौ ग्यारह के बिन जाने गुण स्थान ग्यारह चढ़के । फिर गिरा अज्ञानी मोह वशसहे दुःख नाना बढ़के ॥ दश दो या करने बारह बिन जाने मोह भटमे अड़के । बारम गुण थाने चढ़ा ना निज विभूति पाता लड़के ॥ पौबारह के भेद बिना ना तेरह विधि चारित्र लया चारों गति के चार घरसे न अभी तक पार भया ॥ ३ ॥ चौदह जीव समास चतुर्दश मार्गना नहीं पहिचानी । इस कारण चौदह चढाना गुण स्थान भए त्रुभि ठानी ॥ पन्द्रह योग प्रमाद न जाने तिनवश आस्रव रतिमानी । सोलह कारण के बिना भाये न कर्म की थिति हानी ॥ सत्रह नेम बिना जाने नहीं पाली विविध जीव दया । चारोंगति के चार घरसे न अभीतक पार भया ॥ ४ ॥ दोष अठारह रहित देव अरिहन्त नहीं हिरदय आने । इस हेतु अठारह दोष लगरहे नहीं अबतक हाने ॥ सम्यक रत्नत्रय पासे अब सुगुरु दया से पहिचाने । आठों विधि गोटें नाशी गुण आठ वखेधर के ध्याने ॥ नाथूराम जिन भक्त पार होने को करो उद्योग नया । चारों गतिके चार घरसे न अभी तक पार भया ॥ ५ ॥

॥ विहरमान वीसतीर्थंकर की लावनी १६ ॥
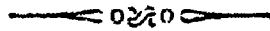
विहरमान जिन ढाई द्वीप में वीस सदाही राजत हैं। तिनका दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं ॥ टेक ॥ जम्बूद्वीप में विदेह बत्तिस आठआठ में एक जिनेश । सदा विराजें रहे भविजीवों को देते उपदेश ॥ सीमंधर युगमंधर स्वामी बाहु सुबाहु श्रीपरमेश । चार जिनेश्वर कहे तिन के पद वन्दन करों हमेश ॥ धर्म चौथा काल जहां नित देव दुंदुभी बाजत हैं। तिनका दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं ॥ १ ॥ धातुकी खंड द्वीप में विदेह है चौसठ अरु वसु जिनराज । आठआठ में एक तीर्थंकर तिनमें रहे विराज ॥ सुजात और स्वयं प्रभु ऋषभानन अनंत वीर्य महराज । विशाल सूरी प्रभू वज्र धर चन्द्रानन राखो लाज ॥ छा लम गण व्यवहार और निश्चय अनन्त गुण छाजत हैं। तिनका दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं ॥ २॥ आधे पुष्कर द्वीप में चौसठ हैं विदेह क्रम

प्रभु जिननाथ । जिनको सुर नर वहां पूजें हमभी यहां नावैं माथ ॥ चन्द्र बाहु श्रीभुजंग ईश्वर नेम प्रभू वीर सेनजी नाथ । महाभद्र अरु देवयश अजित वीर्य पद जोड़ों हाथ ॥ जिनकी प्रभा देख रवि शशि तारा नक्षत्र ग्रह लाजत है । तिनका दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत हैं ॥ ३ ॥ ढाई द्वीप में एक सौ साठ विदेह तिनमें तीर्थंकर बीस । आठ आठ में एक जिनवर राजें त्रिभुवन के ईश ॥ कोड़ि पूर्व सब आयु धनु पांचसौ काय अव धतार शीस । दोनों ओरी अमर ढोरते चमर चालिस बत्तीस ॥ नाथूराम जिनभक्त जहां जिन वचन मेघ सम गाजत है । तिनका दर्शन तथा स्मर्ण किये अघ भाजत है ॥

॥ सिद्धों के स्वरूप में लावनी १६ ॥
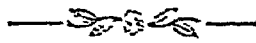
मेरा तो मिहबूब वही जो कहिलावे त्रैलोक्यपती । जिसके नाम का ध्यान धरते हैं हमेशः योगी यती ॥ टेक ॥ वर्ण गन्ध रस फर्स शब्द तम छाया रहित अचल आसन । अस्थि चर्म मल रहित नहीं पाइयें जिस के इंद्रिय मन ॥ जन्मन मरण जरा गद वर्जित बाधा रहित न जिसके तन । अनन्त दर्शन ज्ञान सुख वीर्य चतुष्टय जिसके धन ॥ निर्विकार आकार आकार पुरुष के चिन्मूर्ति नहीं खेदरती । जिसके नामका ध्यान धरते है हमेशः योगी यती १ ॥ त्रिजगत के चर अचर पदार्थ जिसके ज्ञान में झलक रहे । ज्यों दर्पणमें पड़े प्रतिबिंब त्यों तिनके ज्ञान कहे ॥ जाति अपेक्षा ब्रह्म नाम एक व्यक्ति अपेक्षा अनंत लहे । उसी रूप पर मैं हूं आशक्त मेरा मिहबूब वहे ॥ भवसागरके पार विराजत मैं खोजत हौं वही गती । जिसके नाम का ध्यान धरते है हमेशः योगीयती ॥ २ ॥ वसु गुण पूर्ण वसु रिपु चूर्ण करके आशन लिया अटल । तीन लोक के शीस पर राजत है प्यारा निश्चल ॥ क्षुधा तृषा निद्रा भय चिंता अरति आदि सब डाले दल । तीन लोक में बराबर कोई नहीं जिसके अविचल ॥ काम क्रोध मोहादि खलों का जोर न जिसपर चले रती । जिस के नामका ध्यान धरते है हमेशः योगीयती ॥ ३ ॥ चिदानन्द चिद्रूप राम परमातम आदि अनन्ते नाम । जिनवर जिसको कहे मम हृदय वही राजत है

राम ॥ जैसा रत्न शिवथल में वही मन घटमें वास करता वसु याम । निशि
दिन उसके ध्यान में लगा रखें मन नाथूराम ॥ जो ऐसे सिद्धरूप से विरक्त
भये तिन्हों की बुद्धि हर्ना । जिसके नाम का ध्यान धरते हैं हमेश: योगीश्वरी ॥४॥

॥ सिद्धों के स्वरूप में दूसरी १७ ॥

आशक हैं हम उस गुलके जिसका जग सारा नाम जपे । जिसका नाम
सुन हमेश: थर थर ठाढ़ा काल कपे ॥ टेक ॥ हरि हर ब्रह्मा आदि सभी एक
काल बली से हारे हैं । बचा न कोई जगत जन सब बहुवार पछारे हैं ॥ इं-
द्रादिक सुर आगर बढ़ के सो भी आयु गमारे हैं । सत्य अमर हैं वेही जो
भवोदधि पार पधारे हैं ॥ अजर अमर वही परम ब्रह्म है जिसका सुयश जग
माहि छपे । जिसका नाम सुन हमेश: थर थर ठाढ़ा काल कपे ॥ १ ॥ वही
ब्रह्म है रूप हमारा उसी पै आशक हमारा मन । जिसकी संगति पाय यह
अशुचि पवित्र कहाता तन ॥ ज्यों कृशानु लोहा पारस संयोग शुद्ध होता कं-
चन । त्यों यह उसके योग से पूजित बन बैठा सज्जन ॥ गुण अनन्त जिस
वह भजा ज्यों अगुरु से आकाश नपे । जिसका नाम सुन हमेश: थर थर
ठाढ़ा काल कपे ॥ २ ॥ कोटि भानु एकत्र होयँ तो तिसके तेज से लाजत है ।
ज्यों केहर का शब्द सुने लाखों जम्बुक भाजत हैं ॥ ये शरीर मुर्दा समान सब
उसीके बलसे गाजत हैं । एक उसी को अनन्ते नाम गुणों कर छाजत है ॥
यद्यपि दृष्टि ना पड़े तदपि भी तेज बलका नाहिं दबे । जिसका नाम सुन हमे-
श: थर थर ठाढ़ा काल कपे ॥ ३ ॥ ऐसे गुल के दर्शन की मैं आठ पहर
रखना उम्मेद । स्मर्ण जिसका करते ही दूर होयँ भव भव के खेद ॥ धन्य जन्म
मैं मानत अपना जब से जाना उस गुल का भेद । अपार महिमा जिसकी है
नाथूराम गाते हैं वेद ॥ विमुख रहे जो ऐसे गुल से सो ही भव आताप तपे ।
जिसका नाम सुन हमेश: थर थर ठाढ़ा काल कपे ॥ ४ ॥

॥ हितोपदेश में १८ ॥

जाना है जीना के पास तो दिल में खटका लाना होगा । क्यों भूला फिरता

चेत नहीं पीछे पछताना होगा ॥ टेक ॥ बीता काल अनन्त अपत अब चेतो थिर थाना होगा । नहीं लख चौरासीयोनि में फिर फिर दुःख पाना होगा ॥ तीन लोक में क्षेत्र न ऐसा जाहि न तें छाना होगा । अबभी ना थाको अ गत को तुझमा नादाना होगा ॥ पंच परावर्तन कर करके नाहक दीवाना होगा । क्यों भूला फिरता चेत नहीं पीछे पछताना होगा ॥ १ ॥ अव्रत योग कषाय पाय मिथ्यात्व तू गर्वाना होगा । तो भवसागर में डूब के बहु गोते खाना होगा ॥ तप चारित्र परीषह तप गहु निरवध शिवराना होगा तहां सुक्ख अनन्ते भोग नित यहां न फिर आना होगा ॥ गुरु शिक्षा पर ध्यान न देहै तो खराब खाना होगा । क्यों भूला फिरता चेत नहीं पीछे पछताना होगा ॥ २ ॥ सुत सम्पति अपने मत जाने इन्हें छोड़ जाना होगा । पल एक न ठहरे भये थिति पूरी सब विराना होगा ॥ तीर्थंकर से त्याग गये तो ऐसा कौन स्याना होगा । जगको थिर माने जहां नित काल बड़न दाना होगा ॥ अरे मूढ़ तिर्यंच नर्क दुःख क्या तू बिसराना होगा । क्यों भूला फिरता चेत नहीं पीछे पछताना होगा ॥ ३ ॥ नरगति के क्षण भंगुर सुखको तूने थिरमाना होगा । तो तुझसा मूर्ख कौन जो निज स्वभाव हाना होगा ॥ अपने हाथ कुल्हाड़ी लेकर अपना पद भाना होगा । तो कौन विवेकी ऐसेको बन लाता दाना होगा ॥ नाथूराम शिव सुख चाहो तो ब्रह्म सुयश गाना होगा क्यों भूला फिरता चेतनहीं पीछे पछताना होगा ॥ ४ ॥

॥ परमात्मा स्वरूपमें १९ ॥
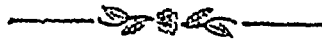
हमें है जाना वहां तलक जिस जगह हमारा जाना है । उसी की खातर वेद मथ मथकर अहो निशि छाना है ॥ टेक ॥ उसजाना का रूप अनूपम देख भानु शर्माना है । कोटि काम का रूप एकत्र न तास समाना है ॥ लोक शिखर के अग्र विराजे कहीं न आना जाना है । निश्चल आसन ज्ञान का पिंड स्वरस कर साना है ॥ जाति अपेक्षा सब सिद्धों को एकब्रह्मकर माना है । उसी की खा तर वेद गथमथ कर अहो निशिछाना है ॥ १ ॥ त्रिजगत में चर अचर पदार्थ जिसे न कोई छाना है । सर्व द्रव्य का द्रव्यगुण पर्यय युगपत जाना है ॥ तीर्थ

कर से नवें जिसे जब गृहतज संयम ठाना है। उसी रूपपर मैं हूं आशक्त वही वर आना है॥ जिसजाना की अनुकम्पा से निज स्वरूप पहिचाना है। उसी की खातर वेद मथ मथकर अहो निशि छाना है॥ २॥ उसजाना के जाने विन जी भववन में भटकाना है। आधार न पाया कहीं चिरकाल सहा दुःख नाना है॥ लख चौरासी योनि चतुर्गति में बहुवार रुलाना है। स्थान न कोई बचा जहां मरा न जन्मा माना है॥ जिसने उस जाना को जाना वही बसा शिवथाना है। उसी की खातर वेद मथ मथकर अहोनिशि छाना है॥ ३॥ उसजाना के मित्र भये तिन वसु विधि अरिको हाना है। काल वली का सर्व अभिमान क्षणक में भाना है॥ निरावाध अव्यय पद पाके वही बना शिव राना है। जांगृह कुटम्ब को छोड़ जाना का धरा निज ध्याना है॥ नाथूराम जिन भक्त सार उसी जान का गुण गाना है। उसी की खातर वेद मथ मथकर अहोनिशि छाना है॥ ४

॥ कुमतिकी लावनी २० ॥
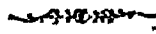
कुमति कुनारि कहै चेतन से क्यों डारत तुम पिचकारी। मैं आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनियां सारी॥ टेक॥ मोह राज हैं पिता हमारे जिन निज वशकीना संसार। लख चौरासी योनि में नाच नचावत बारम्बार॥ भव समुद्र बहु भांति रंगका तीन लोक में है विस्तार। डूबि जगजीव रहे बहु दुख कठिन है पाना पार॥ धर्म कल्पतरु कटवा मैंने बहु अघ होरी विस्तारी। मैं आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनियांसारी॥ १॥ क्रोधमान छललोभ बड़े भ्राता मेरे अति वलयेचार। मित्र जिन्हों का मदन योद्धा रति का पति काम कुमार॥ पंचेंद्री तिसकी दासी मम सखी मेरे रहती नित लार। नानाविधि के करें कौतुक मेरे संग में व्यभचार॥ इच्छा दुःख की मूल नायका सो है हमारी महतारी। मैं आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनियां सारी॥ २॥ मैं कुलटाजग में प्रसिद्ध पर अशुभ भाव मेरे भर्तार। मिथ्या दर्शन और कषाय सर्व तिनका परिवार॥ आर्त रौद्र मम जेठरु देवर अ. शुभ लेश्या तिनकी नारि। योगरुअव्रत तथा मिथ्यात्व बन्श पतिका यह सार॥ ज्ञान दर्शनावरणी मदिरा छाय रही दृग में भारी। मै आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनियां सारी॥ ३॥ नाम कर्म बहु भांति चितेरा काया कौतुक गृह कीना

आयु गोत्र ने शुभाशुभ स्थिति तहां आसन दीना ॥ नाना विधि भोगादि वस्तु का अन्तराय ठेका लीना । तिस मित्र वेदना देनको नाना विधि कार्य चीन्हा ॥ यह सब लखो विभूति हमारी मोसम कौन कहो नारी । मैं आप रंगीली मेरेरंग में डूबी दुनिया सारी ॥ ४ ॥ परिग्रह पान फूल अतरादिक नाना विधि अपभोग खरे । अदया अबीर से कालिमा के कुमकुम बहुभांति भरे ॥ कुयश कुशील कुरूपादिक के कुवचन नाना रंगभरे । पिचकारी पाप से जगत के जी हुरिहा सबीर करे ॥ काया वचि त्रिषें जगप्राणी लिप्त किये मैं अधिकारी ॥ मैं आप रंगीली मेरे रंगमें डूबी दुनिया सारी ॥ ५ ॥ मन मृदंग तंबूरा तन के मधुरशब्द मिलकर बाजें । कर ताल कुटिलता धरें संग में अपगुण घुंघरू गाजें ॥ सप्त विसन सारंगी के स्वरसर्व राग ऊपर राजें । संकेत मंजीरा युगल दृग की गति देख सभी लाजें ॥ आशा तृष्णा नृत्य करें मेरी प्रेरी गावी गारी । मैं आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनिया सारी ॥ ६ ॥ रुदन राग नाना विधिके जहां होय निरंतर अधिकाई । ममता मेवा से भरे घट पूर लहर दश दिशि छाई । ताड़न मारण आदि मिठाई भोगत दिन प्रति सरसाई । भव भ्रमण घरोंघर करत महज़ूम मूढ़ता उरछाई ॥ फजीहत फागमचैं घरघर मतिमो आज्ञा सब शिरधारी । मैं आप रंगीली मेरे रंग में डूबी दुनियां सारी ॥ ७ ॥ ऐसी फाग अनादि कालसे मैं स्वयमेव खिलाय रही । जो उदास यासे भये तिनही शिवपुर की राह लही ॥ नाथूराम कहैं वे पुरुषोत्तम जे शिवपुरकी बसे मही । निंदित संसारी सबही जो शिरधारें कुमति कही ॥ कुमति कहै मेरी विचित्र गति यह जगजीवों को प्यारी । मैं आप रंगीली मेरे रंगमें डूबी दुनियां सारी ॥ ८ ॥

॥ सुमति की लावनी २१ ॥

सुमति सुनारि कहै चेतन से छोड़ कुमति कुलटानारी । मेरे रंगराचो हर्षधर भोगो शिवसुंदरि प्यारी ॥ टेक ॥ ज्ञान भानु है पिता हमारे जो घटघट में करैं प्रकाश । उदय जिन्हों का होतेही मोह तिमर रिपु होता नाश ॥ स्वपर विवेक मित्र है जिनका जगजीवों को सुखकी राश । विषय विरोधक दास संवर जिनके नित रहता पास ॥ जीवदया धर्मकी मूल वरसोहै हमारी महतारी । मेरे रंगराचो

हर्षधर भोगो शिव सुंदरि प्यारी ॥ १ ॥ मार्दव आर्यव सत्य और संतोष चार मेरे भाई । शुभतीनों लेश्या बहिन जगके जीवों को सुखदाई ॥ जप तप संयम ब्रह्मचर्य इत्यादि कुटुम्बी अधिकाई । समशरबी है दिक्षा जिसे गहि भविजन शिव सुन्दरि पाई ॥ तुम चेतन भर्त्तार कुमति उरधार बनेहो व्यभिचारी । मेरे रंग राचो हर्षधर भोगो शिव सुंदरि प्यारी ॥ २ ॥ शुद्ध भाव वैराग्य पिताथारा प्रसिद्ध जगके अन्दर । तिसको तुम सेवो नाथ पैहो निश्चय तुमशिव मंदर ॥ पंचपरम गुरु भ्रात तुम्हारे महा शूरगुण समन्दर । तिनको तज स्वामी कुमति उरधार बने भिक्षुक दरदर ॥ धर्म शुक्ल मित्रों को चीन्हों जो अनंत बल के धारी ॥ मेरे रंग राचो हर्षधर भोगो शिव सुन्दरि प्यारी ॥ ३ ॥ सिद्ध शिला माता को नवनकर उसी के गोद विराजो तुम । दुर्मति दुःखदायन नायका उस का साथ तजभाजो तुम ॥ नाना विधिके यत्न बनाऊं जो मेरे संग राजो तुम तो निज कुटुम्ब में बराबर बैठ कभी ना लाजो तुम ॥ ऐसे शुद्ध कुल छोड़ कुमति उरधरी बड़ा अचरज भारी । मेरे रंगराचो हर्षधर भोगो शिव सुंदरि प्यारी ॥ ४ ॥ अष्ट कर्म तरु काट कटीले मूल सहित सूखे आले । तिनकी रच होली जलाओ ध्यान अग्नि से तत्काले ॥ पाप पंक जो भई इकट्ठी उसे फेकदो निकाले । अधरमकी धुल को उड़ाकर स्वच्छ करो घटगृह झाले ॥ क्षमारंग छिड़को दोनोंकर पकड़ प्रेम की पिचकारी । मेरे रंगराचो हर्षधर भोगो शिव सुन्दरि प्यारी ॥ ५ ॥ लोभ लाख के कुमश कुमकुमे अघ अबीर भरकर मारो । मिथ्यात्व पंचों के वदन पर फोड छार छार करडारो ॥ हत्यारे दुरिहों का लखो काजल कलंक से मुंहकारो । गोबर गुमान से भर प्रत्यक्ष नारकी पद धारो ॥ चित्रांपय चिल्लांय घरों घर फजीहत फाग मची भारी । मेरे रंग राचो हर्ष धर भोगो शिव सुन्दरि प्यारी ॥ ६ ॥ हिंसा होली तज देसी निज गुण गुलाब का रंग करो । आचरण अतर शुभ लगा गंधित शुद्धातम अंग करो ॥ मन मृदंग तंबूरा तनकी ढुलन डोर कस तंग करो । सुरति की सारंगी मजीरा मधुर वचन के संगकरो ॥ राग रास देखो घर बैठे नाचत फिर फिर संसारी । मेरेरंग राचो हर्ष धर भोगो शिव सुंदरि प्यारी ॥ ७ ॥ अष्ट मूल गुण मेवासे घट सुगंधित थाराजी । प्रत्यक्ष न दीखे तुम्हें यह कुमति कुटिल भूम डाराजी ॥ अबभी कुमति कुटिल कुलटा से कीजे नाथ किनाराजी । मुझ

से हित कीजे मिलाऊं शिव सुंदरि का द्वाराजी ॥ नाथूराम जिन भक्त सुमति कहै मो सम अरु को हितकारी । मेरेरंग राचो हर्ष धर भोगो शिव सुंदरि प्यारी ॥ ८ ॥

॥ कुमति चेतन का झगड़ा २२ ॥
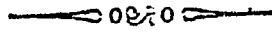
चेतन चेत कुमति कुलटा तज सुमति सुहागल उरधारी । जो शिव रमणी की सहेली जा सम और नहीं नारी ॥ टेक ॥ कुमति ज्ञान बिछुड़ा चेतन को लगी उलहना खिजकर दैन । सुमति सौति ने तुम्हें बिहकाया सुनाकर मीठे बैन ॥ पर पैहो अति कष्ट वहां तुम जब करहो जप तप दिन रैन । विषय भोग ये स्वप्ने भी नहीं मिले देखन को नैन ॥ तब करहो वच याद हमारे अभी सुमति लागत प्यारी । जो शिव रमणी की सहेली जा सम और नहीं नारी ॥ १ ॥ चेतन कही कुमति कुलटा सुन तेरे साथ अति कष्ट सहा । नाना विधि मैंने नर्क गत्यादिक में नहीं जाय कहा ॥ काल लब्धि शुभ के संयोग अब सुमति नारि का संग लहा । तेरी कृति जानी सर्व अब बहुत काल भव सिंधु बहा ॥ अब टल मुँहकर श्याम सुमति है भाम हमारी हितकारी । जो शिव रमणी की सहेली जा सम और नहीं नारी ॥ २ ॥ कुमति कहेरे मूढ़ चिदानन्द सुमति सदन तू वास करे । मुझ सी तरुणी तज मगट अन्धे सुखका तू नाश करे ॥ बना भिखारी फिरे घरोंघर पाख मास उपवास करे । सुख वर्तमान को छोड़ अज्ञान भविष्यत आश करे ॥ सुमति सरय टोनाकर तेरे प्रेमफांस गलमें डारी । जो शिव रमणी की सहेली जासम और नहीं नारी ३ ॥ अरी कुमति निर्लज्ज महा दुःख खानि सुक्ख क्या जाने तू । भोरे जीवों को ठगे ठगनी मपंच अति ठाने तू ॥ सुमति सहित हम शिवपुर बसि हैं जहां दृष्टि नहीं आनें तू । त्रिय मुक्ति मनोहर रमेंगे जिसको कहा पहिचाने तू ॥ सुमति समान नारि ना दूजी हित कारिणी जगमें भारी । जो शिव रमणी की सहेली जासम और नहीं नारी॥४॥कुमति कहै हो रुष्ट अरे सुन दुष्ट कृतघ्नी मो संयोग।पुष्ट भयातू इष्ट नाना विधिके भोगेरस भोग।वस्त्राभूषण महल मनोहर सेज सुगंधादिक उपभोग । षटरस व्यंजन नारि संयोग हरे कामादिक रोग॥अब स्वप्ने

ना मिलें भोगये सुमति क्रियाछल छलहारी । जो शिव रमणी की सहेली जासम और नहीं नारी ॥५॥ अरी कुमति अघ खानि सेज शूलारोपण अरुनर्क महल । देखे मैं तेरे अनन्ते वार धरा नारक पद खल ॥ ताड़ण मारण शीत उष्ण भोगोपभोग विजन पल पल । भोगे मैं तेरे साथ पर अब न चले कुछ तेरा छल ॥ हृदय विराजी सुमति हमारे स्वपर भेद भाषण हारी । जो शिव रमणी की सहेली जासम और नहीं नारी ॥ ६ ॥ फेर कुमति खिसिआय कहीरे मूढ़ चिदानन्द मति हीना । मै मोहराज की दुलारी सकल विश्व जिनजय कीना ॥ तासे तें छल क्रिया सुमति संग लिया कठिन तेरा जीना । अवतक अविचारी तेने क्या मोहराज को नहीं चीन्हा ॥ अनभी हठ तज छोड सुमति संग वह ठगिनी है अधिकारी । मेरे रंग राचो हर्षधर भोगो शिव सुन्दरि प्यारी ॥ ७ ॥ तब चेतन वच कहे गर्जि मैं अभी मोह का नाश करों । अभिमान न कर तू तुझे उसकी आस से निरास करों ॥ वंश मोह का जारिवरों शिवनारि मुक्ति पुर वासकरों । नित्यानन्द पूर्ण विराजों फिर न यहां की आश करों ॥ नाथूराम जिन भक्त सुमति आशक्त भये लख शुभकारी । जो शिव रमणी की सहेली जासम और नहीं नारी ॥ ८ ॥

❁ शाखी ❁

कनफटा शिरजटा भारें कोई लपेटें खेहजी । कोई भद्र शिर कोई वस्त्र भगवां पहिन ढाकें देहजी ॥ तिनको विरागी बावाजी कह पूजे जगकर नेहजी । पर भेद बावाजी का क्या है यह बड़ा संदेहजी ॥

❁ दौड़ ❁

जिन्हें शठ कहते वा बाजी । सदा वे रहते या बाजी ॥ वस्त्र धन जोड़ें हो राजी । कोई सेवें कुशील क्या जी ॥ नाथूराम कहै सुनो दे कान । भेद वा वाजी का धर ध्यान जी ॥

वा बाजी की लावनी २३ ॥

वा वाजी जो बनते हो वा वाजी जाय मुकाम करो । वा वाजी को जान

बा बाजी कैसे काम करो ॥ टेक ॥ बा बाजी का भेद न जाना नाम धराया बा बाजी। भस्म अंग में लगा शिर भद्र कराया बाबाजी ॥ बा बाजी किस को कहते क्यों नाम कहाया बाबाजी। बा बाजी के कहो लक्षण तज माया बाबाजी ॥

❋ शेर ❋

कहा बैराग होता है किसे कहते है बैरागी। कहो बैराग के लक्षण कहाली आपकी लागी ॥ किसे पंचाग्नि कहते हैं जलाई किस लिये आगी। क्षमा संतोष तप क्या है किसे कहते है कहरागी ॥ बा बाजी का भेद बता तब बाबाजी विश्राम करो। बाबाजी को जान बाबाजी कैसे कामकरो ॥ १ ॥ तुमतो ज्वाब कुछ नहीं दिया अब मैही हाल बतलाऊं सुनो। सवाल जो जो किये मैं उनका भेद सब गाऊं सुनो ॥ बाजी तर्फ को कहते हैं सो दो प्रकार दरशाऊं सुनो। जो गृहवासी उन्हें या बाजी में समझाऊं सुनो ॥

॥ शेर ॥

करें जो प्रीति तन धन से रखें पशु वस्त्र असवारी। बनावें दास औरों को प्रगट वे जीव संसारी ॥ क्रोध छल लोभ मद ममता भये वश काम के भारी। ऐसे सब जीव या बाजी सुनों धर कान नरनारी ॥ ऐसे ढोंगी साधु बने मत तिनको भूल प्रणाम करो। बाबाजी को जान बाबाजी कैसे काम करो ॥२॥ गृह कुटुम्ब धन धान्य सवारी वस्त्रादिक से नेह तजें। क्रोध मान छल लोभ ममता को त्याग प्रभु नाम भजें ॥ क्षमा शील संतोष सत्य वच हृदय धार बैराग सजें। सहैं परीषह विविध तपधार देख रिपु काम लजें ॥

॥ शेर ॥

करें वशपंच इंद्रिन को यही पंचाग्नि का तपना। धरें निज ध्यान आत्म का जगत सुख जानके सपना ॥ वनस्पति आदि जीवो पर दया परणाम रख अपना। करें रक्षासदा तिनकी हृदय प्रभु नामको जपना ॥ ऐसे साधु बा बाजी है तिनकी सेवा बसु याम करो। बा बाजी को जान बा बाजी कैसे कामकरो ॥३॥

ग्रीषम में गिरि शिखर धरें तप वरषा में तरुतल ठाड़े । नदी सरोवर सिन्धु तटधरें ध्यान जबहीं जाड़े ॥ दशो दिशा हैं वस्त्र जिन्हों के नग्नरूप आसन गाड़े । निज आतम से लगालौ रागद्वेष दोनों छाड़े ॥

❋ शेर ❋

अल्प भोजन कई दिनों करें सोभी मिले अति शुद्ध । अल्प निद्रा लहैं निशि को सदा कर्मों से करते युद्ध ॥ सुनें दुर्वचन निज निन्दा तौभी ना होंय किंचित क्रुद्ध । मित्र अरि काच कंचन सम गिनें मन वचन तनकर बुद्ध ॥ सदा अयाची नग्न पाणी पात्र आतम रामरमैं । या बाजी को जान या बाजी के से काम करो ॥ ४ ॥ मान विमल मद आठ मद्यपान त्याग चार विकथा न कहैं । और नशेभी पापके मूल जान स्वप्ने न लहैं ॥ पशुपक्षी अरि दुष्ट डंस मसकादिक की वेदना सहैं । क्रोध न आने ध्यान में मग्न सदा अनुपम रहैं ॥

शेर ।

राग संसार से छोड़ा जभी वैरागी कहलाया । तजी या बाजी की संगत तभी वह बाजी पद पाया ॥ या बाजी नाम का सबको खुलाशा भेद बतलाया । उचित यह जान के भोला ढोंग दुनियां में क्यों छाया ॥ ज्ञान शून्य होकर बहुत क्यों खानकी इच्छा आगकरो । या बाजी को जान या बाजी के से काम करो ॥ ५ ॥ वैरागी को उचित यही के तपकर क्षीण करे काया । बिना स्वाद के अल्प आहार ग्रहै संयम आया ॥ पर कलियुग में साधु बनें अरु भोजन खावें मनभाया । बहुत नचावें पुष्ट शठ इसी लिये शिरमुंडाया ॥

शेर ।

करैं संतुष्ट इंद्रिन को सदा सेवें कुशील जुकाम । सजें शृंगार सब तनके रिझावें दुष्ट परनारी भाम ॥ बनें अति भक्त लोगों में जपें माला कहें सुखराम । हृदय में राग नाजाने विषय सुखमें मगन वसुयाम ॥ निज स्वार्थ के काज कहैं लोगों से मुक्त होय राम करो । या बाजी को जान या बाजी के से काम करो ॥ ६ ॥ हराम खाऊ निलज्ज निमुँहे मिहनत का गुण नाजानें । मूड मुडावें उदर भरने को ऐसे काम करें ॥ वैरागी बन कुशील सेवें कोई ब्याह कर भागकरें । साधु कहावें तिन्हें शठ झुकझुक पांव प्रणाम करैं ॥

शेर।

बने जो नाव पत्थर की आप मझधार बोरन को। कहो कैसे उतारेंगे भवोदधि पार औरन को॥ पियें गांजा चर्स हरदम बैठारे जार चोरन को। कहो किसशस्त्र से सकते ये पाप पहाड फोरन को॥ इन्हे भजें यह फल पैहो जो दुर्गति अपना आपकरो। बाबाजी को जान बाबाजीके से काम करो॥ ७॥ या बाजी श्रारु बाबाजी दोनों के प्रगटकहे लक्षण। उचित यही के परीक्षा करो देखकर निज अक्षन॥ या बाजी वे ढोंगी साधु हैं जो अभक्ष करते भक्षण। बाबाजी वे साधु हैं जो सब जीवों के रक्षण॥

शेर।

शहद मद्य मांस विष माखन जलेबी गारि बड ऊमर। अथाना कन्द मूल भटा चलत रस तुच्छ फल कटहर॥ अजानें फलरुबहु बीजा कठूमर पीपलरुपाकर। निशा भोजन अगाला जल इन्हे तजये अभक्ष हैं नर॥ इन्हें तजें सो बाबाजी तिन की स्तुति नाथूराम करो। या बाजी को जान बाबाजी केसे कामकरो॥ ८॥

शाखी।

प्रथम नमों अरिहंत हरे जिन चारि घाति विधि। वसु विधि हर्त्ता सिद्ध नमों देयअष्ट ऋद्धि सिधि॥ नमों सूर गुणपूर नमों उवझाय सदाजी। नमों साधुगुण गाथ व्याधि ना होय कदाजी॥

दौड़।

पंच पद येही मुक्ति के मूल। जपो जैनी मतजावो भूल॥ नाम इनके से शेशहो फूल। करें निंदा तिनके शिरधूल॥ नाथूराम यही पंच नवकार। कंठधर तरो भवोदधि पारजी॥

पंच नमोकारकी २४।
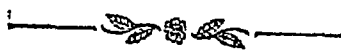
णमोकार के पांचो पद पैंतिस अक्षर जो कंठ धरें। सुरनर के सुख भोग वसु

अरि हरके भव सिंधु तरें ॥ टेक ॥ प्रथम णमो अरिहंताणं पद सप्ताक्षर का सुनों विषय। अरिहंतन को हमारा नमस्कार हो यह आशय ॥ अरिहंत तिनको कहैं जिन्हों ने चार घाति विधि कीने क्षय। जिन वाणी का किया उद्योत हरण भवि जन की भय ॥

शेर।

जिन्हों के ज्ञान में युगपत पदार्थ त्रिजगके झलके। चराचर सूक्ष्म अरु बादर रहे बाकी न गुरु हल्के ॥ भविष्य भूत औवर्ते समयज्ञाता घटी पलके। अनंतानन्त दर्शन ज्ञान अरुधारी हैं सख बलके ॥ तीन छत्रशिर फिरैं ढुरें वसुवर्ग चमरसुरभक्ति करें। सुरनर के सुख भोग वसुअरि हरके भव सिंधुतरें ॥ १ ॥ द्वितिय णमो सिद्धाणं पदके पंचाक्षर को सार कहै। सिद्धों के तैं हमारा नमस्कारहो अर्थ यहै ॥ सिद्धि चुके करकाम सिद्ध तिन नाम तिष्टि शिवधाम रहै। अष्ट कर्म को नाशकर ज्ञानादिक गुण आठलहै ॥

॥ शेर ॥

धरें दिक्षा जो तीर्थंकर जिन्हों के नामको भजकर। करें हैं नाश वसु अरि का सबल चारित्र दल सजकर ॥ नवों मैं नाथ ऐसे को सदाही अष्ट मद तजकर। सुफल मस्तक हुआ मेरा प्रभू के चरणों की रजकर। लेत सिद्धका नाम सिद्धि हों काम विघ्न सब दूर टरें ॥ २ ॥ तृतिय णमो आइरिआणंपद सप्ताक्षर का भेद सुनो। जिसके सुनते दूर होवें भव भव के खेद सुनों ॥ आचार्यन को नमस्कार हो यह जनकी उम्मेद सुनो। करो निर्जरा वन्दनकरके आस्रव का छेद सुनो ॥

॥ शेर ॥

मुन्यों में जो शिरोमणि हैं यती छत्तीस गुणधारी। करें निज शिष्य औरन को कहै चरित्र विधि सारी ॥ प्रायश्चित लेंय मुनि जिन से गुरू निजज्ञान हितकारी। हरें वसु दुष्ट कर्मों को वरें भव त्याग शिवनारी ॥ ऐसे मुनिवर सूर धरें तप भूर कर्मोंका चूर करें। सुर नरके सुख भोग वसु अरि हरके भवसिंधुतरें ॥ ३ ॥ तुर्यणमो उवज्झायाणं पद सप्ताक्षर का सार कहूं। उपाध्याय के तई

हो नमस्कार हरिवार कहूं ॥ आप पढ़ें और को पढ़ावें अध्यातम विस्तार कहूं ।
ऐसे मुनिवर कहावें उवज्झाय जगतार कहूं ॥

॥ शेर ॥

पच अरुवीस गुणधारी यती उवज्झाय सो जानो । महा भट मोह को क्षण में परिगृह त्याग के हानो ॥ सप्त भय अष्ट मद तज कर करें तप घोर सूरानो ॥ सहैं बाइस परीषह को अचल परणाम गिरि मानो । शुक्ल ध्यान धर कर्म नाश कर ऐसे मुनि शिवनारिवरें ॥ सुर नरके सुख भोग वसु अरि हरके भव सिंधुतरें ॥ ४ ॥ णमोलोए सव्वसाहूंण पंचम पदके ये नववर्ण । नमस्कार हो लोकके सब साधुन के वन्दों चर्ण ॥ साधे तप तज भोग जान भव रोग सो तारण तर्ण । अष्टाविंशति मूल गुण के धारी मुनि राखो शर्ण ॥

॥ शेर ॥

सार ये पचपरमेष्टी भक्ति इनकी सदा पाऊं । न हो क्षण एकभी अंतर जब तलक मुक्ति ना जाऊं ॥ मिले सत्संग वर्णिण का सबों के चित्त में भाऊं। जपों बसुयाम पद पांचो भावधर हर्ष से गाऊं ॥ नाथूराम शिवधामवमन को नमोकार अहि निशि उचरें । सुर नर के सुख भोग वसु अरि हरके भव सिंधु तरें ॥ ५ ॥

॥ विष्णु कुमार चरित्र ॥

॥ शाखी ॥

विष्णु कुमार चरित्र सुनो सब कान लगाई । जिन वलिका अभिमान हरा गजपुरमें जाई ॥ विक्रिया ऋद्धि प्रभाव देह लघु दीर्घ बनाई । मुनि गण का उपसर्ग हरा कीर्ति जगछाई ॥

॥ दौड़ ॥

जिसे कहते हिंदू नरनार । धरा ईश्वर वावन अवतार ॥ छलन वलिको

आये करतार। उतारन इष्ट शिष्ट का भार॥ नाथूराम कहै सुनो मई। सुनत सबसंशय मिट जाईजी॥

॥ लावनी २५॥

विष्णु कुमार चरित्र अनूपम जिन बलि का अभिमान हरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया ऋद्धि से बावन रूपधरा॥ टेक॥ मालव देश उज्जयनी नगरी श्री वर्मा तहां का भूपाल। तिसके मंत्री चार द्विज महा अहंकारी मनुव्याल॥ पहिला बलि पुन नमुचि बृहस्पति अरुप्रहलाद महा छलवाल। विहार करते तहां मुनि सात शतक आये गुण माल॥ महा मुनीश अकंपन तिनमें आचार्य सुज्ञान खरा। ऋषि रक्षा को विक्रिया ऋद्धि से बावनरूप धरा॥ १॥ अवधि ज्ञान विचार अकंपन शिष्यों को आदेश दिया। पुर वासिन से न कीजो वाद सभी सुन मौन लिया॥ परश्रुत सागर गुरु आज्ञा के प्रथमही नग्र प्रवेश किया। पारण कारण गया मुनि नगरी में आहार लिया॥ इधर नगर जन सुन मुनि आगम वन्दन का उत्साह करा। ऋषि रक्षा को विक्रिया ऋद्धि से बावनरूप धरा॥ २ उत्सव सहित नगर जन जाते देख नृपति पूछी हसकर। कहिए मंत्री कहां ये जांय महोत्सव से सजकर॥ बोला बलि वन वीच दिगम्बर मुनि पूजन जाते चलकर। तब नृप मंत्री साथ ले पूजन धाया आनंदकर॥ द्रव्यभाव युत पूजे मुनिवर बहुत सुयश मुख से उचरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया ऋद्धिसे बावनरूप धरा॥ ३॥ बारबार नृप कहै धन्य मुनि ध्यानारूढ दिगम्बर ये। जिन देही से सदा निस्नेह करैं तप दुद्धर ये॥ तृणकंचन रिपु मित्र गिने सम सहै परीषह तप कर ये। राग द्वैष अरु मोह तज वीतराग तिष्ठैवरये॥ करैं चिंतवन निज आतम का मैटन जन्मन मरण जरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया ऋद्धिसे बावन रूप धरा॥ ४॥ मौन धरें बैठे सब मुनिवर काहू न मुनिको दई अशीस। तब हंसकर मंत्री कही यहां से गृहको चलिये अविनीश॥ ये शठ धारैं ढौंग वृथा सहते है क्लेश तनवने मुनीश। भेद न जानैं कहा तप होय सत्य जानों धरनीश॥ करत भये निंदा सबमुनि की मत्री द्वैषभोगमरा। ऋषि रक्षा को विक्रिया ऋद्धि से बावन रूप धरा॥ ५॥ बहु विधि स्तुतिकर नृप लौटा

मार्ग में मुनिश्रुत सागर । आवत छेड़ा नगर से वाद किया मंत्रिन मदधर ॥ हार गये चारों द्विज मुनिसे मान गलतहां आये घर । श्रुत सागर भी निकट आचार्य के पहुंचा जाकर ॥ नमस्कार कर हालसुनाया मार्ग में गुरु को सगरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया ऋद्धि से वावन रूप धरा ॥ ६ ॥ सुनत वचन गुरु कही उपद्रव का कारण तुमने कीना । इससे अब तुम वाद स्थान धरो तप तो जीना ॥ तब श्रुतसागर गुरु आज्ञाले निशि में ध्यान तहां दीना । चारों मंत्री दुष्टता धार चले असि ले हीना ॥ श्रुत सागर को देखत बोले यही शत्रु मुनिहै हमरा । ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से वावन रूप धरा ॥ ७ ॥ बोलाबलि चारों मिल एकही वार हनो या को तलवार । वाट वरावर लगे हत्या ऐसा खल किया विचार ॥ खड्ग उभावत कीले नगर रक्षक सुरने चारों अयकार प्रभात पुरजन देख खल मंत्रिन को भाषी धिक्कार ॥ तब नृपने काला कराय मुख खरचढ़ाय दीना निकरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धि से वावन रूपधरा ८ ॥ थान भ्रष्ट हो चारोंभ्रमते हस्तनागपुर पहुंचे चल । महा पद्म नृप उभय सुतयुत चक्री राजे अति वल ॥ छोटा विष्णु कुमार पद्म रथ गुरु सुत दोनो महा विमल । नृप तपधारा विष्णु सुत सहित लई दिक्षा निर्मल ॥ करे पद्मरथ राज तहां चारों मंत्री पद जाय वरा । ऋषि रक्षा को विक्रिया रिद्धि से वावन रूप धरा ॥ ९ ॥ दुर्बल देख पद्मरथ को वलि बोला तुम्हें कहा खटका । कैसे दुर्वल भये महराज कहो कारण घटका ॥ हमसे मन्त्रपाय जगति में कौन कार्य ऐसा अटका । भेद बताओ नाथजी क्यों खाया ऐसा झटका ॥ कही भूप हरिवल नृप आज्ञा मगकरें सेवक मगरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिसे वावन रूपधरा ॥ १० ॥ नृप आज्ञा वलिपाय सेन ले लाया वांध कर हरि वलको । देख पद्मरथ कही होकर प्रसन्न मांगों वलको ॥ जो मांगो सो लेहु अभी तुम लाये पकड़ वैरी खलको । तबवलि बोला वचन भंडार रहै अटके पलको समय पाय प्रभु यांचना करहों जबजानों कार्य अवरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धि से वावन रूप धरा ॥ ११ ॥ स्वीकार वचकर नृप बोला वहुत भली लीजो तबही । तहां कुछ दिनमें अकंपन सहित ऋषी आये सवही ॥ चारों द्विज अति वैर विचारा मनि आये जाने जबही । तब वलि बोलासात दिन राज नृपति दीजे अवही ॥ हमें काम अब अति आवश्यक सात दिवस

को आयधरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिमें बावन रूप धरा ॥ १२ ॥ करके संकल्प राज्य दिया नृप आप रहा जाकर रनिवास। तब नृप बलि ने रचीनर मेध यज्ञ करने मुनि नाश ॥ हाड मांस मल रोमादिक अपवित्रपदार्थ महा कुवास। चारों ओरसे जलाये मुनि के धुआं छायो आकाश ॥ देनलगा नाना विधि दुःख मुनि को द्वेष सहित अति क्रोधभरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धि से बावन रूपधरा ॥ १३ ॥ मिथिलापुरी के वनमें मुनिवर सार चन्द्रधारें थे ध्यान। श्रवण नक्षत्र देख कंपित मुनि अवधि विचारा ज्ञान ॥ हाहामुनि गण कष्टमहै अति यों गुरु वचन कहे दुःखजान। कुछ अन्तर से सुने सो पुष्पदंत क्षुल्लक निज कान ॥ बोलागुरुने कहा किसको उपसर्ग होय किन दुष्ट करा। ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धि मे बावन रूपधरा ॥ १४ ॥ बोले गुरु आचार्य अकंपन जिनके सात शत मुनिवर संग। सहें परीषह हस्तिनापुर वन में बलिकृत निज अंग ॥ पुष्पदंत तब कही शीघ्र कुछहो उपाय कहिये निर्भंग। तब गुरु बोले तुमहो अंबर गामी खगपति वरढंग ॥ विष्णु कुमार सुभूधर गिरिपर उपजी विक्रिया रिद्धिवरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिसे बावन रूपधरा ॥ १५ ॥ वे समर्थ उपसर्ग निवारण पुष्पदन्त सुनगया तुरन्त नमस्कार कर सुनाये समाचार विधिसे गुणवन्त ॥ परखन को मुनि बांहपसारी गिरा समुद्र में भिदका संत। तब मुनि पहुंचे हस्तिनापुर में पद्मरथ के तटसन्त कही तुम्हारे चक्रवर्ति के तू उपजा घोर कर्पाशवरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिमे बावन रूपधरा ॥ १६ ॥ हाथ जोड़ तबकही पद्मरथ कार्य नहीं यह मैं कीना। वचन हारके सात दिन राज दुष्ट बलिको दीना ॥ ता खलने नर मेध रची यह हम निवास निज गृहलीना। तब मुनिवरने धरा बावन स्वरूप द्विज अति दीना ॥ पढ़त वेद ध्वनि पहुंचे बलितट मांगीभूमि डगतीन धरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिमे बावन रूपधरा ॥ १७ ॥ बोला बलि मांगो मनवांछित तुच्छ यांचना क्या करते। द्विज संतोषी कही इच्छा न अधिक मेरे बने ॥ तब दान जलमें क्रिया संकल्प द्विज करपर अपने करते। त्रय डग पृथ्वी दई संतुष्ट कहा सुख द्विज वरते ॥ तब मुनि दीर्घ शरीर बढ़ाया देखत बलि मन मूढ़ डरा। ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिसे बावन रूपधरा ॥ १८ ॥ श्रावण शुक्ल पूनों नक्षत्र शुभ श्रवण मान बलिका मारा। पहिला पदले मेरुसे

मानुष्योत्तर परधारा ॥ दूजे में आकाश नाप तीजे को बचन बलिपर हारा । अब नृप दीजे और पृथ्वी जो वचन मुख से हारा ॥ बोला बलि मो शीस धरो पद सब खल का अभिमान मरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिमे वावन रूपधरा ॥ १६धरा पांव बलिके शिर जब मुनितब विमन अतिखाईभय । हाथ जोड़ बहु करी स्तुति मुखसे भाषी जयजय ॥ नारद और सुरासुर स्तुति करन लगे आके अतिशय । हे करुणा निधि करो रक्षादीजे प्रभुदान अभय ॥ तब मुनि पांव उठाय लिया पद नवत भये द्विज सुरासुरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धिमे वावन रूप धरा ॥ २० ॥ यज्ञनाश मुनि सर्व बचाये रक्षा कीनी विष्णु कुमार । तब से प्रचलित भई रक्षा बन्धन पूनों यह सार ॥ फटे मुन्यों के कंठ धुआं से लीलतरंच न बने खखार ॥ तब पुर वासिन बना खिमयन का दीना नर्म अहार। तब से यह पावन दिन माना रक्षाबन्धन सर्व नरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धि से बावन रूप धरा ॥ २१ ॥ चारो द्विज श्रावक व्रत लीने विष्णु कुमार गये गुरुपर । फिर कर दिक्षा लई छेदोपस्थापन की विधिकर ॥ विक्रिया रिद्धि से विष्णु कुमार ने रूप धराथा अति लघुतर । ताको बहुजन कहै वावन अवतार लिया ईश्वर ॥ नाथूराम जिन भक्त सत्य यों और भांति कहते लवरा । ऋषि रक्षाको विक्रिया रिद्धि से बावन रूप धरा ॥ २२

❀ शाखी ❀

परम ब्रह्म स्वरूप तिहुं जग भूपहो जग तारजी । महिमा अनन्त गणेश शेश सुरेश लहत न पारजी ॥ मै दास तेरा चरण चेरा हरो मेरा भारजी । जिन भक्त नाथूराम को जन जान पार उतारजी ॥

॥ दौड़ ॥

प्रभू मैं शरण लिया थारा । जन्म मद मरण हरो म्हारा ॥ प्रभू मै सहा दुःख भारा । कर्मों से टरा नहीं टारा ॥ विरद सुन नाथूराम जिन भक्त । भजन थारे में हुए आशक्त जी ॥

तीर्थंकरके गुणों की लावनी २६ ।

छालिस गुण युत दोष अठारह रहित देव अर्हंत नमों । त्रिभुवन ईश्वर

जिनेश्वर परमेश्वर भगवन्त नमों ॥ टेक ॥ रहित पसेव देह मल वर्जित श्वेत रुधिर अति सुन्दर तन। प्रथम संहनन प्रथम स्थान सुगंधित तन भगवन ॥ प्रिय हित वचन अतुल बल सोहै एक सहस्र वसुतन लक्षण। ये दश अतिशय कहे जन्मत प्रभु के सुनिये भविजन॥ मति श्रुति अवधि ज्ञानयुत जन्मत सुर नरादि ध्यावन्त नमों। त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवन्त नमों ॥ १ ॥ दो सौ योजन काल पड़ना करें प्रभूजी गगनगमन। चौमुख दरशे सर्व विद्या होवें ना प्राण वधन ॥ वर ऐश्वर्य न कच नख बढ़ते नहीं लागे टमकार न-यन। तनकी छाया न पड़ती नहीं कवला आहार ग्रहण ॥ केवल ज्ञानभये दश अतिशय ये प्रभु के राजंत नमों। त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भ-गवन्त नमों ॥ २ ॥ सकल अर्थ मय मागधी भाषा जाति विरोध तजा जी-वन। षट ऋतु के फल पुष्प तिनकर शोभित अति सुन्दर वन ॥ पुष्प वृष्टि गन्धोदक वर्षा बाजे मन्द सुगन्ध पवन। जय जय होते शब्द मेदिनी विराजे ज्यों दर्पण ॥ रचें कमल सुर पद तल प्रभु के सर्व जीव हर्षन्तनमों। त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवन्त नमों ॥ ३ ॥ विमल दिशा आकाश विना कंटक अचला कीनी देवन। मगल द्रव्य आठ अरु चक्र अगाड़ी चले गँगण ये चौदह देवन कृत अतिशय सुनो चतुष्टय अबहे मन। अनन्त दर्शन ज्ञान सुख बल प्रभु के राजे शुचिपन ॥ ऐसे गुण भण्डार विराजत शिव रमणी के कन्त नमों। त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवंत नमों ॥ ४ ॥ तरु अशोक भामंडल सोहे तीन छत्र अरु सिंहासन। चमर दिव्य ध्वनि पुष्प वर्षा रु दुंदुभी नभ बाजन ॥ प्रातिहार्य ये आठ सर्व छालिस गुण जिनवर के पावन। जो भविधारें कंठ नितसों न करें भव में आवन ॥ ऐसे श्री अर्हंत जिनके गुण गान करत नित संतनमों। त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर परमेश्वर भगवन्तनमो ॥५॥ क्षुधा तृषा भय राग द्वेष विस्मय निद्रा मद अरुहावन। आरति चिंता शोक गद स्वेद खेद जरा जन्म मरण॥ मोह अठारह दोष रहित ऐसे जिनवर पद करों नवन। त्रिभुवन ज्ञाता विधाता घाति कर्म जिन डाले हन ॥ नाथूराम निश्चय अनंत गुण सुमरत अघ भाजंत नमों। त्रिभुवन ईश्वर जिनेश्वर पर मेश्वर भगवत नमों ॥ ६ ॥

॥ हितोपदेशी २७ ॥

जगमणि नर भव पाय सयाने निज सुरूप ध्याना चहिये। जबतक शिव

ना तब तलक नित निज गुण गाना चहिये ॥ टेक ॥ आर्य क्षेत्ररु श्रावक कुल लहि वृथा न हिंहकाना चहिये। जप तप संयम नेम रिन नहीं काल जाना चहिये ॥ भ्रम दीर्घ संसार न पाया पार चित लाना चहिये। पुरुषार्थ को करो क्यों कायर बन जाना चाहिये ॥ बार बार फिर मिले न अवसर यह शिक्षा माना चहिये। जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चहिये ॥ १ ॥ आप करो परणाम शुद्ध औरा के करवाना चहिये। सदा धर्म में रहो लवलीन न छिमगाना चहिये ॥ धर्म समान मित्र ना जग में यह उर में लाना चाहिये। अघ सम रिपु ना ताहि निज अग न परसाना चहिये ॥ पर दुःख देख हँसो मत मनमें क्षमा भाव ठाना चहिये। जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चाहिये ॥ २ ॥ साधर्मी लख हर्ष करो उर मलिन भाव हाना चहिये। अंग हीन को देख कर भूल न खिजवाना चहिये ॥ निज परकी पहिचान करो इस में होना दाना चहिये। इसी ज्ञान विन भूमे चिर अब निज पहिचाना चहिये ॥ दुःखी दरिद्री को दुःख देकर कभी न कलपाना चाहिये। जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चाहिये ॥ ३ ॥ गुण वृद्धों की विनय करो नित मान विटप ढाना चहिये। पर विभूति को देख मन कभी न ललचाना चहिये ॥ मिथ्या वचन कहो मत छल से सुकृत का खाना चहिये। अमक्ष भक्षण तजो चित शील में निज माना चहिये ॥ नाथूराम निज शक्ति प्रगट कर बनना शिवराना चहिये। जब तक शिव ना तब तलक नित जिन गुण गाना चहिये ॥ ४ ॥

॥ दूसरा हितोपदेश २८ ॥

प्रभु गुण गानकरो निशि बासर आलस लाना ना चहिये। करण विषय के स्वाद में चित्त पगाना ना चहिये ॥ टेक ॥ नर तन चिन्तामणि पाके यह वृथा गमाना ना चहिये। जान बूझ के गोते भवोदधि में खाना ना चहिये ॥ उत्तम श्रावक कुल पाके फिर अभक्ष पाना ना चहिये। लोक निंद्य जो नशे तिनमें चित लाना ना चहिये ॥ कुविशन त्यागलाग निज पथसे शीख भुलाना ना चहिये। करण विषय के स्वाद में चित्त पगाना ना चहिये ॥ १ ॥ हठ

कर बात कहै तासे फिर विवाद ठाना ना चहिये। अनर्थ कारण खेलमें जी बिहलाना ना चहिये॥ हित उपदेश सुनेना उससे मगज पचाना ना चहिये। अभिमानी के पास क्षण एक भी जाना ना चहिये॥ गिन लालची होय उसे निज वस्तु दिखाना ना चहिये। करण विषय के स्वाद में चित्त पगाना ना चहिये॥ २॥ धर्म द्रोह अन्याय तहां निज वास बसाना ना चहिये। दुष्ट मनुज से कभी स्नेह बढ़ाना ना चहिये॥ सुकृत कमाई करो देख परधन ललचाना ना चहिये। परमार्थ में द्रव्य खर्चत अलसाना ना चहिये॥ इष्ट वियोग अनिष्ट योग लख चित्त चलाना ना चहिये। करण विषय के स्वाद में चित्त पगाना ना चहिये॥ ३॥ विद्या विसन बिना निशि वासर काल बिताना ना चहिये। भये उपस्थित आपदा फिर घबराना ना चहिये॥ कुगुरु कुदेव कुधर्म इन्हें निज शीश नवाना ना चहिये। दुखी दरिद्री दीन को कभी सताना ना चहिये॥ नाथूराम जिन भक्त धर्म में शक्ति छिपाना ना चहिये। करण विषय के स्वाद में चित्त पगाना ना चहिये॥ ४॥

॥ सिद्धगुण २९ ॥

अलख अगोचर अविनाशी सब सिद्ध बसत शिव थान में हैं। सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भासत जिनके ज्ञान में हैं॥ टेक॥ ज्ञानावरणी नाश अनन्त ज्ञान कला भगवान में हैं। नाश दर्शनावरण सब देखें ज्ञेय जहान में हैं॥ नाश मोहनी क्षायक सम्यक युत दृढ़ निज श्रद्धाण में हैं। अन्तराय का नाश बल अनन्त युत निर्वाण में हैं॥ आयु कर्म के नाश भये रहैं अचल सिद्ध स्थान में हैं। सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भासत जिनके ज्ञान में हैं॥ १॥ नाम कर्म हनि भये अमूर्तिवन्त लीन निज ध्यान में हैं। गोत कर्म हन अगुरु लघु राजत थिर असमान में हैं॥ नाश वेदनी भये अवाधित रूप मगन सुखसान में हैं। अपार गुण के पुंज अर्हन्तन की पहिचान में हैं॥ अजर अमर अव्यय पदधारी सिद्ध सिद्ध के स्थान में हैं। सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भासत जिनके ज्ञान में हैं॥ २॥ अक्षय अभय आखलि

गुण मंडित भाषे वेद पुराण में है। देह नेह बिन अटल अविचल आकार पुमान में है॥ सर्व ज्ञेय प्रति भासत ऐसे ज्यों दर्पण दर्शन में है। ज्ञान रस्मि के पुंज ज्यों किरणें भानु विमान में है॥ गुण पर्याय सहित युग पत द्रव्य जानत आसान में है। सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भासत जिन के ज्ञान में है॥ ३॥ तीर्थंकर गुण वर्णत जिनके जो गणधर मतिमान में हैं। छद्मस्थन में न ऐसे गुण काहू पदवान में है॥ गुण अनन्त के धाम नहीं गुण ऐसे और महान में हैं। धन्य पुरुष वे जो ऐसे धारत गुण निज कान में हैं॥ नाथूराम जिन भक्त शक्ति सम रहैं लीन गुणगान में है। सर्व विश्व के ज्ञेय प्रति भासत जिन के ज्ञान में हैं॥ ४॥

॥ चन्द्रगुप्तके सोलह स्वप्न ३० ॥
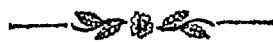
सोलह स्वप्न लखे पिछली निशि चन्द्र गुप्ति नृप अचरज कार। भद्रबाहु ने कहे तिनके फल सो वर्तते अवार॥ टेक॥ सुर द्रुम शाखा भंग लखा सो क्षत्री मुनि व्रत नहीं धरें। अस्त भानु से अंग द्वादश मुनि ना अभ्यास करें॥ सुर विमान लौटत देखे चारण सुर खग इयां ना विचरें। बारह फन के सर्प से बारह वर्ष अकाल परें॥ सछिद्र शशि से जिनमत में बहु भेद होंय ना फेर लगार। भद्रबाहु ने कहे तिनके फल सो वर्तते अवार॥ १॥ करि कारे युग लड़त लखे सो वांछित ना वर्षे जलधार। अगिया चमकत लखा जिन धर्म महात्म्य रहै लघुतर॥ सूखा सर दक्षिण दिशि तिस में आया किंचित नीर नजर। तीर्थ क्षेत्र से उठे वृष दक्षिण में रहसी कुछ घर॥ गजपर कपि आरूढ लखा कुलहीन नृपों का हो अधिकार। भद्रबाहु ने कहे तिनके फल सो वर्तते अवार॥२॥ हेम थालमें स्वान खीर खाता सो श्री गृह नीचि रहैं नृप सुत उष्ट्रारूढ सो मिथ्यामार्ग भूप वहै॥ विगशित पद्म लखा कूड़े में जैन धर्म कुल वैश्य गहै। सागर सीमा तजी सो भूपति पंथ अनीति लहै॥ रथमें बच्छे जुते सो बालकपन में धारें व्रतका भार। भद्रबाहुने कहे तिनके फल सो वर्तते अवार॥ ३॥ रत्न राशि रजसे मैली सो यती परस्पर हो झगड़ा। भूत ना

चते लखे सो कुदेव पूजन होय बड़ा॥ इतनी सुन नृप चन्द्रगुप्ति ने सुत सिंहासन दिया चढ़ा। आप दिगम्बर भया गुरु संग लगा तप करनकड़ा॥ नाथूराम जिनभक्त कहै सोलह स्वप्नेफल श्रुत अनुसार। भद्रबाहु ने कहे तिनके फल सो वर्तें भवार॥ ५॥

॥ पतीवृता सतीकी लावनी ३१॥
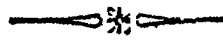
मनवचकाय लीन निजपति से रहै सुशीला वहै सती। सुरनर जिनको जजें गुण गावें वेद पुराण यती॥ टेक॥ तात भ्रात सुतसम औरों को लखे अवस्था के अनुसार। नेम धर्म में रहै लवलीन वही कुलवन्ती नार॥ पति आज्ञा अनुसार चले निजजन्म उसी का जगमें सार। विपत पड़े भी विमुख ना होय सदा सेवे भरतार॥ छाया सम ना तजे साथ हिरदय में विराजे सदा पती। सुरनर जिसको जजें गुण गावें वेद पुराण यती॥ १॥ जियत सदा पति के पद सेवे स्वप्ने भी ना करे उजर। प्रबल पुण्यसे मरे जो आप प्रथम गति जाय सुधर॥ जो कदाचित्पति मरे प्रथमतो संयम शुद्धमजा के सर। ध्यान अग्निमें दहै काया कलंक ना लावे डर॥ त्रिभुवन में हो पूजनीक वह पावे वेसक स्वर्ग गती। सुरनर जिसको जजें गुणगावें वेद पुराण यती २॥ तृण लकड़ी की पावक में ममता वश देह जलाती है। मूढ़जनों की समझ में वेही सती कहलावी हैं॥ कर अपघात मरें जलसो निश्चय दुर्गति को जाती हैं। नामवरी को जलें पहिले फिर प्राण छिपाती हैं॥ जो तपकर तन जलावतीहैं सती वेही ना फेरसती। सुरनर जिसको जजें गुणगावें वेद पुराण यती॥ ३॥ ब्राह्मी सुन्दरी सुलोचना अंजना जानकी सुनभाई। और विशल्या सुभद्रा मनोरमा आगम गाई॥ द्रोपदी चन्दना और चौबिस जिन माता सुखदाई॥ इन्हें आदि दे सती बहु जिन कीर्ति जगमें छाई। नेमीश्वर जिनवर की नारी कही सुशीला राजमती। सुरनर जिसको जजें गुणगावे वेदपुराण यती ४॥ क्वारे पनमें करें तपस्या ब्रह्मचर्य सेवें तजकाम। परम सतीसो कहावे पूजनीक जगमें जो भाम॥ पतीवृता दूसरी सती जो निज पति से राचे वसधाम॥ दो प्रकार की सती ये कहीं जगति में नाथूराम॥ जो शुभ लक्षण युत नारी पूज

नीक सो शीलवती। सुरनर जिसको जजें गुणगावें वेद पुराण यती ॥ ५ ॥

॥ मतवारों का मतवारापन हरने को लावनी ३२ ॥

निज हितका नहीं विचार जिनको मिथ्या हर्ष विषादकरें। निज निजमत में मत्तसब मतवारे बकवाद करें ॥ टेक ॥ मतवारा पन लगा जहांतहां कैसेवर्ते न्याय विवेक। पक्षपात में लीन हो वृथा मलाप करें गहिटेक ॥ कोई कहै मेरा मतसच्चा कोई कहै मेरासत एक। अपनी अपनी टरमें मगन करें बड़बड़ उदोंभेक ॥

॥ चौपाई ॥

अधम काल में विशेष ज्ञानी। रहे नहीं मगटे अभिमानी ॥
पक्ष पात से पेंचा तानी। करें सत्य मतको दे पानी ॥

॥ दोहा ॥

जहां पक्ष तहँ न्याय ना न्याय न तहां अधर्म।
जहँ अधर्म तहँ दुरित पथ दुर्गति तहां अशर्म ॥
सोविचार कुछनहीं हृदयमें पक्षपात निःस्वादकरें।
निजनिज मतमें मत्तसब मतवारे बकवादकरें ॥ १ ॥
जबसे यह कलिकाललगा अरुक्षत्रीलगे अनीतिकरन।
क्षिति रक्षाको त्याग कर दुर्विसनों में लगे परन ॥
तब से तेज मताप गया दासी सुत उपजे नीच बरन।
राजपुर से बने रजपूत लगे भागन तज रन ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

राज भार तब कौनउठावे। युद्धसुनत जिनको ज्वरआवे ॥
ऐसा अप्रबन्ध जब पावे। तब कैसे ना शत्रुसतावे ॥

॥ दोहा ॥

क्षत्री के दो धर्म हैं मथम होय रण सूर।

दूजे फिर तप शूर हो करै वही रिपु चूर ॥
सो दोनों धर्मों को छोड़ पर सेवामें अहलाद करै।
निजनिज मतमें मत्तसब मतवारे बकवाद करै ॥२॥
शूद्र म्लेच्छ आदिनीचों ने राज्य लिया अपनेकरमें।
हिन्सा मार्ग तभी से फैल गया दुनियां भरमें ॥
धर्मग्रंथ सबनष्ट भये अबजो रचना है घरघर में।
सर्व नयी है प्रथम से बड़ा भेद क्यों गोचर में ॥

॥ चौपाई ॥

जौन देश मत का नृप आया। ताने मत अपना फैलाया ॥
अन्य मतों को नष्ट कराया। यही धर्म अपना ठहराया ॥

॥ दोहा ॥

मूर्ति मन्दिर तोड़ के दीने ग्रन्थ जलाय।
अथवा ले गहरी नदी दीने सर्व डुबाय ॥
भये परस्पर मतद्वेषी नृप क्योंन भंग मर्याद करैं।
निजनिज मतमें मत्तसब मतवारे बकवाद करैं॥३॥
इसी भांति बहुवाद परस्पर नष्ट ग्रन्थ प्राचीन करे।
पक्षपात से नये मत भिन्न भिन्न फैले सगरे ॥
रुचि अनुसारकरी रचना तिनबहु प्रकार लिखग्रंथभरे।
प्रमाणता को पूर्व विद्वानों के ले नाम धरे ॥

॥ चौपाई ॥

यही हेतु प्रत्यक्ष दिखाता। कथन परस्पर मेल न खाता ॥
कोई कहै जगरचा विधाता। कोई विश्व को अनादिगाता॥

॥ दोहा ॥

कोई कहै है एकही परम ब्रह्म भगवान।
कोई कहैं अनन्त हैं पद है एक प्रधान ॥
कोई जीवको नाशवान कोई नित्य मानसम्वादकरैं।

निजनिज मतमें मत्तसब मतवारे बकवादकरें ॥ ४ ॥
कोई भवान्तर सिद्धि करें कोई जन्म एकही मानतहै ।
अनादि कोई कहै कोई नये जीव नित ठानत हैं ॥
कोई तो स्वाधीन जीव के क्रियाकर्म फल जानत है ।
परमेश्वर के कोई आधीन सर्व कृति तानत हैं ॥

॥ चौपाई ॥

इत्यादिक बहु विकल्प ठाने । एक कहै सो द्वितिय न मानें ॥
पक्ष आपनी अपनी तानें । अपनी पोषें परकी भानें ॥

॥ दोहा ॥

अपने मतमें दोष हो तापर दृष्टि न देय ।
बरन छिवामें शक्ति भर ताको पुष्ट करेय ॥
तले अन्धेरा दीपक के रखसर्व धर्म बर्बाद करें ।
निज निज मतमें मत्तसब मतवारे बकवाद करें ॥ ५ ॥
जो हठ छोड़ विचार करोतोप्रगट दृष्टि यह आताहै ।
सर्व मतों में कथन कुछ विरुद्ध पाया जाता है ॥
किसीमें बहुत असत्य किसीमें थोड़ा असत दिखाताहै ।
सत्य सर्वही किसी एक में न देखा जाता है ॥

॥ चौपाई ॥

इस से जो जो सत्य कथन है । सर्व मतों में सार मथन है ॥
सर्व ग्रहण के योग्य रतनहै । ताका ग्रहण उचित यतन है ॥

॥ दोहा ॥

असत सर्वही त्यागिये ढूंढ़ ढूंढ़ पहिचान ।
मतवारापन त्याग हो मतिवारा सुप्रधान ॥
बहुविद्या पढ़ बैल भारदी हो शठ वृथा विवादकरें ।
निजनिज मतमें मत्तसब मतवारे बकवाद करें ॥ ६ ॥
जैसे मटीले गेहुन के बहु भांति पृथक लगिरहे है ढेर ।
किसीमें थोड़ी किसीमें बहुत मिली मृत्तिकाका ना फेर ॥

तहां कोई निज देरीको वश मोह शुद्ध भापे अवदेर।
अन्य सवों को मदीला कहत तहां ना लावे देर ॥

॥ चौपाई ॥

ताहि कुधी वह पक्षपात कर। शुद्ध मान पीसे अपने घर ॥
करे रसोई बहुत हर्ष धर। मृतिका भख माने भोजन वर ॥

॥ दोहा ॥

बुद्धि मान तिहि शुद्ध कर करें शुध्द आहार।
निज पर पक्ष नहीं करें गहें वस्तु जो सार ॥
पर औगुण खल बहुत लखे निज औगुण देख न यादि करें।
निज निज मत में दक्ष सब मतवारे बकवाद करें ॥ ७ ॥
लघु दीर्घ सब राशों की मृतिका को सुधी मृतिका जानें।
निकाल ताको शेष गेंहुन को शुद्ध गेंहू मानें ॥
निज पर पक्ष कदापि करें ना चित परमार्थ में सानें।
सत्य कथन को सुधी निरपक्ष शुद्ध कर पहिचानें ॥

॥ चौपाई ॥

मिथ्या पक्ष सुधी ना करते। निज पर के दूषण को हरते ॥
जो मत पक्ष हृदय में धरते। नाथूराम अधर्मी नर ते ॥

॥ दोहा ॥

बहु विधा पढ़कर कुधी कर मत पक्ष विवाद।
समय गमावें वृथाही लहत न नर भव स्वाद ॥
हा कलिकाल कराल जीव निज हित में अधिक प्रमाद करें।
निज निज मत में दक्ष सब मतवारे बकवाद करें ॥ ८ ॥

॥ अवस्थाओं की लावनी ३३ ॥

बूड़े बूड़े भवसागर में बिन पौरुष किम पावें पार। जन्म जलधि के तरण

को तरुण अवस्था तरणीसार ॥ टेक ॥ बालकपन बावला स्वपर विज्ञान भेद कैसे जोवे। क्रीड़ा कौतुक वांछा कलह करन की जहां होवे ॥ क्रिया हीन खाने में लीन चित कभी हंसे कबहू रोवे। आतमहितके सोच विन सदा नींद गहरी सोवे ॥ पाप करत कुछ भय न हृदय में हठकर हूबे वारी धार। जन्म जलधिके तरण को तरुण अवस्था तरणीसार ॥ १ ॥ वृद्ध भये तृष्णा अति बाढ़ कभी न मन आवे संतोष। जो त्रिलोक की सम्पदा से पूरित होवे निज कोष ॥ तन अशक्त विकलेंद्रिय उद्यम हीन खिजे छण छणकर रोष। नष्ट बुद्धि हो क्रिया से भ्रष्ट भया करता सब दोष ॥ ममता वस ना उदास तनसे तजे न मन से गृह का भार। जन्म जलधि के तरण को तरुण अवस्था तरणीसार ॥ २ ॥ तरुणपने पौरुष पूरण सब क्रिया करनका चित उत्साह। प्रबल इंद्रिया ज्ञानकी वृद्धि सकेकर व्रत निर्वाह ॥ शक्ति परीषह सहन योग्य स्वाधीन ध्यान धरसके अथाह। श्रुताभ्यास से भेद विज्ञान भयें हो पूरण चाह ॥ सर्व कार्यके सिद्धि करनको शक्तिव्यक्त वर्ते तिस बार। जन्म जलधि के तरण को तरुण अवस्था तरणी सार ॥ ३ ॥ तरुण पने में सब सामग्री सुलभ आय इकठा होवें। काल लब्धि है इसीका नाम सुधी इसको जोवें ॥ ऐसा अवसर पाय कुधी दुर्व्यसन नींद में दिन खोवें। तथा कलह में लीन रहें अन्त कुगति पड़के रोवें ॥ नाथूराम निज काम सम्हारो मिले न अवसर बारम्बार। जन्म जलधि के तरण को तरुण अवस्था तरणी सार ॥ ४ ॥

॥ पुरुषार्थ की लावनी ३४ ॥
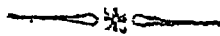
अरे मूढ़ पुरुषार्थ तजके वृथा कर्म की आसकरे। वांछित फल को आपने करसेही तो नाशकरे ॥ टेक ॥ बाल वृद्ध सबही जानेंके विन बोये ना जमता खेत। और जमे विन अन्न भूमा भी खेत ना किंचित देत ॥ उद्यमकर बोवे रखाने सो जन फल निश्चय कर लेत। ऐसा जानो सदा पुरुषार्थही सब सुख का हेत ॥

॥ चौपाई ॥

कर्म कोई देवता न जानो। निज करनीका फल पहिचानो॥
या से नित उद्यम को ठानो। बिना किये फल कर्म न जानो॥

॥ दोहा ॥

प्रथम क्रिया कर्त्ता करे ता का फल सो कर्म।
नहीं कर्म कुछ और है समझ मूढ़ तज भर्म॥
जो तू आप ही निर उद्योगी पुरुषार्थ ना खास करे।
वांछित फल को आपने करसेही तो नाश करे॥ १॥
पूर्वभव जो किया शुभाशुभ कर्म उदय सो आता है।
उसका भी फल यहां निश्चय सुख दुःख नर पाता है॥
लेकिन वह भी किया आपही स्वयं न भया दिखाताहै।
इस से निश्चय भया कर्तव्य वृथा ना जाता है॥

॥ चौपाई ॥

जैसे कोई बहु ऋणियां आवे। अति अपकार अब द्रव्य कमावे॥
सो सब द्रव्य व्याज में जावे। या से धर्मी न होत दिखावे॥

॥ दोहा ॥

लेकिन द्रव्य कमावना धन का कारण जान।
यह लख पुरुषार्थ करो तज आलस बुधिवान॥
बिना मूल तरु ही न होय तो फल को क्यों विश्वास करे।
वांछित फल को आपने कर सेही तो नाश करे॥ २॥
कोई विपर्यय कारण करके सिद्धि कार्य की चाहते है।
सिद्धि न होता कार्य तब दोष दैव का कहते है॥
अपनी भूल दृष्टि ना पड़ती वृथा खेद तन सहते हैं।
पुरुषार्थ को छोड़ भा ग्य, भरोसे रहते है॥

॥ चौपाई ॥

सोते सिंह के मुख में जाके। नहीं प्रवेश करे मृग धाके॥

अथवा वृक्ष बम्बूल लगाके । कौन आम चाखत है पाके ॥

॥ दोहा ॥

इस से यह निश्चय भया करे सो भोगे आप ।
पुण्य करे सो पुण्य फल पाप करे सो पाप ॥
करनी करे नर्क जाने की स्वर्ग में कैसे बास करे ।
वांछित फल को आपने करसेही तो नाशकरे ॥ ३ ॥
एक चकेकी गाड़ी सदा सर्वत्र न भूपर गमन करे ।
त्यों पुरुषार्थ कर्म एकले से नाहीं कार्य सरे ॥
जो नदी अनुकूल बहै तो तीरन वाला सहज तरे ।
बहै विपर्यय तो तरना कठिनता से लघु दृष्टि परे ॥

॥ चौपाई ॥

तैसे कर्म जब होय सहाई । अल्प करे बहु पड़े दिखाई ॥
जोप्रतिकूल होय दुःख दाई । कठिनता से लघु कार्य कराई ॥

॥ दोहा ॥

लेकिन करना मुख्यहै बिना किये क्या होय ।
नाथूराम यासे सुधी शिथिल होउ मत सोय ॥
जो तू आप हो निर उद्योगी पुरुषार्थ ना खास करे ।
वांछित फल को आपने करसेही तो नाशकरे ॥ ४ ॥

॥ खाता गांव के रथकी लावनी ३५ ॥

सुकृत कमाई उन्हीं की है जिन धर्म कार्य में लगाया धन । मन वच तन म प्रभावना अंग विषें नित रहैं मगन ॥ टेक ॥ ठौर २ के जैनी भाई खाता गाव चलकर आये । देख महोत्सव चित्त अपने अपने सब हर्षाये ॥ हम भी जन्म सुफल माना जब जिन छवि के दर्शन पाये । जिन प्रतिमा को देखने अन्यमती भी तहां धाये ॥ धन्य भूमि उस पुण्यक्षेत्र की जहां बसे साधर्मी

जन । मनवचतन से प्रभावना अंग विषे नित रहैं मगन ॥ १ ॥ फागुनवदि गुरुवार अष्टमी तादिन प्रभुरथमें राजे । बहु विधि स्तुति पढतनर नारि चलें आगे साजे ॥ गधूर्व गण संगीत करें ध्वनिबहु प्रकार बाजें बाजे । रथकी शोभा देखकर जिनद्रोही हियमें लाजे ॥ जयजय भविजन कहत सभा मंडप में गये नगे चरणन । मनवचतन से प्रभावना अंग विषे नितरहैं मगन ॥ २॥ शोभनीक जिनभाग सभामंडप रचना अद्भुत छाई । हंडी फानूसे तहांलंपादि। जलें निशि अधिकाई ॥ तेरहद्वीप का विधान पूजन सुनें नारिनर हर्षाई अध्यात्म चर्चाकरें भविजीव शस्त्र द्वाराभाई ॥ अष्टम दिन आहार दानदे तृप्त किये सबही के मन । मनवचतन से प्रभावना अंग विषे नितरहै मगन ३ ॥ नवम दिवस कलशाभिषेक कर फेर लौटती कही जलेब। अति उत्सव से जिनालय में पधराये श्रीजिनदेव ॥ धन्य जन्म उननर नारिनका धर्मध्यान सेवें स्वयमेव । परमार्थ में लगावें धन गुरुजन की करते सेव॥ नाथूराम जिन भक्त धर्म आशक्त रहैं वेही सज्जन । मनवचतन से प्रभावना अंग विषे नित रहै मगन ॥ ४ ॥

॥ शाखी ॥

रघुवीरसंग लघुवीरले चढ़ लंकपर ऐहैं पिया ।
यासे मिलाले जानकी नहीं पाओगे अपना किया ॥
रावण न माने टेक ठाने बोध बहुरानी दिया ।
जिनभक्त नाथूराम अति अज्ञान रावण का हिया ॥

॥ दौड़ ॥

बहुत समझावे मंदोदर । शिशयुग चरणों में धरधर ॥
टेक ना छोड़े दशकन्दर । कुमति ने किया हृदय में घर ॥
नाथूराम कहैं कर्म रेखा । टरेना यह निश्चय देखाजी ॥

॥ लावनी ३६ ॥

रावण को समझावे मंदोदर भरके नेत्रजल में दोनों । लेके जानकी

मिलो नहीं आवें वीर पलमें दोनों ॥ टेक ॥ मानोंपिया दशकन्ध महा मति मन्द भई अबकी बारी । राक्षस कुल के नाश करने को कुमति हिरदयधारी तीनखण्ड के धनी नाथ तुम हरलाये जो परनारी । कैसा छूटे लगा पिय यह कलंक कुलको भारी ॥ नारायण बलभद्र नाथ वे प्रगट भये कल में दोनों । लेके जानकी मिलो नहीं आवें वीर पलमें दोनों ॥ १ ॥ सुनवच रावण कहै नार क्यों करती है दिलमें शंका । बीच सिंधुके पड़ीहै यह अगम्य मेरी लंका ॥ भूमि गोचरी रंक करत सवशंक सुनत मेरा डंका । तीनखण्ड में युद्ध करने को कौन मुझसे बंका ॥ हमखगपति वे भूमिगोचरी भ्रमें पृथीस्थल में दोनों । लेके जानकी मिलो नहीं आवें वीर पलमें दोनों ॥ २ ॥ हाथजोड़ फिरकहै मन्दोदर वचन हमारे मान पिया । वान्दर वंशीभूपसब मिले उन्हों में आन पिया ॥ अंगांगद सुग्रीव नीलनल भामडल हनुमान पिया । भूप विराधत सेनले आये बैठे विमान पिया ॥ धनुषबाण लिये हाथहरी बलगर्जरहे बलमें दोनों । लेके जानकी मिलो नहीं आवें वीरपलमें दोनों ॥ ३ ॥ बार बार समझावे मन्दोदरि धरें शीश युग चरणन में । एकनमानें लंकपति कैसी कुमति बैठी मनमें ॥ बहुत चुकेक्रूर युद्धनाथ अबधरो ध्यान जाके बनमें । पर नारी के काज क्यों देहु प्राण अपनेरनमें ॥ नाथूराम कहै तब पछितैहो जब लड़ैं दलमें दोनों । लेके जानकी मिलो नहीं आवें वीर पलमें दोनों ॥ ४ ॥

॥ रावण मन्दोदरी सम्बाद ॥ ३७ ॥

चरण कमल नवकहै मन्दोदरि यह विनती प्रियभाम कीहै । जनकसुताको पठावो कुशल इसी में धामकी है ॥ टेक ॥ हम अबला मति हीन दीन क्या समझावें ऐसा कीजे । पंडित गणके मुकुट प्रिय तुमको क्या शिक्षादीजे ॥ जो हितकारी होय करो सो कहा मान इतना लीजे । ऐसाकीजै नाथ जिसमें न कलंक कुलकी छीजे ॥

॥ शैर ॥

भानुसम तेजस्व प्रकाशित वन्श यह राक्षस पिया ।

ताहि मत मैलाकरो गृह आनके अपने सिया ॥
परनारि रत जो नरभये तिनवास दुर्गति में किया।
धनधाम प्राणगमाय अति अघभार शिरअपने लिया॥
यासे हठ मतकरो पड़ोंपद परत्रिय जड़ बदनामकीहै।
जनकसुता को पठावो कुशल इसी में धामकी है ॥ १ ॥
दशमुख कहै त्रिखंडपती मैं भूचर नभचर मेरे दास।
तीन खण्डकी वस्तु पर प्रभुताई है मेरी खास ॥
मुझे छोड़ यह सुन्दर सीता और कौन गृहकर है वास।
मान सरोवर छोड़ करते न हन्स लघुसरकी आस ॥

॥ शेर ॥

इन्द्र से योद्धा मैंने बांधे छणक में जाय के।
सोम वरुण कुबेर यम वैश्रवण बांधे धाय के ॥
विश्व में जाहर भयो कैलाश शैल उठाय के।
कौनसा योद्धा रहा रण में लड़े जो आय के ॥
तब मन्दोदरि कहै नाथ निजमुख न बड़ाई कामकीहै।
जनकसुता को पठावो कुशल इसीमें धामकीहै ॥ २ ॥
तुमसमको बलवान नाथपर यहकार्यजगमें अतिनीच।
तुमको शोभानदे जो परत्रिय अंग लगाओ कीच ॥
नीतिवान पंडित साधर्मी कहलावो नृप गणके बीच।
अपकीर्ति से भली है सज्जन जनको जगमें मीच ॥

॥ शेर ॥

है बड़ा आश्चर्य सुर त्रियसे अधिक मैं सुन्दरी।
ता से अरुचि तुम को भई हिरदय बसी भूचर नरी ॥
कहो जैसा रूप विद्या बल करों याही घरी।
हठ छोड़िये पर नारि का विनती करे मन्दोदरी ॥
सीता भी प्रिय वरै न तुमको पतीव्रतात्रिय रामकीहै।
जनकसुता को पठावो कुशल इसी में धामकीहै ॥ ३ ॥

सुनत वचन लंकेश कहै प्रिया तुमसम और नहीं नारी ।
यह तो निश्चय मुझे पर कारण एक लगा भारी ॥
हम क्षत्री रणशूर हरी सिय यह जानी दुनियासारी ।
जो सिय भेजों राम तट तो देहैं नृप गण तारी ॥

॥ शेर ॥

जानि हैं कायर मुझे नृप गण सभी अभिमान से ।
यासे लड़ना योग्य है रघुवीर संग धनु बाण से ॥
जीति कर अपौं सिया प्यारी जो उनको प्राण से ।
यश होय मेरा विश्व में बेशक सिया के दान से ॥
नाथूराम जिन भक्त कहै त्रियशुभ न चाह संग्रामकीहै ।
जनकसुता को पठावो कुशल इसी में धामकीहै ॥ ४ ॥

॥ सीताहरण की लावनी ३८ ॥

जनकसुता का हरण श्रवण सुन को न नीर दृगमें लाया । वर्णन तिसका सुनो जैसा जिन आगम में गाया ॥ टेक ॥ दंडकवन मे धनुष बाण ले सैर करन चाले लक्ष्मण । सुगंध मारुत लगत तन भयो प्रमुद लक्ष्मणका मन ॥ वन्श भिड़े पर सूर्य हास्य असि दृष्टि पड़ा चर्चित चन्दन । लेके हाथ में लक्ष्मण ने काटा वह भिड़ा सघन ॥

॥ चौपाई ॥

खरदूषण सुत शंबुकुमार । तामें साधत था असिसार ॥
सिद्धि भयाथा ताही बार । रक्षक था असि यक्ष हजार ॥

॥ दोहा ॥

पूजा कर सुर खड्ग की धरा भिड़े पर आन ।
पुण्य योग लक्ष्मण लिया सो वर हाथ कृपाण ॥
कटाशंबु शिर साथ भिड़के सोगा लक्ष्मण लखपाया ।

वर्णन तिसका करों जैसा जिन आगम में गाया ॥ १ ॥
लेके खंग लक्ष्मण रघुवर तटगये सुनो अब कथा नयी।
शंबु पुत्र के पास ले भोजन सूर्पनखा गयी॥
कटा भिड़े को देख पुत्रकी पहिले निंदा करतिभयी।
फिर शिर देखा पुत्र का तब तिनभूमि पछार लयी॥

॥ चौपाई ॥

करति विलाप हनत अरिधाई। दृष्टिपड़े लक्ष्मण रघुराई॥
तिन्है देख सुत सुधि बिसरायी। कामातुर विट देह बनाई॥

॥ दोहा ॥

बोली रघुतट जाय के मैं अविवाही नाथ।
युगल भ्रात में एक मो कर गह करो सनाथ॥
व्यभचारिणिलख कहीराम विकतुझेपुरुषपरमन भाया।
तिसका वर्णन सुनो जैसा जिन आगम मे गाया ॥ २ ॥
झिड़कारी लक्ष्मणने जबही तब लज्जितहो आईघर।
बोली पति से नारि युत आये हैं बन में दो नर॥
शंबु पुत्र हत खंग लिया तिन फाड़े वस्त्र मेरे निजकर।
सुन खर दूषण बजाये रण बाजे अब करो समर॥

॥ चौपाई ॥

रावण के तट दूत पठाया। समर सुनत दश मुख उठ धाया॥
इत खर दूषण दल सजवाया। गर्जत घन सगनम पथ आया॥

॥ दोहा ॥

रण बाजे सुन रामने कही सुनो लघु भ्रात।
तुम सियकी रक्षा करो हम लड़ने को जात॥
तब लक्ष्मण शर चाप उठा रघु चरणोंमें मस्तक नाया।
तिसका वर्णन सुनो जैसा जिन आगम में गाया॥ ३ ॥
हे अग्रज तुम सिये रखाओ मैं लड़ने जाता रणमें।
भीरपड़े तो करोगा सिंह नाद ताही क्षण में॥

यों कह लक्ष्मण गये समर को दशकंधर आया बनमें ।
रूप सिया का देख आशक्त भया कामी मनमें ॥

॥ चौपाई ॥

विद्या से दशमुख यह जानी । जनक सुता यह रघुवर रानी ।
सिंह नाद की कह मुखवाणी । गये समर में लक्ष्मण ज्ञानी ॥

॥ दोहा ॥

तब छिपके दशमुख किया सिंहनाद भयकार ।
सुनत राम धनु बाण ले भये समर को त्यार ॥
सीताके ढिग छोड़ जटाई गये समर को रघुराया ।
तिसका बर्णन सुनो जैसा जिन आगम में गाया ॥ ४ ॥
देख अकेली सीताको दशमुख ने तुर्त विमान धरा ।
बिलपति सीता जटाई उठा युद्ध को क्रोध भरा ॥
चोंच पंजों से अंग रावण का गिद्ध ने लाल करा ।
दिया थपेड़ा दशानन उलट जटाई भूमि परा ॥

॥ चौपाई ॥

गिरा जटाई मृतक समान । गया दशानन बैठ विमान ॥
इधर राम पहुंचे रण स्थान । चलत जहां नाना विधिबाण ॥

॥ दोहा ॥

देख लक्ष्मण रामको कही प्रभू किस काम ।
सीता तज आये यहां अभी जाउ उस ठाम ॥
कही राम हे भ्रात यहां तुम सिंह नाद क्यों बजाया ।
तिसका बर्णन सुनो जैसा जिन आगम में गाया ॥ ५ ॥
लक्ष्मण कही किया छलकाहूं लौट जाउ सीताके पास ।
मै अरिगण को पलक में तुम प्रसाद से करहों नाश ॥
गये राम तो लखी न सीता तब अतिही मनमेंभे उदास ।
ढूढत बन में जटाई दृष्टि पड़ा तहां चलते स्वास ॥

॥ चौपाई ॥

नमोकार रघुवर तिहि दीना । चौथे स्वर्ग देव पद लीना ॥
अब लक्ष्मण अरिदल क्षय कीना । सिंहकरे ज्यों मृगगण क्षीणा ॥

॥ दोहा ॥

चन्द्रोदय नृप का तनुज नाम विराधित तास ।
लड़त भयो रिपु सेनसे आय लक्ष्मण पास ॥
तब लक्ष्मण ने खरदूषण को मार क्षणक में गिराया ।
तिसका वर्णन सुनो जैसा जिन आगम में गाया ॥
अरिगण हत लक्ष्मण जय पाकर रामचन्द्रकेतट आये ।
लोटत भूपर सिया विन रामचन्द्र विह्वल पाये ॥
तब लक्ष्मण ने विनय सहित धीरज बंधायके समझाये ।
खोज सिया का करेंगे कार्य चले ना घबराये ॥

॥ चौपाई ॥

भूप विराधत भी तहँ आया । राम लक्ष्मण के पद शिरनाया ॥
लक्ष्मण कही सुनो रघुराया । या नृप ने अति हेतु जनाया ॥

॥दोहा॥

भयो सहाई रण विषै नाशन को अरि पक्ष ।
या प्रसाद हम जयलही कहे वचन यों दक्ष ॥
भये परस्पर मित्र विराधत ने रघुवर को समझाया ।
तिसका वर्णन सुनो जैसा जिन आगम में गाया ॥ ७
चलिये प्रभु पाताल लंक में वहां नहीं रिपु गणकाडर ।
यहां सतैहैं शत्रु बहु रावण आदिक महा जबर ॥
खर दूषण का साला रावण ता सेवक बहु विद्याधर ।
तुम खरदूषण हवा सो वैर लेंहगे सब आकर ॥

॥ चौपाई ॥

तब यह बात सभी मन आई । लक्ष्मण सहित गये रघुराई ॥

यदपि भोग भोगो युग माई । तदपि सिया सुधि ना विसराई ॥

॥ दोहा ॥

युगसम बीते दिवस इक अति शोकित रघुवीर ।
तहां विराधत लक्ष्मण अधिक बंधावें धीर ॥
नाथूराम जिनभक्त जानकी रूप राम दृग में आया ।
तिसका वर्णन सुनो जैसा जिन आगम में गाया ॥ ८ ॥

॥ राक्षस वन्शीन की उत्पत्ति ३९ ॥

अजित नाथ के समय मेघ वाहन राक्षस लंकापाई । तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनन्द दाई ॥ टेक ॥ विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी में चक्र वालपुर नग्रबसे । नृप पूर्ण घन मेघ वाहन ताके शुभ पुत्र लसे ॥ तिलक नगर का नृपति सुलोचन सहस्र नयन सुतता तन से । कन्या उत्पल मती दोनों जन्मे सुन्दर उनसे ॥

॥ चौपाई ॥

उत्पलमती पूर्ण घनजाय । निजसुतको जांची मनलाय ॥
बचनानिमित्ती के सुनराय । दई सगर को सो हर्षाय ॥

॥ दोहा ॥

तब पूर्ण घन सैनले हना सुलोचन राय ।
सहस्र नयनले बहिनको छिपा विपिन में धाय ॥
पूरण घनने कन्या की खातिर नगरी सब ढुढवाई ।
तिसकावर्णन सुनो जो श्रवणोंको आनंददाई ॥ १ ॥
सगरचक्रपतिको इक दिन मायामय हयने हरासही ।
धरा विपिन में वहीं लख उत्पलमती भ्रातसे कही ॥
चक्रीके तटसहस्र नयनने जाय बहिन परनायवही ।
अति आदर से युगल श्रेणी की पाई आप मही ॥

॥ चौपाई ॥

सहस्रनयन चक्री बलपाके। पूर्ण वन मारा रणधाके ॥
भगा मेघ वाहन घबराके। समोशरण में पहुचा जाके ॥

॥ दोहा ॥

अजित नाथको वंदि के बैठा शरता ठान।
सहस्र नयन के भटतहां देख गये निज थान ॥
तिनके मुखसे सुन सहस्रनयनभी गया जहांजित जिनराई।
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनन्ददाई ॥ २ ॥
समोशरण में जाय भवान्तर पूछसभी निर्वैर भये।
यह सुन राक्षस इन्द्र मुदित मन भीम सुभीम भये ॥
कहा मेघ वाहन से धन्यतू अपतेरे सब दुःख गये।
श्रीजिनवर के चरण तल जो तेरे वसु अंग नये ॥

॥ चौपाई ॥

हम प्रसन्न तोपर खगराय। सुनो वचन मेरे मन लाय ॥
राक्षस द्वीप वसो तुम जाय। वहभू तुमको अति सुखदाय ॥

॥ दोहा ॥

लवणोदधि के मध्य है राक्षस द्वीप प्रधान।
लम्बा चौड़ा सातसौ योजन तास प्रमाण ॥
सबद्वीपों में द्वीप शिरोमणि जास कीर्ति जगमें छाई।
तिसका वर्णन सुनों जो श्रवणों को आनन्ददाई ॥ ३ ॥
ताके मध्य त्रिकूटाचल योजन पचास ताका विस्तार।
ऊंचा योजन कहा नवतास तले नगरी सुखकार ॥
लंका योजन तीस तहां जिन भवन बने चौरासीसार।
सपरिवार से तहां निवसो तुम अरिगण का भयटार ॥

॥ चौपाई ॥

अरु पाताल लंक शुभथान। ठौर शरण का है सुमथान ॥

छः योजन औड़ा परवान । है सुन्दर स्थान महान ॥

॥ दोहा ॥

इकशत साढ़ेतीस इक (१३१॥) डेढ़ कला विस्तार ।
यह कह निज विद्या दई अरु रत्नों का हार ॥
बसे मेघ बाहन तहँ जाके कुटुम सहित अति हर्षाई ।
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणो को आनंद दाई ॥४॥
ता राक्षसकुलमें असंख्यनृपभये सोनिजकरणीअनुसार ।
कोई शिवपुर गये किनही सुर के सुख लिये अपार ॥
कोई पापकरगये अधोगति भ्रमतभये चउगतिदुःखकार ।
मुनि सुव्रतके समय में विद्युत केश भये नृपसार ॥

॥ चौपाई ॥

तिनके पुत्र सुकेश सुजान । इन्द्रानी तिसके त्रिय जान ॥
तीन पुत्र ताके गुणवान । भये सुवीर महा बलवान ॥

॥ दोहा ॥

माली और सुमाली अरु माल्यवान तिन नाम ।
सुमाली के रत्नश्रवा पुत्र भया गुणधाम ॥
भई केकसी रानी ताके जासु कीर्ति जगमें गाई ।
तिसका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनंददाई ॥ ५ ॥
रत्नश्रवा त्रिय केकसीके सुत तीन महा बलवान भये ।
पहिला रावण द्वितिय सुत कुम्भकरण गुणधामठये ॥
तृतिय विभीषण कुलके भूषण जिनने शुभगुण सर्वलये ।
तीनों योद्धा अनूपम तिनको भूप अनेक नये ॥

॥ चौपाई ॥

सूर्य नखा तिन बहिन प्रधान । भई अनूपम रूपमहान ॥
खर दूषण परणी बुधिवान । बसेलंक पाताल सुजान ॥

॥ दोहा ॥

राक्षसद्वीप विषे बसे विद्याधर गुण धाम।
यह वर्णन संक्षेप से कहा सुनाय तमाम॥
पलभक्षक राक्षस ये नाहीं नर पवित्र जानो भाई।
तिनका वर्णन सुनो जो श्रवणों को आनंददाई॥१॥

॥ वानर वंशिन की उत्पत्ति ॥

वानर वंशिन की जैसे उत्पत्ति भई सो सुनो श्रवण। जिन शासन का जहाँ आधार न कल्पित कहीं वचन॥ टेक॥ विजयार्द्ध दक्षिण श्रेणी मेघपुर तहाँ खगपति शुभनाम। अतींद्र राजा पुत्र श्रीकंठ मनोहरा कन्या धाम॥ तहीं रत्नपुर नृप पुष्पोत्तर पद्मोत्तर नामुत अभिराम। कन्या ताके एक पद्माभा मनु सुरपति की भाम॥

॥ चौपाई ॥

मनोहरा पुष्पोत्तर राय। निज सुतको मांगी उमगाय॥
श्रीकंठ कन्या के भाय। दई न ताको मने कराय॥

दोहा।

धवल कीर्ति लंका धनी राक्षस वंशी भूप।
ब्याही ताहि मनोहरा लखि के अधिक अनूप॥
पुष्पोत्तर खग श्रवण सुनत यह बहुत उदासी मानी मन।
जिन शासन का जहाँ आधार न कल्पित कहीं वचन॥ १॥
एक दिना श्रीकंठ वन्दना सुमेरु की कर आते घर।
पद्माभा का राग सुन मोहितहो सो लीनी हर॥
सुन कुटुम्ब जन तभी पुकारे पुष्पोत्तर को दई खबर।
क्रोधित हो के तभी खग चढ़ा सेनले ता ऊपर॥

चौपाई ।

श्रीकंठ लंका को धाया । धवल कीर्ति लख अति हर्षाया ॥
सेन लिये तोलों खग आया । धवल कीर्ति सुन दूत पठाया ॥

दोहा ।

पुष्पोत्तर को तास ने समझाया बहु भाय ।
अरु पद्माभा की सखी गई कही तहां जाय ॥
तात दोष ना श्रीकंठ का वरा मैंही या को आपन ।
जिन शासन का लहौं आधार न कल्पित कहौं वचन ॥ २ ॥
लौट गयाखग कीर्ति धवल तव श्रीकंठको प्रीति दिखाय ।
निवास करने वानर द्वीप तिन्हे दीना शुभ राय ॥
श्रीकंठ तहां गये वसाया नगर किहकपुर अति सुखदाय ।
वानरदेखे तहां बहु केलि करत नाना अधिकाय ॥

चौपाई ।

तिनने कपि पाले रुचिठान । तिनसे क्रीड़ा करत महान ॥
रचे चित्र तिनके गृह स्थान । रंगरंग के लख सुखदान ॥

दोहा ।

ता पीछे बहु नृप भये तिन भी कपि के चित्र ।
मंगलीक कार्य विषं माड़े मान पवित्र ॥
वास पूज्य के समय अमर प्रभु भये भूप सो सुनो कथन ।
जिन शासन का लहौं आधार न कल्पित कहौं वचन ॥ ३ ॥
तिनकी रानी डरी भयंकर देख चित्र कपिके तवराय ।
ध्वजा मुकुट में कराये चित्र गृह के दये मिटाय ॥
तव से ये कपि केतु कहाये कपि वंशी उत्पति यों आय ।
वानर नाहीं नृपति नर विद्याधर हैं जानो भाय ॥

चौपाई ।

ता कुल में बहु नृप गुणधाम । भये कहां तक लीजे नाम ॥

फेर महोदधि नृप अभिराम। भये अनूपम ताही ठाम ॥

दोहा।

तिनके सुत प्रति चन्द्र के दोय पुत्र अति धीर।
भये प्रथम किहकन्द अरु छोटा अन्धक वीर॥
तिन्हें राज प्रतिचंद्र देय व्रतलेय गये तप करनेवन।
जिन शासनका लहो आधार न कल्पित कहौं वचन॥ ४॥
एक दिवस विजयार्द्ध पर आदित्यपुर के विद्याधर ने।
नृपति बुलाये स्वयंवर मंडप में कन्या वरने॥
नृप किहकन्द श्रीमाला ने तहां प्रेम धरके परने।
रथनूपुर का ईश लख विजय सिंह लागा जरने॥

चौपाई।

भया परस्पर युद्ध महान। अंधक ने कर गहि धनुवाण॥
विजय सिंह मारा सरतान। भगी सेन ताकी तज थान॥

दोहा।

असन वेग ताका पिता सुनत चढ़ा ले सेन
तब वानर वंशी भये सन्मुख तहां रहेन॥
असनवेग ने घेर किहकपुर कपि वंशिन से कीना रन।
जिन शासन का लहो आधार न कल्पित कहौं वचन॥ ६॥
असनवेग का सुत विद्युतवाहन किहकन्द लड़े ले वाण।
असनवेग ने तहां मारा अंधक दारुण रण ठान॥
विद्युतवाहन ने किहकन्द किया घायल मारीसिलतान।
मूर्छा खाकर भूमिपर गिरा मगर ना निकले प्राण॥

चौपाई।

तब लंकेश सुकेस उठाय। रखा किहकपुर में सो आय॥

फिर पाताल लंक में जाय । छिपे सर्वही प्राण बचाय ॥

दोहा ।

असनवेग तब सेनले लौट गया निज थान ।
फिर उदास हो भोगसे धारा तप बुधिवान ॥
सहस्रार पुत्रको राज तिन दिया किया निज वास विपन ।
जिन शासन का लहों आधार न कल्पित कहों वचन ॥ ६ ॥
सहस्रार ने लंका में निर्घात सुभट राखा थाने ।
सहस्रार के भया सुत इन्द्र नाम राखा ता ने ॥
सूर्यरज ऋक्तरज भये किहकन्द के दो सुत गुण स्याने ।
नगर. बसाके बसे किहकन्दपुर, के तब दरम्याने ॥

चौपाई ।

सूर्यरज के दो सुत भये । नाम बालि सुग्रीव सुठये ॥
ऋक्तरज के भी दो सुतभये । नल अरु नील नाम तिन दये ॥

दोहा ।

निवसे वानर द्वीप में यासे कपि कुल नाम ।
ये वन पशु वानर नहीं विद्याधर गुण धाम ॥
विद्याके बल चढ़ विमान में करें सर्वठां गॅगण गमन ।
जिन शासन का लहों आधार न कल्पित कहों वचन ॥ ७ ॥
लंका पति राक्तस सुकेश के तीन पुत्र उपजे गुणवान ।
माली सुमाली और लघु माल्यवान रूप के निधान ॥
माली ने निर्घात सुभट को मार लिया लंका निजथान ।
फिर माली को इन्द्र विद्याधर ने मारा रण म्यान ॥

चौपाई ।

सुमाली के सुत रत्नश्रवा के । भये तीन सुत अति बलवांके ॥
रावण आदि तिन्हों ने जाके । बांधा इन्द्र समर में थाके ॥

दोहा।

रथनूपुर पति इन्द्र यह विद्याधर नर नाथ।
नहीं इन्द्र सुरलोक का हारा रावण साथ॥
नाथूराम वानर वंशिन की कही कथा यह मन भावन।
जिन शासन का लहो आधार न कल्पित कहों वचन॥ ८॥

त्रिया जन्मकी निन्दा ४१।

महा निंद्य पर्याय त्रिया की महा कुटिल भावों का फल। तीनों पन दुःख भुगते भारी नहीं सुक्ख नारी को पल॥ टेक॥ जन्म सुनत शिर ध्वनत पितादिक उदास होके कुलकेजन। आशावान निरास होत सब कर्मनि यांचक अपने मन॥ नेग योग वाले सकुचा के मांगसकें ना किंचित धन। श्रवण सुनतसव उदास होते पुरा पड़ोसी भी तत्क्षण॥ गीत नृत्य वाजित्र महोत्सव वन्दभये गृहमें मंगल। तीनों पन दुःख भुगते भारी नहीं सुक्ख नारी को पल॥ १॥ खान पान रोग में निरादर मरो जियो भाग्यन अपने। नहीं कुटुम्ब वढन की आशा वेटी से काहू स्वपने॥ वालपने से सकुचाति निकसे सर्व अंग पढ़ते ढपने। वदनामी का अति दुःख भारी श्रवण सुनत लागे कपने॥ व्याह भये दुःख सास नन्द का काम करत ना पावे कल। तीनों पन दुःख भुगते भारी नहीं सुक्ख नारी को पल॥ २॥ सास ससुर पतिकी दिहसत से राति दिवस रहें कम्पित तन। सबके पीछे भोजन पावैं जैसाबचे धरमें उसक्षण॥ वेअदबी जोकरे पड़े अति मार कुटे दंडों से तन। घर वाहर के कुबचन कहते पराधीन हो सुने श्रवण॥ हो स्वतंत्र कहीं जाय न सकती राखा चाहैं कुल का जल। तीनों पन दुःख भुगतेभारी नहीं सुक्ख नारी को पल॥ ३॥ गर्भ भार का अति दारुण दुःख नौ महिने सहती नारी। मरण समान प्रसूति समय दुःख सहे वेदना अति भारी॥ वड़े कष्टसे पाले वालक क्षीण भई तन छवि सारी मरे अधूरा पूरा वालक तो दुःख का कहना क्यारी॥ बांझ होय तो कुलकी नाशक कहलाने का दुःख अतिबल। तीनों पन दुःख भुगते भारीनहीं सुक्ख

नारी को पल ॥ ४ ॥ होय कदाच्चि वाल विधवा तो जायजन्म रोवत सार। मिले कुचलनी धनी चनी तो मौत नहीं दुःख का पारा ॥ अति हीनाधि वय पति पावे तो न जाय फिर दुःख टारा। रोगी वा पति मिले नपुंसक तो महान दुःख शिरभारा ॥ मूढ़ अकर्त्ता चोर जुआरी मिले तो नित भोगे कलकल। तीनों पन दुःख भुगते भारी नहीं सुक्ख नारी को पल ॥ ५ ॥ जो भर्त्तार दरिद्री होवे तो अपार दुःख क्या कहना। भरे कष्ट से उदर फटे वस्त्रों से उघोड़ तन रहना ॥ हो क्रोधी भर्त्तार कृतघ्नी तो शोकानल में दहना। वृद्ध भये सुत वहू न माने वात रात्रि दिन दुःख सहना ॥ वात कहत ललकारत सवही रोवे नेत्र भरके भल भल। तीनों पन दुःख भुगते भारी नहीं सुक्ख नारी को पल ॥ ६ ॥ वर्णन कहँतक करों गुणी जन थोड़े मे समझो सर्वांग, महा दुःख की खान जन्मत्रिय जान पराश्रय रहती तंग ॥ दुर्व्यिसनी व्यभिचारी त्रियकी करें प्रशंसा मति के भंग। या नारी की खांय कमाई सोसराहते त्रिय का अंग ॥ पुत्री के ले दाम चहें आराम जीभके जोहैं चपल। तीनोंपन दुःख भुगते भारी नहीं सुक्ख नारी को पल ॥ ७ ॥ महानीच निर्लज्ज हरामी त्रिय का धन चहते खाने। सो नारी को काम धेनु चिंतामणि के सदृश जाने॥ जो सज्जन सत्पुरुष सुधी सो वेद शास्त्र के अनुमाने ॥ लखें निंद्य पर्याय त्रियाकी दुःख स्वरूप ताको माने ॥ नाथूराम जिन भक्त कहैं दुःखरूप त्रिया पर्याय सकल। तीनों पन दुःख भुगते भारी नहीं सुक्ख नारी को पल ॥ ८ ॥

शाखी।

माता सरस्वति दीजिये विद्या का जनको दान जी।
अज्ञान तिमर विनाश हृदय प्रकाश अनुभव भानु जी ॥
मैं शरण आया सुयश गाया धरों तेरा ध्यान जी।
जिनभक्त नाथूरामको जन जानदेनिज ज्ञान जी ॥

दौड़।

शारदा जपों नाम तेरा। मनोर्थ कर पूर्ण मेरा।

भ्रमो बहु चौरासी फेरा। ज्ञान बिन कहीं नसुख हेरा॥
मात अब कृपा दृष्टि कीजे। नाथूराम को सुबोधदीजेजी॥

जिनेन्द्र स्तुति ४२।

हे करुणा सागर त्रिजगत के हित कारी। लख निज शरणागत हरो वि· पत्ति हमारी॥ टेक॥ जो एकग्राम पति जनकी विपदा टारे। मनोवांछित जन के कार्य क्षणक में सारे॥ तो तुम त्रिभुवन के ईश्वर विश्व पुकारे। विश्वास भक्त ताही विधि उरमें धारे। फिर भूलगये क्यों ईशहमारी वारी, लख निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी॥ १॥ मैं निज दुःख वर्णनकरों कहाजगस्वामी तुमतो सब जानत घटघट अन्तर्यामी। तुमसमदर्शी सर्वज्ञ यशस्वीनामी, मम हरो अविद्या प्रगटे सुख आगामी॥ बरभक्ति तुम्हारी लगे हृदयको प्यारी, लख निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी॥ २ तुम अधमोद्धारक विरदजगत में छाया, मैं सुनासन्त शारद गणेश जोगाया। यासे आश्रय तक शरण तुम्हारे आया, सबहरो हमारा शंकट करके दाया॥ तुमको कुछनहीं अशक्य विपुल बलधारी, लख निज शरणागत हरो विपत्ति हमारी॥ ३॥ ज्यों मात पिता नहीं शिशुके दोप निहारें, पालें सप्रेम अरुसर्व आपदा टारें। तुम विश्व पिता त्योंही हम निश्चय धारें, यासे शरणागत होके विनय उचारें॥ जन· नाथूराम यह यांचत बारम्बारी, लख निज शरणागन हरोविपत्ति हमारी ४॥

शाखी।

संसार सकल असार है नहीं इसमें प्रीति लगाइये।
झूठा सकल व्यवहार है नहीं इष्ट जान ठगाइये॥
इन्द्रिय विषय विष तुल्य हैं नहीं इनसे चित्त पगाइये।
जिन भक्त नाथूराम परमात्मा के नित गुण गाइये॥

दौड़ ।

सदा भगवन्त नाम अपना । यही जानो कार्य अपना ॥
और भ्रमजाल सर्व स्वप्ना । दूरसे तिन्हें देख कपना ॥
नाथूराम नरभवफललीजे । भजननिशिदिन प्रभुका कीजेजी॥

संसार दुःखकी लावनी ४३ ।

है यह संसार असार दुःखका घररे । ये विषयभोग दुःख खान इनसे तू डररे ॥ टेक ॥ इनमें दुःख मेरु समान सुक्ख ज्योंराई, सोभी सब आकुलता मय पडत दिखाई ॥ इसकी उपमा इस भांति गुरू बतलाई । सो सुनो सकलदे कान कहूं समझाई ॥ इसके सुनने मे सुधी ध्यान अवधररे । ये विषय भोग दुःखखान इनसे तूडररे ॥ १ ॥ एक पथिक महावन माहिं फिर था भटका। तापर गजदौड़ा एकतभी वह सटका ॥ सो कुएमें तरुकी मूल पकड़ के लटका तातरुको क्रोधवश जा हाथी ने झटका ॥ तरुसे मधुमाखीं उड़ी शोर अति कररे, ये विषय भोगदुःखखान इनसे तू डररे ॥ २ ॥ पन्थी को मक्खियां चिपट गईं उड़प्यारे;जड़काटें मूसे दोय श्वेत अरुकारे, चौनाग एक अजगर कुएं में मुंह फारे ॥ देखत ऊपर को गिरे पथिक किसवारे; तहां टपकी मधु की बूंद पथिक मुखपररे ॥ ये विषय भोग दुःखखान इनसे तूडररे ॥ ३ ॥ शठस्वादत मधुका स्वाद सभी दुःख भूला, करआस लखे ऊपर को जड़से झूला ॥ तहां से खग दम्पति जाते थे गुण मूला, तिन देख दयाकर कहे वचन अनुकूला॥ निकले तो लेंय निकाल तुझे ऊपररे, ये विषय भोग दुःख खान इनसे तूडररे ॥ ४ ॥ बोला पन्थी एक बूंद शहद मुख आवे, तब चलों तुम्हारे साथ यही मनभावे॥ सो एक बूंदको देखो शठ मुंह बावे, नालखे वेदना घोर टंगा जो पावे, सोही गति संसारी जीवोंकी नररे । ये विषय भोगदुःख खान इनसे तूडररे ॥ ५ ॥ भवनन में पन्थी जीव काल गजजानो, कुलकुआ

कुटुमजन मधुमक्खी पहिचानो । चउगति चारों अहि निगोद अजगर मानो, जड़आयु रात दिन काटत मूस बखानो ॥ है विषय स्वाद मधु विन्दुमेहतरुवररे ये विषय भोग दुःख खान इनसे तूडररे ॥ ६ ॥ विद्याधर राड्गुरु शिक्षादेत दयाकर, माने तो दुःखसे छूट जाय आतम नर । संसारमें सुख है शहद बूंद से लघुतर , दुःख कूप पथिक से गुणा अनन्ता अकसर । संसार दुःख सेडरे, सुधी थरथररे । ये विषय भोग दुःखखान इनसे तूडररे ॥ ७ ॥ खल काल वली से सुर असुरादिक हारे, हरिहली चक्र पति याने क्षणमें मारे, येविषय भोग विषधरहैं दारुण कारे, इनका काटा ना जिये जगत में क्यारे, इन के त्यागी भये नाथूराम अमररे । ये विषय भोग दुःखखान इनसे तूडररे ॥८॥

उदयागतकी लावनी ४४।

जगत में महा बलवान उदय आगत है, ताके मेटन को किसी की ना ताकत है ॥ टेक ॥ जबतीव्र उदय रस आकर विधि देता है, तबएक न चले उपाय करे जेताहै, जबतीव्र पवन में लहर उदधि लेताहै, तबकौन कुशल हो जहाज को खेता है, मुंह जोरी करना इस जगह हिमाकत है, ताके मेटन को किसी की ना ताकत है ॥ १ ॥ हरिराम कर्म वश फिरे रंकवत वन में, हिम धूप पवनकी सहते वाधा तनमें, परगृह करते आहार सलज्जित मनमें, अथवा वन फल करते आहार विपनमें, यह वड़े वड़ों को सतावनी आफतहै। ताके मेटन को किसी की ना ताकत है ॥ २ ॥ रावण साधर्मी विधिवश सीता हरली, धन प्राण गमाये जग वदनामी करली, सीताभी कर्मवश विपत्ति पूरी भरली, पतिसे छूटी दो वार विरह दौंजरली, विधिउदय का धक्का वड़ों को भी लागत है । ताके मेटनको किसी की ना ताकत है ॥ ३ ॥ वाईस वरस अंजना तजी भरतारे, फिर गर्भवती सासु ने निकासी क्यारे, माता पिताभी नहीं दीनी आवन द्वारे, वनवन भटकी तिन जाया पुत्र गुफारे, को रोकसके जो कर्मों की शरारत है । ताके मेटन को किसी की ना ताकत है ॥ ४ ॥ द्रौपदी सती कहलाई पंच भरतारी, दुस्सासन ने गह चोटी ताहिनिकारी, विधि

योग पाण्डव हारे पृथ्वी सारी, फल कन्द खात तन भये वक्कला धारी, राजों को कर्म यह भिक्षा मंगवावत है, ताके मैंटन को किसी की ना ताकत है ॥ कृष्ण के जन्ममें काहू न मंगल गाये, फिर पले नीच गृह वस गोपाल कहाये, विधियोग द्वारिका जली विपिन को धाये. भीलके भेष भ्राता कर प्राणगमाये कहीं जाउ पिछाड़ी कर्म का दल जावत है, ताके मैंटन को किसीकी नाताकत है ॥ ६ ॥ श्रीपाल मदन तन कुष्ट व्याधि तिन भोगी, कर्मोदय से भये काम देव से रोगी, कुम्हरा धी व्याही माघनन्दसे योगी, जो सदारहे तप संयम में उद्योगी, कर्मोदय आगे सबकी बुधि भागतहै; ताके मैंटनको किसीकी न ताक तहै, जो सुधी कर्मके उदय से बचना चाहै. तो श्रवण धार गुरु शिक्षा ताहि निवाहै, सम्यक रत्नत्रय धर्म पंथ अवगाहै, शुचिध्यान धनंजय से विधितरुको दाहै, कहैं नाथूराम जिय यों शिव सुख पावत है, ताके मैंटन को किसी की ना ताकत है ॥ ८ ॥

उपदेशी लावनी ४५ ॥
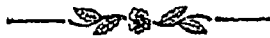
जो जगमें जन्मा उसको मरना होगा । वश काल वली के अवश्य परना होगा ॥ टेक ॥ जो सुगुरु शीख पर ध्यान नहीं लावेगा , तो नर भवरत्न समान वृथा जावेगा । जो सुकृत करे अरु अघ से पछतावेगा , तो वेशक शक्र समान विभव पावेगा , विन धर्म भवोदधि कभी न तरना होगा , वश काल वली के अवश्य परना होगा ॥ १ ॥ जो विषय भोग में तू मन लल· चावेगा , तो भव समुद्र में पड़ गोते खावेगा , स्थावर तन लहि जडवत हो- जावेगा , यह ज्ञान गिरह का सो भी खोजावेगा , को दुःख निगोद के कहै जो भरना होगा । वश कालवली के अवश्य परना होगा ॥ २ ॥ जब दल कृतान्त का तुझको आदावेगा , तव कौन सहायक जाके तट धावेगा . तव व्याकुल हो शिर धुन धुन पछतावेगा , जो करे पाप सो तव रोरो गावेगा . धन कुटुम्ब छोड पावक में जरना होगा । वश कालवली के अवश्य परना होगा ॥ ३ ॥ तू अभी पाप करते में विहसावेगा , फल भोगत में हाहा कर

मुंड बावेगा, फिर जने जने के पद पद शिर नोवेगा, फल भोगत में हा हा मुँह बावेगा, कहैं नाथूराम तब विचार करना होगा। बश कालबली के अवश्य परना होगा॥ ४॥

॥ शाखी॥

प्रथम प्रभुका नाम ले प्रारम्भ कीजै कामजी।
कविता करो पिंगल पढ़ो व्याकरण अरु बहु नामजी॥
ये पढ़ें कविता शुद्ध हो अरु टलें विघ्न तमाम जी।
यह शीख गुरु की मानिये जिन भक्त नाथूरामजी॥

॥ दौड़॥

विना पिंगल के रचो मत छन्द, यही जानो शिक्षा सुखकन्द।
गणागण जाने हो आनन्द, सर्व मिट जांय विघ्न के फन्द॥
नाथूराम कहैं गणागण भेद, जिन्हैं शीखो कवि कर उम्मेद।

पिंगल गणागण भेद ४६।
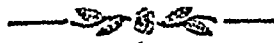
गण अगण जानकर छन्द वनाना चहिये। पिंगल विनजाने कभी न गाना चहिये॥ टेक॥ अब कवि जनके हित हेतु भेद कुछ गाता, संक्षेपाशय जो सदा काम में आता, हैं वसु प्रकार गण भेद प्रसिद्ध वताता, शुभ चौप्रकार अरु अशुभ चार समझाता, कविजनों ध्यान में इसको लाना चहिये पिंगल विन जाने कभी न गाना चहिये॥ १॥ मगण में त्रिगुरु SSS भूदेव लक्ष्मि उपजाता, नगण में त्रिलघु ।।। सुर देव आयु वढ़ाता, यगण में आदिलघु। SS उदक देव सुखदाता, भगण में आदि गुरु S।। शशि यश दित विख्याता, ये हैं चारों शुभ इन्हें लगाना चहिये। पिंगल विन जाने कभी न गाना चहिये॥ २॥ जगण के मध्य गुरु। S। रवि गद दाता जानो, रगण के मध्य लघु S। S अग्नि मृत्यु दे मानो, सगण के अन्त गुरु ।।S पवन फिरावे थानो, तगण के अंतलघु SS। व्योम अफल पहिचानो, ये हैं

चारों गण अशुभ वचाना चहिये । पिंगल विन जाने कभी न गाना चहिये ॥ ३ ॥ लघु । इक मात्रिक को कहैं सुनो कविभाई, दीर्घ ऽ दो मात्रा आदि सुनो मनलाई वृत्त की आदि में वर्ण पडे जो आई, दीर्घ जानों शिक्षागुरु ने वतलाई, कहैं नाथूराम जिन भक्त सो माना चहिये । पिंगल विन जाने कभी न गाना चहिये ॥ ४ ॥

ऋषभदेव स्तुति ४७ ।

श्री मरु देवी के लाल नाभि के नन्दन । काटो आठो विधि जाल नाभि के नन्दन ॥ टेक ॥ सुर अर्चें तुम्हें त्रिकाल नाभि के नन्दन. सौ इन्द्र नवावें भाल नाभि के नन्दन, तुम सुनियत दीनदयाल नाभि के नन्दन, स्वार्थ विन करत निहाल नाभि के नन्दन, कीजे मेरा प्रतिपाल नाभि के नन्दन । काटो आठो विधि जाल नाभि के नन्दन ॥ १ ॥ लखि तुम तनु दीप्ति विशाल नाभि के नंदन, हों कोटि काम पामाल नाभि के नंदन, त्रिभुवन का रूप कमाल नाभि के नंदन, मानो सांचे दिया ढाल नाभि के नंदन, दर्शत नाशे अघ हाल नाभि के नंदन । काटो आठो विधि जाल नाभि के नंदन ॥ २ ॥ तनु वज्र मई मय खाल नाभि के नंदन, ताये सोने सम लाल नाभि के नंदन, मल रहित देह सुकुमाल नाभि के नंदन, बाढें ना नख अरु वाल नाभि के नंदन, यह शुभ अतिशय का ख्याल नाभि के नंदन । काटो आठो विधि जाल नाभि के नंदन ॥ ३ ॥ जो तुम गुण मणि की माल नाभि के नंदन, कण्ठ धरैं प्रातःकाल नाभि के नंदन, लहि सुर नर सुख तत्काल नाभि के नंदन, पावे शिव संयम पाल नाभि के नंदन यही नाथूराम का सवाल नाभि के नंदन । काटो आठो विधि जाल नाभि के नंदन ॥ ४ ॥

पारसनाथ की स्तुति ४८ ।

तुम सुनियत तारण तरण लाल बामा के, मैं आया थारे शरण लाल

वामा के ॥ टेक ॥ तुम त्रिभुवन आनन्द करण लाल वामा के. विख्यात विरद दुःख हरण लाल वामा के, तनु श्याम सजल घनवरण लाल वामा के, लख दरश लगें अघ हरन लाल वामा के, आनन्द कर्त्ता घर घरन लाल वामा के, मैं आया थारे शरण लाल वामा के ॥ १ ॥ तुम वचसुन युग अहि करण लाल वामा के, दम्पति ना पाये जरन लाल वामा के, तुम कुमर काल तप धरन लाल वामा के, कच लुंच किये मृदु करन लाल वामा के, विहरे भू भवि उद्धरन लाल वामा के, मैं आया थारे शरण लाल वामा के ॥ २ ॥ सुन ध्वनि तुम निर अक्षरन लाल वामा के, शिवली तज्जव वहु नरन लाल वामा के, वहुतों तज वस्त्राभरण लाल वामा के, दृढधारा सम्यक चरन लाल वामा के, अनुव्रत धारे चउवरण लाल वामा के, मैं आया थारे शरण लाल वामा के ॥ ३ ॥ सम्यक्त्व लिया वहु सुरन लाल वामा के, पशुव्रती भये वस अरन लाल वामा के, वसु अरि हरि शिव त्रिय परन लाल वामा के, भये सिद्ध मिटा भय मरण लाल वामा के, नवें नाथूराम नित चरण लाल वामा के, मैं आया थारे शरण लाल वामा के ॥ ४ ॥

चौवीसों तीर्थंकरों के चिन्ह ४९।

श्रीचौवीसों जिन चिन्ह चितार नमों मैं, वहु विनय सहित आठो मदटार नमों मैं ॥ टेक ॥ श्री ऋषभ नाथ के वृषभ अजित गज गाया, संभव के हय अभिनन्दन कपि वतलाया, सुमति के कोक पद्म प्रभु पद्म सुहाया, सांथिया सुपार्श्व के लक्षण दर्शाया, चन्द्र प्रभु के शशि हिरदय धार नमोंमैं। वहु विनय सहित आठो मद टार नमोंमैं ॥ १ ॥ श्री पुष्पदन्त के मगर चिन्ह पद जानो, शीतल जिनके श्री वृक्ष चिन्ह पहिचानों, श्रेयान्स नाथ के पद गैंडा उर आनो श्री वास पूज्यपद लक्षण महिष वखानों. श्री विमल नाथ पद शूर विचार नमों मैं, वहु विनय सहित आठो मद टार नमो मैं ॥ २ ॥ सेई अनन्त जिनवर के लक्षण गाऊं, धर्म के वज्र मृग शांति चरण चितलाऊं अज कुन्थु नाथके अरह मत्स्य दरशाऊं, मल्लि के कुम्भ मुनि सुव्रत कच्छ

वताऊं, नमि नाथ पद्म दल चिन्ह चितार नमों मैं । वहु विनय सहित आठों मद टार नमों मैं ॥ ३ ॥ श्री नेमि शंख फनि पार्श्वनाथ पदराजे, हरि वीर नाथ के चरणों चिन्ह बिराजे, ऐसे जिनवर पद नवत सर्व दुःख भाजे, फिर भूल न आवे पास लखत दृग लाजे, कहै नाथूराम प्रभु जगसे तार नमों मैं । वहु विनय सहित आठो मदटार नमों मैं ॥ ४ ॥

जिन भजन का उपदेश । ५० ।
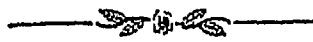
मन वचनकाय नित भजन करो जिनवर का, यह सुफल करो पर्याय पाय भव नरका ॥ टेक ॥ निवसे अनादि से नित्य निगोद मझारे, स्थावर के तनु धारे पंच प्रकारे, फिर विकलत्रय के भुगते दुःख अपारे; फिर भया असैनी पंचेंद्रिय वहुवारे. भयो पंचेंद्रिय सैनी जल थल अम्बर का । यह सुफल करो पर्याय पाय भव नरका ॥ १ ॥ इस क्रम से सुर नर नारक वहुतेरे, भवधर मिथ्यावश कीने पाप घनेरे, जिय पहुँचा इतर निगोद किये बहुफेरे, तहां एक श्वास में मरा अठारह वेरे, चिर भ्रमा किनारा मिला न भवसागर का । यह सुफल करो पर्याय पाय भवनरका ॥२॥ यों लख चौरासी जिया योनिमें भटका वहु बार उदर माता के औंधा लटका. अब सुगुरु शीख सुन करो गुणीजन खटका, यह है झूठा स्नेह जिसमें तू अटका. नहीं कोई किसी का हितू गैर अरु घरका । यह सुफल करो पर्याय पाय भव नरका ॥ ३ ॥ इस नरतनु के खातिर सुरपति से तरसें, तिसको तुम पाकर खोवत भोंदू करसें, क्षणभंगुर सुख को प्रीति लागते घरसें, तजके पुरुपार्थ वनते नारी नरसें, मत रत्न गमावो नाथूराम निज करका । यह सुफल करो पर्याय पाय भव नरका ॥ ४ ॥

जिन भजन का उपदेश । ५१ ।

प्रभु भजन करो तज विषय भोग का खटका । चिरकाल भजन विना तू त्रिभुवन में भटका ॥ टेक ॥ तूने चारों गति में किये अनन्ते फेरा, चौरासी

लाख योनि में फिरा बहु बेरा, जहां गया तहीं तुझे काल बली ने घेरा, भग वान भक्ति बिन कौन सहायक तेरा, अब कर आत्म कल्याण मोह तज खटका । चिरकाल भजन बिनतू त्रिभुवन में भटका ॥ १ ॥ सुत तात मात दारादिक सब परिवारे, तनु धन यौवन सब विनाशीक हैं प्यारे, मिथ्या इन से स्नेह लगावत क्यारे, ये हैं पत्थर की नाव डुबावन हारे, इन बार बार तोहि भव सागर में पटका, चिर काल भजन बिन तू त्रिभुवन में भटका ॥२॥ तू नर्क वेदना दुर्गति के दुःख भूला, नर पशु हो गर्भ मझार अधोमुख झूला, अब किंचित सुख को पाय फिरे तू फूला, माया मरोर से जैसे वायु बगूला, तू मानत नहीं बार बार गुरु हटका. चिर काल भजन बिन तू त्रिभवन में भटका ॥ ३ ॥ अब वीत राग का मार्ग तू ने पाया, जिन राज भजन कर करो सुफल नर काया, तू भ्रमे अकेला यहां अकेला आया, जावेगा अकेला किस की ढूंढे छाया, कहैं नाथूराम शठ क्यों ममता में अटका, चिर काल भजन बिन तू त्रिभुवन मे भटका ॥४॥

शाखी ॥

धन्य धन्य जिन देव जिन ने निज धर्म प्रकाशा ।
जिस की सुर नर पशु भवि के सुन वे की आशा ।
धरे पंच कल्याण भेद सब सुनो खुलाशा ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान क्रिया निर्वाण में वासा ।

दौड ।

भव्य ये सार पंच कल्याण, धरें जो चौवीसों भगवान ।
गर्भ जन्म तप ज्ञान रु निर्वाण. सुरासुर पूजेंतजअभिमान।
जिन के सुनने से होय वर बुद्ध, नाथू पावे शिव मगशुद्ध ।

ऋषभ देवके पंचकल्याण ।५२।
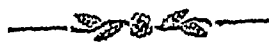
नाभि नदन तज सदन चले वन शिव रमणी को वरण, आदि प्रभु प्रगटे तब

रक्ष स्मरण जी।टेक। प्रथम गर्भ से मास द्विगुण त्रय भई रत्नों की वृष्टि, पंच दश मास अवधि की सृष्टि जी; हूंठ कोडि त्रय वार रत्न शुभ वर्षत आवे दृष्टि, क रें संशय सुन मूढ निकृष्ट जी,

दोहा।

इंद्र हुक्म से धनद ने रची अवधि जिम स्वर्ग।
नव द्वादश योजन तनी ता मध्य उत्तम दुर्ग॥
कूपवापीतडाग बहुवरण, आदि प्रभुप्रगटे तारणतरणजी॥१॥
त्रिविधि ज्ञान संयुक्त जन्म लिया मरु देवी के लाल, मुकुट हरिका कम्पा तत्काल जी, साढ़े बारह कोड़ि बाजिके तूर बजे सब हाल, सप्त डग चलनाये हरिभालजी।

दोहा।

इन्द्रचले सुरराय ले करन जन्म कल्याण।
करत शब्दसुर गगण में जयजय जय भगवान॥
नाथ तुम शोभित कीनी धरण, आदि प्रभुप्रगटे तारण तरणजी
तीन प्रदक्षण दई नगर की इन्द्र सुरों के साथ, फेर तहां गये जहां जिन नाथजी। इन्द्रानी हरि हुक्म लिआई जिनवर को निजहाथ,देख दर्शन नाया हरि माथजी॥

दोहा।

निरख रूप भगवान का तृप्त हुआ ना इन्द्र।
तब सुरेश दृग सहस्रकर देखे आदि जिनेंद्र॥
नवाया मस्तक प्रभुके चरण। आदि प्रभु प्रगटेतारण तरणजी॥२॥
प्रथम इन्द्रने लिये नाथ तब द्वितिय इन्द्र ईशान।
छत्र शिरधारा प्रभुके आनजी, सनत्कुमार महेंद्र चमर।
दोऊढोरें इन्द्र सुजान. शेषसुर करें जय जय भगवानजी॥

दोहा।

नृत्यकरें देवांगना बाजें बहु विधि तूर।

चले गाय सुर गणके बीच शब्दरहा पूर ॥
जाहि सुन आनन्द पावे करण, आदि प्रभुप्रगटे तारण तरणजी ॥४॥
गिरि सुमेरुपर पांडुक वनमें पांडुशिलापर जाय, इन्द्रने दियेनाथ
पधराय जी ॥ क्षीरोदधि से नीर हेमघट एक सहस्र पहुंचाय,
इन्द्र ने अन्हवाये जिनरायजी ॥

दोहा।

एकचार वसु जानिये योजन कलश प्रमाण।
सोढारे जिनराज पर हर्ष हृदय में ठान॥
नाथको पहिनाये आभरण, आदि प्रभु प्रगटे तारण तरणजी ॥५॥
इस विधि कलश अभिषेक इन्द्र कर अवधपुरी में आय,
नाभि नृपको सोंपे जिनरायजी ॥ वृषभ नाथ कहि नाम
इन्द्र ने स्तुति मुखसे गाय, शची युग भक्तिकरी मन ल्यायजी ॥

दोहा।

अमी अंगूठा मेलके इन्द्र नाय निज शीश।
दे आशीस निज गृह गये जयवन्तेहो ईश ॥
नाथ तुम शोभित कीनी धरण, आदि प्रभुप्रगटे तारण तरणजी ॥६॥
लाख तिरेसठ पूर्व राज्यकर तब प्रभु भये उदास,
सुनत लोकांतक सुर आपासजी ॥ स्तुति कर गृह गये
फेर सुर इन्द्र प्रभूके दास, रची शिविका प्रभुको सुख राशिजी ॥

दोहा।

तामें प्रभू आरूढ़हो गये तपोवन नाथ।
वस्त्राभरण उतारके लुंचि केश निज हाथ॥
तहां तप लागे दुर्द्धर करण, आदि प्रभु प्रगटे तारण तरणजी ॥ ७ ॥
करतप घोर जिनेश हने खल चारि घातिया कर्म,
ज्ञान तब उपजा पंचम पर्मजी ॥ समोशरण हरि रचा
प्रकाशा तहां प्रभू निजधर्म, मिटाया भविजीवों का भर्मजी ॥

दोहा ।

देश सहस्र वत्तीस मे कीना नाथ विहार ।
अष्टापदसे शिव गये हनि अघातिया चार ॥
नाथूराम जहां न जन्मन मरण, आदि प्रभु प्रगटे तारण तरणजी ८ ॥

मूर्ख जैनी की लावनी ५३ ।

जिनमत पाय विपर्यय वर्तें क्या जिनमत पाया, जिन्हें खल कुगुरुन विहंकायाजी टेक ॥ नर पर्याय पाय श्रावक कुल आर्यक्षेत्र प्रधान, मिला दुर्लभ जिन वृषशुभ आनजी । चलें चालि विपरीति कुगुरु शिक्षापर कर श्रद्धाण, सुनो वर्णन तिसका धर ध्यानजी ॥

दोहा ।

वीतराग छवि शुद्धको चन्दनादि लपटाय ।
परगृह धारी गुरुन की करत सेव अधिकाय ॥
कहैं गुरुभाग्यन से पाया, जिन्हे खल कुगुरुन विहंकाया जी ॥ १ ॥
जो कुल का आचार उसी को मानत धर्म अज्ञान, नाम को करैं पुण्यअरु दानजी ॥ लंघन को उपुवास मानते विना तत्त्व श्रद्धाण, वृथा तन कष्टसहैं अज्ञान जी ॥

दोहा ।

चर्वीकी ले वत्तियां जिन गृह मे अधिकाय ।
जालत अति उत्साह से पोषत विषय अघाय ॥
हृदय में अहंकार छाया, जिन्हें खल कुगुरुन विहंकाया जी ॥ २ ॥
हरित फूलफल कर्पूरादिक जो हैं वस्तु सचित्त । करैं जिनपूजा तिन से नित्त जी ॥ जैनी वन शठपाप पन्थ में अधिक लगाते चित्त, चाहते तिससे आत्म हित्त जी ॥

दोहा।

फूल माल जिन नामकी करते शठ नीलाम।
नामवरी को उमंग के वढवढ वोलत दाम॥
अँधेरा विन विवेक छाया, जिन्हे खल कुगुरुन विहकायाजी॥ ३॥
वीच सभा में कोई आप पगड़ी लेय उतार, फेर वेचे तिसको उच्चारजी तहां कोई वहु दाम वढ़ाकर लेय आप शिरधार॥ विना आज्ञा तुम्हरी उस वारजी॥

दोहा।

तिसपर कैसे करेंगे आप तहां परणाम।
द्वेष रूप या हर्ष मय सोच कहो इस ठाम॥
न्याय का अवसर यह आया, जिन्हें खल कुगुरुन विंहकाया जी ४॥
ना देवाला कढा प्रभू का जिसको वेचत माल, नहीं कुछहैं जिनेन्द्र कंगाल जी, धर्म करो भण्डार में सो धन देउ हाथ से घाल, पकड़ता कौन हाथ तिस कालजी॥

दोहा।

तीन लोक के नाथ की करत प्रतिष्ठा हीन।
कौन ग्रन्थ आधार से हमें वतावो चीन॥
सुनन कोमो मन ललचाया, जिन्हें खल कुगुरुन विंहकाया जी॥५॥
अभी तो वेचत माल फेर वेचिहैं सिंहासन छत्र, वुलाके वहु जैनी लिख पत्रजी, अभिमानी शठ धनी नाम को खरीदि कर हैं तत्र, वहुत धन होवेगा एकत्र जी।

दोहा।

वड़ा फलाष्टक सभा में तिन्हें सुनय हैं टेर।
तव क्षण में वहु द्रव्य का होजावेगा ढेर॥
भला रुजिगार नजर आया, जिन्हें खल कुगुरुन विंहकाया॥ ६॥
निर्लोभी क्षत्री कुल में भये तीर्थंकर अवतार, तजा तिन सर्व परिग्रह भारजी, राज लक्ष्मी तृण सम तजली वीतरागता धार। तजा सव संसारिक व्यवहारजी॥

दोहा ।

सो अब लोभी वनिक के घर आया जिन धर्म ।
यासे धन तृष्णा वढी क्यों न करे लघु कर्म ॥
कुसंगति का यह फल पाया, जिन्हें खल कुगुरुन विहकाया जी ॥७॥
हा कलिकाल कराल जिसमें नाना विधि की विपरीत, करी रचना भेपिन तज नीति जी, ताही को बहुतक पंडित शठ पुष्ट करें कर प्रीति, न देखें जिन-सासन की रीति जी ॥

दोहा ।

जिन वच तिनवच की कुधी करें नहीं पहिचान ।
हठ ग्राही हो पक्ष को तानत कर अभिमान ॥
न छोडत कुल क्रम की माया, जिन्हें खल कुगुरुन विहकाया जी ८ ॥
यह विचार कुछ नहीं हृदय में क्या जिन धर्म स्वरूप, गिरत क्यों हठकर के भवकूप जी, रची उपल की नाव कुगुरु ने डोवन को चिद्रूप, येही अवतार कलंकी भूपजी ॥

दोहा ।

वीतराग के धर्म की मुख्य यही पहिचान ।
लोभअमृत वच अरुनहीं जहांहृदय अभिमान ॥
ताहि ना लखें तिमर छाया, जिन्हें खल कुगुरुन विहकाया जी ॥ ९ ॥
केवल ज्ञान छवी जिनकी तिसपर पंचामृत धार, देत कहैं उत्सव जन्म अवारजी, नामनरी को जिन गृह कर जिन प्रतिमा तहँ विस्तार, धरें तहां क्षेत्र पाल ला द्वारजी ॥

दोहा ।

तेल सिन्दूर चढ़ाय के करें अंग सब लाल ।
दरवाजे में घुसतही तिन को नावत भाल ॥
पीछे जिन दर्शन दर्शाया, जिन्हें खल कुगुरुन विहकाया जी ॥ १० ॥
रण शृंगार कथा सुनके अति अंग २ हर्षाय, तत्त्व कथनी सुन अति अ-

लगांय जी, कोई कलह मचावैं कोई सोवैं भोंके सांथ, कोई हो उदास घर उठ जांयजी ॥

दोहा।

अन्यमती सदृश क्रिया करते यहां अनेक।
तर्पणादि कहां तक कहों हृदय न रंच विवेक ॥
पन्थ भेषिन का मन भाया, जिन्हें खल कुगुरून विहकाया जी ॥११॥
धन बल आयु अरोग्य भोग इनके मिलने की आस, तथा चाहैं वैरी का नाशजी, इन फलमाहिं लुभाने अतिही नाहक सहते त्रास, करैं वेला तेला उपवास जी ॥

दोहा।

देव धर्म गुरु परखिये नाथूराम जिन भक्त।
तज विकल्प निज रूप में हूजे अब आशक्त ॥
समय पंचम जगमें छाया, जिन्हें खल कुगुरून विहकाया जी ॥ १२ ॥

कुटिल ढोंगी श्रावक की लावनी ॥ ५४ ॥
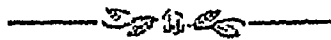
नेपन क्रिया युयुक्त सरावक को तुमसा गुण मूल। कि जिनके वचन वज्र के शूलजी ॥ टेक ॥ क्षायक सम्यक भयो तुम्हारे उभय पक्ष क्षयकार वंश भेदन कुठार वर धारजी, पर निंदा में करत न शंका निश्शांकित गुण धार, प्रशंसा करते निज दरबारजी, धन्य प्रशंसा योग्य सरावक वर्षत मुखसे फूल। कि जिनके वचन वज्रके शूलजी ॥ १ ॥ सुकृत कांक्षा तजी सर्व एक वर्तंति पर अपकार, श्रेष्ठ यह निःकांक्षित गुणधारजी, निर्विचिकित्सा गुणभारी पर सुयश न सकत सहार. देखपर विभव होत हिय क्षारजी, पंडितों में शिर मौर कल्पतरु कलिके श्रेष्ठ बंबूल, कि जिनके वचन वज्रके शूलजी ॥२॥ परगुण ढकन लखन पर अपगुण यह गुण दृष्टि अमूढ, कहत यही उपगूहण मुख गुण गूढजी, ऐसी शिक्षा देत जाय. जिय भवसागर में बूढ यही गुण स्थिती करण अति रूढजी, भ्रात पुत्र का चित्त फाड़त यह वात्सल्य गुणमूल। कि जिनके

वचन वज्रके शल जी ॥ ३ ॥ आप अधिक आरम्भ करत औरां को शिक्षा देत, प्रभावना अंग अधिक अघ हेतजी, वर्णन कहँतक करों इसी विधि सर्व गुणों के खेत, कौतुकी पर दुःख देते भेतजी, देख सुयश पर जलत सदा ज्यों भटिओर की चूल। कि जिनके वचन वज्र के शूल जी ॥ ४ ॥ चिटीकी करते दया ऊंट को साबित जात निगल, दया के भवनं ऐसे निश्चलजी, वनस्पती की रक्षा को वहु त्यागे मूलरु फल. ठगें पंचेंद्रिन को कर छल जी, गल्लादिक में हने अनन्ते निस दिन त्रस स्थूल। कि जिनके वचन वज्र के शूल जी ॥ ५ ॥ मिथ्या यश के लोभी इससे नित करत प्रशंसा नित्त, चापलोसियों से राखत हित्तजी, सत्य कहै सो लगे जहरसा जले देखकर चित्त, बात सुन ताकी कोपे पित्तजी, ऐसी प्रकृति सज्जन कर निंदित डालो इसपर धूल। कि जिनके वचन वज्र के शूल जी ॥ ६ ॥ एक विनय मैं करों आपसे आप विवेकी महा, क्षमा कीजियो मैंने जो कहाजी, कवितांई की रीति झूठ दुर्वचन जाय ना सहा, दिये विन ज्वाब जाय ना रहाजी, मत मनमें लज्जित होके अपघात कीजियो भूल। कि जिनके वचन वज्र के शूलजी ॥ ७ ॥ पर निंदा अरु आप वड़ाई करें सो हैं नरनीच, वनें अति शुद्ध लगा मुख कीच जी, वेशर्मी से नहीं लजाते चार जनों के वीच, पक्ष अपनी की करते खींच जी, नाथूराम जिन भक्त करें वहु कहँ तक वर्णन थूल। कि जिनके वचन वज्र के शूलजी ॥ ८ ॥

जिनेंद्र स्तुति ५५।

—⁕—
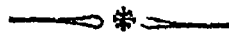
न देखा प्रभु तुमसा सानीजी वर निज गुण का दानी ॥टेक॥ स्वार्थीदेव नजर आते, नाशिव मग वतलाते। आपही जो गोते खाते, तिनसे को सुख पाते, नहीं तुमसा केवल ज्ञानीजी, वरनिज गुण का दानी ॥ १ ॥ निकट संसार मेरेआया जो तुम दर्शन पाया। लखत मुख उर आनन्द छाया, सो जाय नहीं गाया, दरश थारा शिव सुख खानीजी, वर निजगुणका दानीजी वहुत प्राणी तुमने तारे जोथे दुःखिया भारे। गहे मैं चरण कमलथारे, सव

हरो दुःख म्हारे, तुमसा को जो भवथिति ज्ञानीजी वरनिज गुणकादानी ॥ सुयश इतना प्रभुजी लीजे, वसुकर्म रहित कीजे। नाथूराम को सुबोध दीजे जासे भव थिति छीजे, जपें तुम नाम भव्य प्राणीजी वरनिज गुणकादानी ४॥

जिनेंद्र स्तुति ५६।

प्रभुजी तुम त्रिभुवन त्राता जी. दीजे जनको साता॥ टेक॥ भ्रमों मैं भव वन में भारी बहु भांति देह धारी। कभी नर कभी भया नारी क्या कहूं विपति सारी, मिले अब तुम शिव सुख दाताजी, दीजे जनको साता॥ १॥ सुयश तुम गणपति से गावें, शक्रादिक शिरनावें, चरण आश्रय जो जन आवें सो बेशक शिव पावें। तुम्हीं हो हितू पिता भ्राताजी दीजे जनकोसाता२ लखा मैं दर्शन सुखदाई,निधिआज अतुल पाई, खुशी जो मोचितपर छाई सो जाय नहीं गाई। शीश तुम चरणों में नाता जी, दीजे जनको साता॥ ३॥ जपें जो नाम प्रभू थारा पावे शिव सुख भारा, नशे दुःख जन्मादिक सारा उतरें भवजलपारा। नाथूराम तुम पदको ध्याता जी. दीजिजनको साता॥४॥

भव्य प्रशंसा ५७।

सुगुरु शिक्षा जिनने मानी जी, भये धन्य वेहीप्राणी॥ टेक॥ विषय विषवन जिनने चीन्हे तजकाम भोग दीने, धर्मवृत जपतप उरलीने निजआत्म रसभीने। सुनी मन रुचिधर जिनवाणी जी, भये धन्य वेही प्राणी॥ १॥ मनुज भव लहि सुकृत कीना, विधि चार दान दीना, कर्मवसुको तपकरछीना शिवपुर वासा लीना। वरीजिन जाय मुक्ति रानी जी,भये धन्य वेहीप्राणी.२ मिटा अब त्रिजगत का फेरा तिष्टे अविचल डेरा, हरादुःख जन्ममरण केरा तिनको प्रणाम मेरा। अष्ट विधि की जिन थिति भानी जी, भये धन्य वेही प्राणी॥ ३॥ कबे वह दिन ऐसा पाऊं. वसु विधि तरुको ढाऊं। पास उस

शिव त्रिय के जाऊं. ना फेर यहां आऊं, नाथूराम भक्ति हिये आनी जी भये धन्य वेहीं प्राणी ॥ ४ ॥

शाखी।

चिंतवत जिन नाम फल उपवास होतहजार जी।
फल गमन करतेदरश कोहीं लाखप्रोषध सारजी।
होकोड़ा कोड़ि अनन्त फलप्रोषध दरशतेवारजी,
करदर्शनाथूराम ऐसे नाथ का दरबारजी ॥

दौड़।

करो दर्शन जैनी निशि दिन, गृहमत भोजन दर्शन विन।
सार दर्शन वतलाया जिन, खबर इसकी मत भूलो छिन।
समझ मनजो शिवकी इच्छा, नाथूराम यनभर यह शिक्षा।

जिन दर्शन की लावनी ॥ ५८ ॥
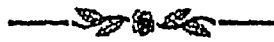
आज प्रभु का दर्शन पायाजी। आनन्द उरमें छाया ॥ टेक ॥ मिटा मिथ्यामय अँधियारा, भ्रम नाश भया सारा, हुआ उर सम्यक उजियारा, शिव मार्ग पद धारा, कार्य सीझेगा मन भाया जी। आनन्द उरमें छाया ॥ १ ॥ कल्पतरु मेरे गृह फूला, देखत सब दुःख भूला, भया चिंतामणि अनुकूला, शोको सब सुख मूला, हर्ष कुछ जाय नहीं गायाजी। आनंद उरमें छाया १॥ स्वपर पहिचान भई सारी, पर परणति वमि डारी, सुगुरुवच श्रद्धा उर धारी। दुःख नाशक हितकारी; लखत मुख मस्तक पद नायाजी. आनंद उर में छाया दया अब दया नाथ कीजे, निज चरण शरण दीजे। नाथूराम निश्चय उर लायाजी, आनंद उरमें छाया ४॥

जिन भजन का उपदेश ५९।

भजन जिनवर का कर विविधि प्रकार. करें भवोदधि पार ॥ टेक ॥ अन्य

देवसब रागी द्वेषी काम क्रोध की खान, वीतराग सर्वोत्कृष्ट एक दाता पद निर्वाण। धर्म नौका में भविजन को धार, करैं भवोदधि पार ॥ १ ॥ जिन सम देव अन्य को जगमें करे कर्म रिपुनाश, भ्रमतम हरण भानु जिनवाणी तासम वचन प्रकाश। ऐसे तो केवल जिनवरही सार, करैं भवोदधिपार २॥ संवतशत सुरराय हर्षधर चरण कमल जिनराय, पूजत भविजन आय जिना लय वसुविधि द्रव्यचढाय। पूर्व पापों का करते संहार, करैं भवोदधिपार ३॥ नाथूराम जिन भक्त ऐसे जिनवर को वारम्वार, मस्तक नाय प्रणाम करैं करने को कर्म अवक्षार। भक्ति जिनवर की सुर शिव दातार, करैं भवो दधि पार ॥ ४ ॥

रावण को उपदेश ६०।
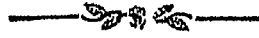
युगल कर जोड़े मंदोदर नार, विनवे वारम्वार ॥ टेक ॥ सुनो यह विनती अवला की नाथ, साधर्मी रघुनाथ। मिलो तुम उनसे सीताले साथ, अतिशय आवे हाथ ॥

दोहा।

इन्द्रजीति अरु मेघनाथ सुत कुंभकरण तुमभ्रात।
बन्दि किये रामने छुड़ावो तिनको जाय प्रभात॥
वचन दासी के चित्त लीजेधार, विनवे वारम्वार ॥ १ ॥

गर्वयुत बोले लंकेश्वर बैन, वीत जान दे रैन। प्रात हनि अरि को सब मारों सैन, तबही मोचित चैन ॥

दोहा।

प्रबल शत्रु लक्ष्मण में मारा रहा तुच्छ अब राम।
ताकोहनि सुत बन्धु छुटाऊं तो दशमुख मुभनाम॥
झूठ मत जाने मोवचन लगार, विनवे वारम्वार २॥

कहै त्रिय तुमको प्रियनाहिं खबर, पद्मराम की जबर। शक्ति लक्ष्मण की प्रियगई निकर, सुनी न तुमने जिकर ॥

दोहा।

तुम प्रति हरि वे हरिबल उपजे ना इसमें संदेह।
यासे वैरकरो मत उनसे विनती मानो एह॥
धरोमत शिरपर अपयश का भार, विनवे वारम्वार॥ ३॥
भ्रातसुत बांधे अरु शक्ति कढ़ी, क्या विभूति उन बढ़ी। सुस्त्र मेरोंपर क्या जंग चढ़ी, जो इतनी त्रियरढ़ी॥

दोहा।

नाथूराम जिन भक्त मानगज पर रावण आरूढ़।
हितकी बात सुने ना कानों किया मृत्यु ने मूढ़॥
जहर से लागे अमृत वचसार, विनवे वारम्वार॥ ४॥

तोते की लावनी सोरठ में ६१।

करप्रभु का भजनतू तोता, क्यों जन्म अकारथ खोता॥ टेक॥ यह क्षण भंगुर है काया, यासे तूने नेह लगाया। तनुक्षण में होगा पराया, जिस वक्त अबाधा आया॥

छंद।

ये प्राण जात ना लगे वारकढ़ जावें एकपलमें।
हवा लगे ढलजाय बुलबुला जैसेरे जलमें॥
क्योंजी। काल महाबलवान उसपै ना बचे कोई कल में
तूहो तोते हुशयार नहीं वह मारेगा छलमें जी॥

दोहा।

कौन शरण संसार में जहां बचे तू जाय।
सुर नर पति तीर्थेश से लिये कालने खाय॥
अबभी तू मूर्ख सोता क्यों जन्म अकार्थ खोता॥ १॥

फिर ऐसा समय नापैहै, अवसर चूके पछितैहै। इसवक्त जो गाफिलरैहै वो बहुतेरे दुःख सैहै॥

छड़।

ये सुरनर नर्कतिर्यंच चारगति लखचौरासी योन।
भ्रमा अनन्ते काल रही धरने से वाकी कौन॥
क्योंजी। नाम अनेक धराय मूढ़ बहु वसाकष्टके भौन।
अवभी चेतनहीं तुझको जो धाररहा है मौनजी॥

दोहा।

नर भव उत्तम क्षेत्र अरु मिला उच्च कुल आय।
जो अब कार्य नाकरे तो पाछे पछताय॥
फिर पछताये क्या होता, क्यों जन्म अकार्थ खोता॥ २॥
तू ज्ञानदृष्टि विन अंधे करता अति खोटे धंधे। जिस गुण में जीव जगवंधे सोही डालतू निज कन्धे॥

छड़॥

ये तात मात सुत भ्रात मित्र त्रिय आदि कुटुंबीलोग,
हैं स्वार्थ के सगे सर्व इनका अनिष्ट संयोग॥
क्योंजी। मेरे साथ ना जाय कोई भोगें निज निज सुख भोग,
स्वार्थ के खातिर पछतावें किंचित कर कर सोग जी॥

दोहा।

सहै नर्क दुःख जीव निज कोई न करे सहाय।
यामे अब जिय चेततू कर निज कार्य उपाय॥
स्नेह जगत का थोता, क्यों जन्म अकार्थ खोता॥ ३॥
तूने देव कुदेव न जाना, कुगुरुनही को गुरु माना, तिनही के फन्द ठगाना शिवपुर मार्ग विसराना॥

छड़।

ये बहु विकथा वकवाद सुनी नित काम क्रोध की खान,

वीतराग मार्ग सुदया मय धर्म सुना नहीं कान ॥
क्योंजी । जप तप संयम शील न धारा दाता पद निर्वाण,
कुविसन निशिदिन सेय निरन्तर रहाहृदय सुखमानजी ॥

दोहा ।

नाथूराम उचित यही अब विचार दृग खोल ।
हितकारी अनुपम समय कढा जात अनमोल ॥
देखो जग सारा रोता । क्यों जन्म अकार्थ खोता ॥

भरत की लावनी ६२ ।

दशरथ नदन सदन तजकर । अस्त्र कर लसत चलत सजकर ॥ टेक ॥ नगर जन तडपत भरत लखत, कहत वच कह कर मलत शखत, कहत जन हलधर चरण भगत, कढत हलधर यह दरद फकत, कहत वच भरत चलत भजकर । अस्त्र कर लसत चलत सजकर ॥ १ ॥ भरत जब कसत कमर हन हन, नगर तज धरत चरण वन बन, कहत सब जन हलधर धन धन, बसत हम घट घट बर मन मन, सफल हम तन वल पद रजकर । अस्त्र कर लसत चलत सजकर ॥ २ ॥ भरत जब नवत चरण हलधर, कहत वर वचन धरन पद धर, कहत वच हलधर तब हसकर, बरस छह छह गत घर पदधर, भरत तब चलत अवध लजकर । अस्त्र कर लसत चलत सजकर ॥ ३ ॥ भरत नव अग्रज चरण कमल, चलत घर नयनन बरसत जल, भरत अरजन पर करत अमल, कहत यह परम कथन नथमल, रटत हलधर यशवर भजकर । अस्त्र कर लसत चलत सजकर ॥ ४ ॥

हर्दा के मंदिर की अतिशय ६३ ।

श्री श्यामवरण महराज गरीब निवाज रखो मम लाज मैं आया शरण ।

तुमहो त्रिभुवन के नाथ जोड़ मैं हाथ नवाऊं माथ तुम्हारे चरण ॥ टेक ॥
तुम हो देवन के देव देव करें सेव सदा स्वयमेव तुम्हारी नाथ, सौ इन्द्र नवमें
भाल दीन दायाल तुमको त्रैकाल मैं नाऊं माथ, छवि तुम्हरी दर्शन योग्य
बहुत मनोग्य तजे भव भोग तुमने इकसाथ, श्री वतिराग निर्दोष गुणों के कोष
मैं जोडों हाथ ॥

छड ।

सुन भाई श्री वीतरात की मूर्ति पूजो सदा ।
सुन भाई ईति भीति भय विघ्न होंय ना कदा ॥

सपट ।

करें देव अतिशय नाना विधि हर्षधार तन में ।
तिन्हें देख आश्चर्य वान होते प्राणी मन में ॥

झेला ।

ऐसी अतिशय अधिकारी, होवें जिन गेह मझारी, तिनको देखें नरनारी
उर हर्ष होय अति भारी, अब तिनका कुछ विस्तार सुनो नरनार, हर्ष उरधार
जो चाहो तरण । तुमहो त्रिभुवन के नाथ जोड़ मैं हाथ नवाऊं माथ तुम्हारे
चरण ॥ १ ॥ श्री हर्दा का जिनधाम पवित्र सु ठाम तहां किसी भाम ने अ
विनय करी, दर्शन को आई अपवित्र देख चारित्र सुरों विचित्र विक्रिया धरी,
श्री शान्ति मूर्ति जिनदेव तिससे पसेव कढा स्वयमेव उसीही घरी, श्री जिन प्र
तिमा से महा भूमि जल वहा जाय ना कहा लगी ज्यों झरी ॥

छड़ ।

सुन भाई यह देख असम्भव अतिशय सब थरहरे,
सुन भाई नरनारी सब आश्चर्यवान हुए खरे,

सर्पट ।

अन्यमती भी यह चरित्र सुन दर्शन को आये,
धन्य २ मुख से कह नर त्रिय जिनवर गुणगाये ।

झेला ।

बहु विधि स्तुति नरनारी, कीनी जिन गृह मझारी, तब देव विक्रिया सारी, होगई क्षमा तिसवारी, यह देख अशुभ विक्रिया सर्व नर त्रिया त्याग प्रदक्षिया लगे अघ हरण, तुमहो त्रिभुवनके नाथ जोड़में हाथ नवाऊं माथ तुम्हारे चरण २ अब कहूं दूसरी बार की अतिशय सार सुनो नर नार धार त्रय योग, बनता था श्री जिनधाम लगा था काम तहां तमाम जुड़े थे लोग, तिन यह मन्सूबा ठान कि श्री भगवान को छतपर आन करो उद्योग, यहां पूजन की विधि नहीं, बनेगी सही सवन यह कही समझ मनोग

छड़ ।

सुन भाई जिन प्रतिमा को दो जने उठाने गये,
सुन भाई तिन से जिनवर किंचित ना चिगतेभए

सर्पट ।

लगे उठाने लोग बहुत तब कर कर के अति शोर
हुआ प्रभू का आसन निश्चल चला न किंचित जोर

झेला ।

निशि स्वप्न सुरों ने दीना, तुम हुए सकल मति हीना, यह कम चौड़ाई जीना, कैसे ले चढहो दीना, इससे यहीं पूजन सार करो नरनार हर्ष उरधार जो चाहो तरण, तुम हो त्रिभुवन के नाथ जोड़ मैं हाथ नवाऊं माथ तुम्हारे चरण ३ ऐसी अतिशय बहु भांति जहां गुणपांति करें सुर शान्ति चित्त नित धरें, तहां श्रावक नर त्रिय आय द्रव्य वसु ल्याय वचन मनकाय से पूजें खरें जब आवें भादों मास होय अघ नाश सर्व उपवाश पुरुष त्रियकरें, नाना विधि मंगल गाय तूर बजाय वचन मनकाय भक्ति विस्तरें

छड़ ।

सुन भाई कार्तिक फाल्गुण आषाढ़ अन्त दिन आठ,
सुन भाई व्रत नंदीश्वर का रहै जहां शुभ ठाठ,

सर्पट।

दिन प्रति पूजा शास्त्र कथादिक होवें अधिकाई
कटें पूर्व कृत पाप वृद्धि जब याते जिनराई

झेला।

धन्य जन्म उन्हीं का सारा, देखें दर्शन प्रभु थारा, है यही मनोर्थ म्हारा नित दर्शन दो जयवारा, यों विनती नाथूराम करें प्रभु पास रखो निजधाम. मिटे भय मरण। तुमहो त्रिभुवन के नाथ जोड़ मैं हाथ नवाऊं माथ तुम्हारे चरण ४

जिनदर्शन की लावनी ६४।

महाराज लाज रखो जनकी, जन चरण शरण आया. धन्य दिन तुम दर्शन पाया॥ टेक॥ जिनराज नाथ त्रिभुवन के त्रिभुवन के दुःख हर्ता, मुक्ति मगके प्रकाश कर्ता, चरण युग धारे जो निज हिरदे धर्ता। कर्म हनि मुक्ति वधूवर्ता, जैनग्रन्थों मे ऐसा वर्णन गाया, धन्य दिन तुम दर्शन पाया. लाज रखो जनकी॥ १॥ भये आज सुफल पदमेरे,जो तुमतक चलआये, धन्यदृग तुम दर्शन पाये, सुफल कर मेरेजो पूजन फल ल्याये। धन्य रसना जिनगुण गाये, सुफल मम मस्तक तुम चरणन तलनाया, धन्य दिन तुम दर्शन पाया लाज रखो जनकी॥ २॥ महराज इंद्रशत धारी,करते वसुविधि पूजा, अन्य. तुम सम न देव दूजा, वचन मृदुथारे शशि मिश्री के खूजा। धरत हिरदे शिव मग सूजा. विरद यह थारा प्रभु त्रिभुवन में छाया, धन्य दिन तुम दर्शनपाया लाज रखो जनकी॥ ३॥ जिनराज दास की विनती, यह विनती सुनलीजे, नाश वसुविधि अरिका कीजे, वास शिवथल का निज सेवक को दीजे। कार्य. तुम से मेरा सीजे, नाथूरामथोर दर्शनको ललचाया, धन्य दिनतुमदर्शनपाया४

जिनभजन का उपदेश ६५।

जपो जिनराज नाम सच्चा, अन्य देव सब रागी द्वेषी मिथ्यामत कच्चा.

टेक ॥ कहत सब दया धर्म की मूल, फिर हिंसा यज्ञादि में करते यह मूर्खों की चूक, पड़ो उन वेद शास्त्रपर धूल, जिनमें हिंसाधर्म प्ररूपा शास्त्र नहीं वे शूल

दोहा।

जो दुष्टों करके रचे काम क्रोध की खान।
शास्त्र नहीं वे शस्त्र हैं घातक निज गुण ज्ञान॥

जैन बिन अन्य वचन कच्चा, अन्य देव सब रागी द्वेषी मिथ्यामत रच्चा १॥
शस्त्र धरें क्रोधी कामी, या सेवक निर्बल शंकायुत सो अपूज्य नामी।
दयायुत जो अन्तर्यामी, सो क्यों हतें शास्त्र गहि पर जियहो त्रिभुवन स्वामी॥

दोहा।

माणकरे पर प्राण का सो क्यों रहा दयाल।
जैसे मेरी मात अरु बांझ कहै ज्यों बाल॥

बांझ क्यों रही जना बच्चा, अन्य देव सब रागी द्वेषीमिथ्यामत रच्चा२॥
रमे ईश्वर निजपर नारी, तो कुशील को त्याज्य कहा क्यों यह अचरज भारी, मची भवि मूर्खों की मारी, राग द्वेषकी खान तिन्हें कहैं ईश्वर अवतारी॥

दोहा।

काम क्रोधवश जो मरे सहैं नर्क दुःख आप।
तिनको शठ ईश्वर कहैं सो कैसे हरें पाप॥

पड़े जो आप नर्क खच्चा, अन्य देव सब रागी द्वेषी मिथ्या मत रच्चा॥३॥
सारएक वीतराग वाणी, जो सर्वज्ञ देव निज भाषी त्रिभुवन पतिज्ञानी।
जिसे हरि हल चक्रीमानी, सेवतशत सुरराय हर्षधर सतगुरु बक्खानी॥

दोहा।

जावाणी के सुनतही होय जीव सुज्ञान।
नाथूराम भवतज लहैं निश्चय पद निर्बाण॥

फेरना जन्म ताहि अच्चा, अन्य देव सब रागी द्वेषी मिथ्यामत रच्चा॥४॥

देव धर्म गुरुपरीक्षा ६६।

करो देव गुरुधर्म परीक्षा शिक्षा हितकारी गुरुबार बार समझावें सब चेतो

नरनारी ॥ टेक ॥ रागद्वेष मद मोह आदि जिनके वर्ते स्वयमेव, कामी क्रोधी छत्रधारी सो जानों सर्व कुदेव, वीतराग सर्वज्ञ हितैच्छकदें शिक्षा बहुमेव, संसार भ्रमण ना जाके सो जानों सर्व सुदेव। ऐसे लक्षण शुभ अशुभ देख पहिचान करो सारी, गुरुवार वार समझावें सब चेतो नरनारी १ ॥ ग्रह सग्रंथ जो तपकरें धरें बहु आडम्बर मानी, अपि घरी बनें वैरागी निजसुख से अज्ञानी। धनलें वीर्य के नाम बने या परधन ले दानी, ये थिग्-ह कुगुरु के जानो जो भाषे जिनवाणी, नितपोषें शिथिलाचार रहैं रत काया से भारी गुरु बार बार समझायें सब चेतो नरनारी ॥ २ ॥ निल पोषें विषय कषाय और आहार सदोष करें, हिंसामय धर्म बतावें सो जानो कुगुरु खरें। जो नि॰ र्वाछक तप तपें दिगम्बर शांति स्वरूप धरें, सो सुगुरु तिन्हें नित सेवो परतारें आप तरें, अब सुनों कुधर्म सुधर्म रूप लख पूजोधी धारी, गुरु बार बार समझावे सब चेतो नर नारी ॥ ३ ॥ पक्षपात युत रागद्वेष पोषक जामें उप देश, श्रृंगार युद्ध क्रीडादि इनका स्वतंत्र आदेश ॥ ऐसा कुधर्म पहिंचानतजो अघखान सजो मत लेश। शुभधर्म दया युत पालो जो भाषा आप्त जिनेश॥ सम्यक रत्नत्रय रूप भूप त्रिभुवन पति हितकारी ॥ गुरु बारबार समझावें सब चेतो नर नारी ॥ ४ ॥ यों परख सुदेव सुगुरु सुधर्म पीछे कीजे श्रद्धाण। बिन किये परीक्षा पूजें सो पीटें लीक अज्ञान ॥ दमड़ी का बर्तन लेय उसे ठोकें फिर फिर देकान। देवादि परख ना पूजें सो जगमें रत्न महान ॥ कहें नाथूराम जिन भक्त समझ क्यों बनते अविचारी, गुरु बार २ समझावें सब चेतो नरनारी५.

श्रीजिनेंद्र स्तुति ६७।

शरण सुख दाईजी महराज धन्य प्रभुताई तुम्हारी जिन देव, तुम्हारी जिन देवहो तुम्हारी जिनदेव, करें सुरनर सेव ॥ टेक ॥ अधम उद्धारक जी मह॰ राज भवोदधि तारक प्रभु त्रिभुवन त्राता, प्रभू त्रिभुवन त्राताहो प्रभू त्रिभुवन त्राता। नमों शिव सुखदाता। बहुत भव भटकाजी महराज अधोमुख लटका कर्मवश उरमाता, कर्म वश उरमाताहो कर्मवश उरमाता, नहीं पाई साता ॥

दोहा।

तीनोंपन दुःख में गये सुख ना लयो लगार।
अब कुछ पुण्य उदय भयो पाये त्रिभुवनतार॥

गया दुःख साराजी महराज लया सुख भारा लखे भवोदधि खेवा लखे भवोदधि खेवाहो लखे भवोदधि खेवा, करें सुरनर सेवा॥१॥ नर्क दुःख पाया जी महराज जाय नहिं गाया तुम्ही जानत ज्ञानी, तुम्हीं जानत ज्ञानीहो तुम्ही जानत ज्ञानी, नहीं तुमसेछानी। नारकी मारेंजी महराज क्रोध अति धारेंडाल पेलें घानी, डाल पेले घानीहो डाल पेलें धानी, सहैं अति दुःख प्राणी॥

दोहा।

रहे सागरों दुःख घने धरधर जन्म अनेक।
तहां कोई रक्षक नहीं भुगते आतम एक॥

शरण अब आयाजी महराज चरण शिरनाया तुम्हींहो सुधिलेवा तुम्ही हो सुधिलेवाहो तुम्हहीहो सुधि लेवा, करेंसुरनर सेवा॥२॥ पशुदुःख सारा जी महराज रुद्दा अति भारा कौन मुख से गावे, कौन मुखसे गावेहो कौन मुखसे गावे, पराश्रय जो पावे। जोतें अरु लादें जी महराज मारें अरु बांधे मांस तक कट जावे, मासतक कटजावेहो मांसतक कटजावे, तहां को बचावे

दोहा।

तृणपानी भी पेटभर मिलत समय पर नाहिं।
वहत भार हिम धूपमें मिलत न पलभर छांहि॥

सुना यश भारी जी महराज जगत हितकारी दीजे शिव सुख मेवा। दीजे शिव सुख मेवाहो दीजे शिव सुख मेवा, करें सुरनर सेवा॥३॥ देवपद थाने जी महराज बृथा सुखमाने नहीं तहां सुख होता, नहीं तहां सुख होता हो नहीं तहां सुख होता, विषयवश दिन खोता। मरण थिति आवेजी महराज महा बिललावे अधिक दुःखकर रोता, अधिक दुःख कर रोताहो अधिक दुःख कररोता, खाय विधिवश गोता।

दोहा।

रंच न सुख संसार मे देखा चहुं गति टोहि।

यासे भव दुःख हरण को भक्ति देहु निजमोहि ॥
नाथूराम यांचा जी महराज देहु सुख सांचा भक्त लख स्वय मेव, भक्त लख स्वद मेवहो भक्त लख स्वय मेव, करें सुरनर सेव ४ ॥

ऋषभदेव स्तुति लुप्त बर्णमालामें ६८ ।

अजर अमर अव्यय पद दाता; आदीश्वर प्रभु जगत विख्याता । इसपर भव सुखदाई, ईश्वर त्रिजगत के पारकरो जिनराई ॥ टेक ॥ उत्पति मरण जरागद नाशो ऊर्ध्वलोक शिखरहो वासो, ऋषभ ऋषीपद दाता ऋआदिक देवी सेवकरें तुम माता, एक चित्त जो तुमको ध्यावे. ऐश्वर्यितहो शिवपदपावे और न जगके आता, औरों को जगसे तारें अहो जगत्राता । अंग अंगमेरे हर्षाये, अःहनाथ तुम दर्शन पाये, कर्म झठे अधिकाई, ईश्वर त्रिजगत के पार करो जिनराई ॥ १ ॥ खल कर्मों मोहि बहुत भ्रमाया गमन करत भव अन्त न आया, घटी न भवथिति स्वामी, चरणाम्बुज थारे यासे गहे युगनामी । छत्रतीन धारे शिरसोहैं जगत जीव देखत मन मोहैं, झल झलाट द्युतिचामिर ढूंढे भववेड़ी होवे मुकति आगामी, ठहरे काल अनन्त तहांही, डोले ना इस जगके मांही । ढांढस युत हर्षाई ईश्वर त्रिजगत के पारकरो जिनराई ॥ २ ॥ णमो युग्मपद पद्म तुम्हारे, तीन भवन भवि तारण हारे, थकित अमर नर नारी दर्शन दृग देखें नाशति विपदा सारी । धन्य धन्य सुरनर उच्चारें नवत चरण सब पाप निवारें. पावें परम सुख भारी, फल दायक जग में तुम दर्शन हितकारी । वासव गणधरादि गुण गावें भली भांति गुणपार न पावें, महिमा तिहूं जग छाई ईश्वर त्रिजगत के पार करो जिनराई ॥ ३ ॥ युगचरणाम्बुज भृंग करीजे, रत्नाकर निज सेवा दीजे लीजे खबर जनकेरी, वरभक्ति तुम्हारी नाशक है भवफेरी । शोभित तीन जगत के नायक, षट कायक जीवन सुख दायक, सुधि लीजे प्रभु मेरी, हनिये विधि आठो कीजे नहीं अब देरी, नण नाथूराम शिर नावें त्रिभुवन पति थारे गुण गावें । ज्ञानकला शुभपाई ईश्वर त्रिजगत के पारकरो जिनराई ॥ ४ ॥

नेम विवाह ६९ ॥

यदुपती सती शुभ राजमती त्रिन त्यागी। महराज जाय तप गिरि पर धाराजी। गहि ज्ञानचक्र कर वक्र मोह भट क्षण में माराजी॥ टेक॥ पक्ष अतुल देख जिनवर का कृष्ण शकाने, महराज राज का लालच भारीजी, ताके वश होके कृष्ण कुटिलता मन में धारा जी, करो नेमीश्वर का ब्याह कही हरि स्याने, महराज उग्रसेन की दुलारी जी, यांची नेमीश्वर काज सु-शीला रजमति प्यारी जी, सजके बरात जूनागढ को हरि आये, मार्ग में हरि ने वनपशु बहुत घिराये, महराज लखे दृग नेम कुमाराजी। गहि ज्ञान चक्रकर वक्र मोह भट क्षण में माराजी॥ १॥ घेरा में पशु अति आरति युत विल-लावें, महराज अधिक दीनता दिखावें जी, लख के दयालु नेमीश्वर को दृग नीर बहावें जी, प्रभु कही रक्षकों से क्यों पशु घिरवाये, महराज कही उन य दुपति आवेंजी, ब्याहन को तिन संग नीच नृपति सो इनको खावेंजी, सुन श्रवण नेम प्रभु धिक् २ वचन उचारे, सब विषय भोग विष मिश्रत असन विचारे, महराज मुकुट अचला पर डाराजी। गहि ज्ञान चक्र कर वक्र मोह भट क्षण में माराजी॥ २॥ क्रम से बारह भावना प्रभू ने भाई, महराज तुरत लौकांतक आये जी, नति कर नियोग निज साधि फेर निज पुरको धायेजी, तब सुरपति सुरयुत आय महोत्सव कीना, महराज प्रभू शिबका बैठाये जी, फिर सहस्राम्र वन मांहि प्रभू को सुरपति ल्याये जी, तहां भूपण बशन उतार लुंच कच कीने, सिद्धन को नमि प्रभु पंच महाव्रत लीने, महराज किया दुद्धर तप भाराजी। गहि ज्ञान चक्र कर वक्र मोह भट क्षण में माराजी॥ ३॥ जब राजमती ने सुनी लई प्रभु दिक्षा, महराज उदासी मनपर छायीजी। धिक् ज्ञान त्रिया पर्य्याय लेन व्रत गिरि को धाईजी, जबमात पिताने सुनी अधिक दुःख पाया, महराज बहुत राजुल समझाईजी॥ जबदेखी परमउदास उदासी सबको छाईजी, राजुल ने दिक्षालई जाय जिनवर पर मृदुकेश उपाड़े नारि आप कोमल कर, महराज किया दुद्धर तपभाराजी। गहि ज्ञान चक्रकर वक्र मोहभट क्षण में माराजी॥ ४॥ कृशकर के काय कपाय अमर पद पाया,

महराज वैरागी अब शिवरानी जी। श्री नेम घातिया घाति भये प्रभु केवल ज्ञानीजी, बहु भव्यन को सम्बोधि अघातिय घाते, महराज सर्व भवकी थिति हानीजी॥ वर अविनाशी पदपाय दियाजगको कर पानी जी, कहैं नाथूराम जिनभक्त सुनो जगत्राता, निजभक्ति देहु अरु मैटो सर्व असाता। महराज लियापद पद्मसहारा जी, गहि ज्ञानचक्र करवक्र मोहभट क्षण में माराजी५॥

गणेश की व्याख्या ७०।
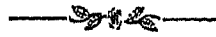
गणधर गणेश गणीन्द्र गणपति आदि नाम बहु सुखदाई, तिनका वर्णन जिनागम के अनुसार सुनो भाई॥ टेक॥ महाईश श्रीमहेश जिनवर महादेव देवन के देव, तिनकी वाणी गिरा सो द्वादश अंग खिरै स्वयमेव। तिनअंगों को मथें करें अभ्यास होंय तब गणधर देव, गिराअंगके मथन से यों गणेश भाषे जिन देव॥

शेर।

यती ऋषी मुनि अनागार समूह को गण जानजी, तिस गणके ईशगणेश ऐसी संधि गुण पहिचान जी। सो शारदा वाणी जिनेश्वर कीधरें उरम्यान जी. यों शारदा के पति कहे गणराज बुद्धि निधान जी॥ सो देवोंकर पूज्य गणाधिप विमल कीर्तिजग में छाई, तिनका वर्णन जिनागम के अनुसार सुनो भाई॥ १॥ घटैं प्रतिष्ठा कटे नाक अरु बढ़ैं प्रतिष्ठा बढ़े सही, इस उपमा को दिखाने नाक बड़ा गज सूंड़िकही। सबमुनिगण में बड़ी प्रतिष्ठा गणपति श्री जगवीच लही, बड़ी नाशिका बताई गणेश की सो हेतुयही॥

शेर।

मुख्य वक्ता जो सभामें विपुल विद्या का धनी, झेंपे न वोले गर्जिके नि-श्शंक छवि जिसकी वनी। तिसका बड़ामुख सबकहैं पावे प्रतिष्ठा बहुघनी॥

इसहेतु से गजमुख कहागणराज का यों जिनभनी, चलें मंदगति अर्थादृष्टि: मूसावाहन उपमागाई । तिनका वर्णन जिनागम के अनुसार सुनोभाई ॥ २॥ सम्पूर्णश्रुत सिंधुभरा जिनपेट में उपमा देनवहे, तिसउपमा के हेतुसे लम्बोदर गणराज कहे । सबसे उत्तम पदस्थ जिनका उत्कृष्टों में श्रेष्ठलहे, इसीलिएकृत् अन्त एकदन्त सभामें राजरहे ॥

शेर।

विनय जिनकी सबकरें इससे विनायक्र नामहै, शिवसकल परमात्मा जिनेश्वर शिष्यसुत गुणधाम है । पतिश्रेष्ठ ऋद्धिरुसिद्धि के शिवपद में रत यह काम है, मुनिगणको मोदक बहुतप्यारो लगत आठो यामहै ॥ विजय अन्त की मालाधारें और चाह सबविराई, तिनका वर्णन जिनागमके अनुसारसुनो भाई ॥ ३ ॥ ऐसे श्रीगणराज गजानन गणधर गणपति कहेगणेश, मूसा वाहन विनायक लम्बोदर वा पुत्रमहेश । इत्यादिक बहुनाम गुणाँकरपार न जिनकालहैं सुरेश, अन्य कल्पना करें तिनको निर्विकजानो मूढेश ॥

शेर ।

उमाके तनमैल से रचना कहैं अज्ञानसो. गजशीश आरोपण करें एकदन्त युत नादान सो । माने सवारी ऊंदरा शरुपेट ढोलसमानसो, समझे न आशय गूढको मूढों मे मुखियाजानसो, नाथूराम उपरोक्त कहेगुण भणमों ऐसेगणराई तिनका वर्णन जिनागम के अनुसार सुनोभाई ॥ ४ ॥

इतिश्री ज्ञानानन्द रत्नाकर सम्पूर्णम् सन १९०४ ई०

॥ विज्ञापन ॥

(१) जो भाई ।।⸗) के भीतर जैन पुस्तकें मगावें वे कीमत भर की टिकट भेज देवें महसूल की टिकट हम अपनी ओर से लगा देवेंगे

(२) ।। =) की वा इससे ऊपर की पुस्तकें वेल्यू पेबिल भेजेंगे और २) तककी मगाने वालोंको खर्चा टिकट पाकट और फीस मनीआर्डर माफ रहेगा

(३) इस से अधिक मगाने वालों को खर्चा माफ के उपरान्त कुछ कमीशन भी मिलेगा अर्थात जो जैसी अधिक मगावेंगे वे वैसाही अधिक कमीशन पावेंगे ॥

(४) अपना स्थान डाक खाना जिला साफ अक्षरों में लिखना चाहिये यदि शहर हो तो मुहल्ला वा प्रसिद्धि स्थान भी लिखना चाहिये ॥

नाम पुस्तक	दाम	नामपुस्तक	दाम
आत्मानु शासन सटीक गत्ता		हनुमान चरित्र वचनका	⸗)
वैठन सहित	१)	मिथ्या मनार	⸗)
पार्श्वपुराणभाषा छन्द बन्ध कोष		पंचस्तोत्र भाषा जिसमें भक्तामर	
सहित	१।)	कल्याण मंदिर विषापहार एकी	
समयसार नाटक बनारसीदास	।।=)	भाव भूपालचौवीसी	=)
वर्तमान चौवीसी विधान (पाठ)	।।=)	नित्य नेम पूजा सटीक	।।)
द्वादशानु प्रेक्षा बड़ी	।।=)	चारपाठ संग्रह	‑)
* भाषा पूजन संग्रह १२ पूजा		भक्तामर भाषा	–)
३ विधान	।।⸗)	भक्तामर मूल	)।।
* जैन प्रथमपुस्तक	।)	एकी भाव भाषा	)।।
* जैन द्वितीय पुस्तक	।।)	विषापहार भाषा	)।।
* जैनसूत्रकथासंग्रह नवरत्नभाषा	।⸗)	जिनगुण मुक्तावली भाषा	)।।
भूधर जैन शतक सटीक	।।)	बारहमासा वज्रदन्तचक्रवर्ति	‑)
सूक्त मुक्तावली भाषा	।)	* बारह मासा मुनिराज	)।।
* स्वानुभव दर्पण योग सार सटीक	।)	* पंचपरमेष्ठी मंगल अर्हंत सिद्ध	
सज्जन चित्त वल्लभ ५ टीका	।।।)	आचार्य उपाध्याय साधु मंगल	⸗)
* सज्जनचित्तवल्लभभाषा टीका	≡)	* पंचकल्याण मंगल	‑)।।
छहढाल सटीक दौलत राम	।–)	* बाईस परीषह योगीरासा	‑)।।
* छहढाला सटीक बुधजन	≡)	* आलोचना पाठ सटीक	‑)।।
* छहढाल सटीक धानत	⸗)।।	* शील कथा बड़ी छन्द बन्ध	।⸗)
* तत्वार्थ सूत्र मूल मोटे	≡)	शील कथा वचनका	।)
द्रव्यसंग्रह सटीक	।)	दर्शन कथा बड़ी छन्द बन्ध	।=)

नामपुस्तक	दाम
समाधि मरण बड़ा	=)
श्रावकाचार दर्पण	≈)
सामायिक भाषा	–)
आरती संग्रह	)|||
जैन धर्म सुधासागर	|)
निर्वाण काण्ड भाषा	)|
जैन बालकों का गुटका	)|
अठाई रासा	)|
त्रेसठ शलाका	)||
उपदेश सिद्धान्त रत्नमाला सटीक	||)
जैन भजन संग्रह छोटा	–)||
परमार्थ जकड़ी इष्टछत्तीसी	)||
पुकार पचीसी	)||
समाधि मरण छोटा	)|
छहढाला मूल	–)||
पंचकल्याण मंगल मूलाचार	-)
ये सब पुस्तकें तैयार हैं	
बारह मासा राजुल नवीन उत्तम	–)
बारह मासा सीता नवीन उत्तम	)|||
बारहमासा प्रश्नोत्तर नेमराजुल	)|||
निर्वाण कांड दोनों	)|||
चेतनचरित्र भाषा छंद	|)
बिनती संग्रह	-)
ज्ञानानन्द रत्नाकर दोनों भागों की और नवीन लावनी सर्व का संग्रह	||≈)
तत्त्वार्थसूत्र बचनका टीकाभर	|)
रक्षाबन्धन कथा छन्द बन्ध	≈)||
नेम विवाह दो प्रकार के	–)
शाखोच्चार आदि ब्याह	)||

नामपुस्तक	दाम
समाधि मरण और तीर्थ वन्दना	)|||
बारह भावना दो प्रकार की	)||
धारें जयमाल सहित	)|||
उपदेश पचीसी पुकार पचीसी	)|||
स्तोत्र संग्रह जिस में पार्श्वनाथ स्तुति भूधरदास १ द्यानत दास १ जिनेंद्र स्तुति दौलतराम १ उदयराज १	-)
परमार्थ जकड़ी दौलत राम	)||
जकड़ी रामकृष्ण और बारहमासा राजुल का सोरठ में	)|||
साधु वन्दना स्तोत्र	)||
भजन संग्रह ५ भाग एकत्र	||)
प्रत्येक भाग ५० भजन	=)
इनमें दौलतराम भागचन्द लालचन्द्र माणिकचन्द्र बिहारीलाल द्यानत दास भूधर दास बुधजन और मुन्शीनाथूराम के भजन संग्रह हैं अत्योत्तम संग्रह है	
होली और प्रभाती संग्रह	-)||
गौरसंग्रह चौबीस तीर्थंकर की २४ स्तुति राग गौरी में	-)|
जिनं सहस्र नाम सटीक	≡)
जम्बू स्वामीचरित्र भाषा छंद	|≈)
दान कथा भाषा छन्द	|-)
समाधि शतक कविचादि में	≈)
राजुल पचीसी	-)
आदित्य वार कथा बड़ी	=)
भक्तामर सटीक	=)
द्रव्यसंग्रह अन्वायार्थ भाषा टीका सहित	|=)

जिन पुस्तकों के पास ऐसा * चिन्ह है वे हमारी घरू छपाई है शेष बाहरकी है

भजन संग्रह दो भाग शिलायंत्र में छप गये शेष टैप में छप रहे है

द० मुन्शी नाथूराम बुकसेलर

कटनी मुड़वारा जिला जबलपुर सी. पी.